विश्व के अमर साहित्यकार

शेक्सपियर की कहानियां

शेक्सपियर की कहानियां

विश्व के महान नाटककार शेक्सपियर के नाटकों
का कहानियों में सरल और रोचक रूपान्तर

रूपान्तरकार
धर्मपाल शास्त्री

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली

मूल्य : बारह रुपये (12.00)

सातवां संस्करण 1981
SHAKESPEARE KI KAHANIYAN by Dharmapal Shastri

क्रम

परिचय

विलियम शेक्सपियर विश्व के महानतम कवि-नाटककार हैं।

शेक्सपियर इंग्लैण्ड में स्ट्रेटफोर्ड-ग्रॉन इवान नामक स्थान पर सन् 1564 में उत्पन्न हुए और सन् 1616 में (अर्थात् कुल 52 वर्ष की आयु में) उनका स्वर्गवास हो गया। इस आयु में से भी साहित्य-रचना पर उन्होंने लगभग केवल 20 वर्ष लगाए। किन्तु इस अल्प रचना-काल में उन्होंने 37 नाटक और कविता की कई पुस्तकें लिखीं। पिछले 350 वर्षों में उनकी कीर्ति उत्तरोत्तर बढ़ती ही गई है। उनके 'साहित्य-सम्राट्' के पद को अब तक विश्व का कोई भी अन्य साहित्यकार चुनौती नहीं दे सका है। शेक्सपियर के नाटकों का संसार की सभी सभ्य भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। इन सभी भाषाओं में शेक्सपियर उतने ही लोकप्रिय और समादृत हैं जितने अंग्रेज़ी में।

शेक्सपियर के 37 नाटकों में से 11 नाटक चुनकर उनका कथासार प्रस्तुत पुस्तक में दिया जा रहा है। इनमें उनके अतिविख्यात दुःखान्त नाटकों की कथाएं भी सम्मिलित हैं और सुखान्त नाटकों की कथाएं भी। इन कथाओं के प्रकाशन का उद्देश्य केवल यह है कि इनके पाठकों के मन शेक्सपियर के मूल नाटकों को पढ़ने के लिए प्रेरित हों। प्रस्तुत पुस्तक शेक्सपियर के भव्य साहित्य-भवन के लिए केवल प्रवेशद्वार है। वैसे हम आशा करते हैं कि ये कथाएं अपने-आप में भी रोचक एवं हृदयग्राही सिद्ध होंगी।

1. राजा लियर

(King Lear)

बहुत दिनों की बात है कि इंग्लैण्ड में लियर नाम का एक राजा राज्य करता था। राजा के महल थे, रानियां थीं, नौकर थे, नौकरानियां थीं, सब कुछ था, किन्तु उसके कोई सन्तान न थी। इसी चिन्ता में वह सदा डूबा रहता था। ईश्वर की कृपा से ढलती आयु में उसके घर तीन लड़कियां हुईं। तीनों एक से एक बढ़कर रूपवती थीं। सबसे बड़ी का नाम 'गोनरिल', मंझली का नाम 'रीगन' और सबसे छोटी का नाम 'कोर्डीलिया' था। राजा सबको अपने पुत्रों के समान समझता और लाड़-प्यार से पालता था, किन्तु कोर्डीलिया को सबसे अधिक प्यार करता था। ज्यों-ज्यों वे सयानी होती गईं, राजा उनके लिए अच्छे से अच्छा वर ढूंढ़कर उनका विवाह करता गया। इस प्रकार गोनरिल का विवाह अलबनी के राजकुमार के साथ और रीगन का विवाह कार्नवाल के सुन्दर राजकुमार के साथ हो गया। अब केवल सबसे छोटी राजकुमारी कोर्डीलिया कुंवारी रह गई। उसके विवाह के लिए भी दूर-दूर से सन्देश आते थे, किन्तु फ्रांस के राजा और बरगंडी का राजकुमार, ये दोनों तो उसे बहुत ही चाहते थे। ये दोनों ही अपनी-अपनी आशाएं भर आने तक राजा लियर के दरबार में ही रहने लगे थे।

उधर राजा लियर बूढ़ा हो चला था, उसके नैन-प्राण शिथिल हो चुके थे और राज-काज के कामों से उसका जी भर गया था। उसने सोचा, क्यों न मैं राजपाट अपनी लड़कियों को सौंपकर जीवन की अन्तिम घड़ियां शांति से बिताऊं। यह सोचकर उसने तीनों राजकुमारियों को अपने पास बुलाया और कहा—'प्यारी बेटियो ! तुम देख रही हो कि मैं अब बूढ़ा हो चुका हूं। इन पसलियों में अब इतनी सामर्थ्य नहीं कि

राज-काज का भार उठा सकें। इसलिए मैं चाहता हूं कि यह भार तुम्हें सौंपकर मैं अपने परलोक की भी कुछ चिन्ता करूं। किन्तु राज्य का बंटवारा करने से पहले मैं तुम तीनों की ज़ुबानी सुनना चाहता हूं कि कौन मुझे कितना प्यार करती है। उसीके अनुसार मैं राज्य के तीन हिस्से करके तुममें बांट देना चाहता हूं।'

यह सुनकर सबसे पहले गोनरिल बोली—'पिताजी ! आप मुझे इतने प्यारे लगते हैं जितनी कि दुनिया की कोई भी वस्तु नहीं।' राजकुमारी की यह बात सुनकर राजा बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने उसी समय गोनरिल को राज्य का एक हिस्सा देकर रानी बना दिया।

बात बनाने में मंझली राजकुमारी अपनी बड़ी बहिन से भी कहीं बढ़कर थी। उसने कहा—'पिताजी ! गोनरिल ने तो दो अक्षरों में कहकर आपके प्रति अपना इतना प्यार प्रकट कर दिया है, किन्तु मेरे हृदय में आपके प्रति इतना अधिक प्यार है कि यदि मैं जीवन-भर भी बोलती रहूं तो उसे प्रकट न कर सकूं। आपके प्यार के अतिरिक्त मुझे संसार में कुछ सूझता ही नहीं। मैं आपका प्यार पाने के लिए अपना धन, मन और प्राण तक न्योछावर कर सकती हूं।'

रीगन की ये बातें सुनकर राजा फूला न समाया और उसने पहले से भी अधिक प्रसन्न होकर राज्य का दूसरा हिस्सा रीगन को दे दिया।

अब कोर्डीलिया की बारी आई। वह राजा की सबसे लाड़ली बेटी थी। इसलिए राजा को विश्वास था कि वह अपनी बड़ी बहिनों से भी बढ़कर प्यारी बातें कहेगी।

कोई और समय होता तो राजा का संकेत पाते ही कोर्डीलिया दौड़कर राजा के गले से लिपट जाती और घंटों मीठी-मीठी बातें करती न थकती। किन्तु अब उसके मुंह से एक शब्द भी कहना भारी हो गया था। क्योंकि जब उसने देखा कि

राज्य पाने के लोभ से गोनरिल और रीगन ने आकाश-पाताल की बातें जोड़ने में कोई कसर नहीं उठा रखी और भोला राजा उनकी बात को भी सच्ची मान बैठा है तो उसके सच्चे प्यार को बड़ी ठेस पहुंची। उसने अपने दिल की बात दिल में ही रखकर सीधे-सादे शब्दों में केवल इतना ही कहा—'पिताजी ! मैं आपके साथ केवल उतना प्यार करती हूं जितना कि एक पुत्री को अपने पिता से करना चाहिए—न इससे अधिक, न कम।'

अपनी सबसे लाड़ली बेटी के मुंह से ऐसी हल्की बात सुनकर पहले तो राजा उसके मुंह की ओर देखता ही रह गया, फिर धीमे स्वर में बोला—'कोर्डीलिया ! कहने से पहले एक बार फिर सोच लो ! मैं तुम्हें अपनी अशुद्धि सुधारने का एक और अवसर देता हूं।'

यह सुनकर कोर्डीलिया ने सिर झुकाकर बड़े मीठे स्वर में कहा—'पिताजी ! मैंने जो कुछ निवेदन किया है वह सोच-समझकर किया है। जैसा मेरे दिल में था मैंने वैसा ही वाणी से कह दिया है। मैं नहीं चाहती कि मैं अपनी बहनों की तरह प्यार की झूठी शपथें उठाऊं और ऐसी बातें कहूं जिन्हें मैं निभा नहीं सकती। आप ही सोचिए कि क्या मेरी बहिनों ने विवाह नहीं किया और क्या वे अपने पति और पुत्रों से भी प्यार नहीं करतीं ? फिर भला किस मुंह से उन्होंने यह कह दिया कि वे आपके अतिरिक्त किसी और से प्यार करतीं ही नहीं। आखिर मेरा भी कभी विवाह होगा और मेरा पति भी मेरे प्यार का हिस्सेदार होगा। इसीलिए मैंने यह कहा कि मैं आप-से उतना ही प्यार करती हूं जितना कि एक पुत्री को अपने पिता से करना चाहिए। वैसे आप मेरे पिता हैं और मेरे जन्म-दाता हैं। जिस लाड़-प्यार से आपने मुझे पाला-पोसा और बड़ा किया उसे मैं जीवन-भर नहीं भुला सकती। मैं अब तक आपकी लाड़ली रही हूं, मैंने आपकी आज्ञा का एक शब्द भी कभी नहीं मोड़ा और सदा सच्चे दिल से आपको प्यार करती

रही हूं और आगे भी अन्तिम क्षण तक करती रहूंगी, किन्तु मुझसे यह न होगा कि मैं अपने ही पिता के सामने प्यार के ढोंग रचकर उसे धोखा दूं।'

कोर्डीलिया की इस सादगी ने जलती आग में घी का काम किया। राजा का क्रोध और भी भड़क उठा और उसने आवेश में आकर उसी समय राज्य का तीसरा हिस्सा भी दोनों बड़ी राजकुमारियों में बांट दिया। बेचारी कोर्डीलिया बेकसूर ही पिस गई। उसे राज्य के हिस्से में से एक तिनका भी न मिला। राजा ने अपने निर्वाह के लिए दोनों राजकुमारियों के सामने यह शर्त रखी कि जब तक मैं जीवित हूं अपने एक सौ अमीरों को साथी के रूप में अपने पास रखूंगा। मेरी और मेरे इन साथियों की सेवा करना तुम दोनों का कर्त्तव्य होगा। मैं एक महीना बड़ी राजकुमारी और एक महीना मंझली राजकुमारी के महल में रहा करूंगा। दोनों राजकुमारियों ने सिर झुकाकर राजा की इस आज्ञा को शिरोधार्य किया।

राजा के दरबारी मन ही मन बुड़बुड़ाए—राजा की अक्ल भी सठिया गई है जो एक निरपराध राजकुमारी को इतना कठोर दंड दे रहा है। किन्तु राजा के सामने मुंह खोलने का किसीका साहस न हुआ। सारे दरबार को चुप्पी साधे देखकर कांत से न रहा गया। वह राजा का सबसे बड़ा विश्वासपात्र सामन्त था। उसने राजा को नम्र शब्दों में, किन्तु स्पष्ट कह दिया कि जिन्हें वह प्यार की मूर्तियां समझे बैठा है वे भीतर से खोखली हैं और जिसे वह अपराधिनी कहकर ठुकरा रहा है वही उससे सच्चा प्यार करती है।

कान्त की बात को राजा सदा ब्रह्मवाक्य के समान सत्य समझता था, किन्तु आज वह भी उसे विष की तरह कड़वी लगने लगी। उसने कोर्डीलिया से पहले कान्त को ही देश से बाहर निकल जाने की आज्ञा दे दी। बेचारा कान्त कोर्डीलिया को भगवान के सहारे छोड़कर किसी अनजाने देश की ओर

चल दिया।

अब राजा ने कोर्डीलिया के दोनों प्रेमियों को बुलवाया और पूछा—'राजकुमारो ! क्या अब भी तुम कोर्डीलिया से प्रेम करते हो ? अब वह अपराधिनी है, कंगाल है और दर-दर की भिखारिन है। तुममें से जो अब भी विवाह करना चाहता है, वह आगे आ जाए।'

यह सुनकर बरगंडी के राजकुमार ने स्पष्ट कह दिया—'मैं तो एक राजकुमारी से ब्याह करने के लिए आया था, भिखारिन से नहीं।'

यह सुनकर सबके देखते-देखते ही फ्रांस का राजकुमार आगे बढ़ा। वह कोर्डीलिया के हाथ को हाथ में लेकर बोला—'चलो ! मेरे साथ चलकर फ्रांस के सुन्दर देश की साम्राज्ञी बनो ! यह देश तुम्हारे रहने योग्य नहीं।' कोर्डीलिया ने बरसती आंखों से अपने प्यारे पिता से विदा ली और बहनों की ओर देखकर कहा—'लो बहनो, मैं तो चली, किन्तु ध्यान रखना कि मेरे पीछे पिताजी को तनिक भी कष्ट न होने पाए।'

गोनरिल ने चिढ़ाते हुए कहा—'बस, बस, रहने भी दे ! तू अपने दूल्हे को खुश करने की सोच ! हम स्वयं खूब जानती हैं कि हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं।' कोर्डीलिया से अब और सुनते न बना। वह मन ही मन पिता के कल्याण के लिए भगवान से प्रार्थना करती हुई वहां से विदा हुई।

इधर शर्त के अनुसार राजा लियर अपने अमीरों के साथ बड़ी राजकुमारी गोनरिल के महल में रहने लगा। उसे वहां रहते अभी महीना समाप्त भी न होने पाया था कि गोनरिल के रंग-ढंग बदलते हुए दिखाई दिए। दोनों को मिले हुए कई-कई दिन बीत जाते। राजा मिलना चाहता तो वह सौ-सौ बहाने बनाती। वह स्वयं उससे मिल जाता तो माथे पर त्योरियां डालकर बोलती। मतलब यह कि अब वह उसे 'बुड्ढा' कहकर एक बोझ-सा समझने लगी थी। वह नौकर-

नौकरानियों के सामने भी बड़बड़ाती—'न जाने बुढ़ऊ की अक्ल में क्या समाया है कि इन सौ मुस्टंडों की फौज को मेरे घर में ला बिठाया ! महल न हुआ, कबाड़खाना हुआ। वह अपनी उमर भोग चुका है, अब उसे इन फिज़ूलखर्चों से क्या मतलब ! उसे अपने लिए दो रोटी से मतलब रखना चाहिए और भगवान का नाम लेकर शुक्र करना चाहिए कि बुढ़ापे में हमीं उसका सहारा हैं।' राजकुमारी की देखा-देखी नौकर-चाकर भी राजा की सेवा से जी चुराने लगे। अचरज नहीं कि ऐसा करने के लिए स्वयं गोनरिल भी उनकी पीठ थपथपाया करती थी। बेचारा राजा पंखकटे पक्षी की भांति असहाय होकर दुःख के दिन बिताने लगा।

उधर, कहने को तो सामन्त कान्त राजा की आज्ञा पाकर परदेश चला गया था, परन्तु वह पैनी आंखों से पहले ही देख चुका था कि राजा पर कौन-सी विपत्ति आने वाली है। इस-लिए सच्चा स्वामीभक्त होने के कारण उसने राजा को गोन-रिल और रीगन के रहम पर अकेले छोड़ देना उचित न समझा। एक दिन वह गरीब नौकर का वेश बदलकर राजा के पास आया और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। उसे देखकर राजा को संदेह तक न हुआ कि यह उसका वही पुराना शाही वज़ीर कान्त है। गहरी सांस भरकर उसने पूछा—'बाबा क्या चाहते हो ?'

कान्त ने दीन स्वर में कहा—'श्रीमन्, नौकरी !'

राजा—बाबा, नौकरी चाहता है तो किसी रईस के घर जा। अब लियर तो स्वयं ही दूसरों के टुकड़ों का दास है। वह किसीको नौकर क्या रखेगा ? अब धन-धान्य और राज-पाट की स्वामिनी गोनरिल है।

कान्त—महाराज ! मुझे धन नहीं चाहिए। मैं रूखी-सूखी खाकर धरती पर ही पड़ा रहूंगा। मुझे केवल पेट का सहारा चाहिए।

राजा—क्या काम करना जानते हो ?
कान्त—श्रीमन्, रोटी पकाने, झाड़ू देने, कपड़े धोने से लेकर मेहमानों की खातिरदारी तक सब कुछ करना जानता हूं। श्रीमन्, सुनकर क्या करिएगा, अपनी सेवा में रखकर देख लीजिए।
राजा—दिखाई तो बड़े निपुण देते हो, किन्तु तुम्हारा नाम क्या है ?
कान्त—श्रीमन्, मुझे कायस कहते हैं।

इसके पश्चात् राजा ने सचमुच उसे दीन कायस समझकर अपना निजी नौकर रख लिया।

अपनी स्वामीभक्ति प्रकट करने के लिए कायस को अवसर की अधिक प्रतीक्षा न करनी पड़ी। संयोगवश पहले ही दिन कायस के देखते-देखते एक शाही नौकर ने राजा को उलटे-सीधे उत्तर दिए और उसे घूर-घूरकर देखा। कायस ने आव देखा न ताव और उस नौकर को जूते मार-मारकर एक नाली में पटक दिया। विपत्ति के दिनों में ऐसे स्वामीभक्त नौकर को पाकर राजा का मन दिनोंदिन उसकी ओर खिंचने लगा। कान्त के अतिरिक्त पुराने नौकरों में से एक शेखचिल्ली भी राजा के साथ बच रहा था। जब राजा का जी बहुत उदास होता तो वह अपनी अटपटी तुकबंदियां सुनाकर राजा का जी बहलाया करता था। वह राजकुमारियों पर ताने कसता और राजा के भोलेपन की हंसी उड़ाया करता था। जैसे :

एक आंख से हंसें कुंवरियां, एक आंख से रोएं।
भोले राजा लुट-लुटकर भी, आंखें मूंदे सोएं।
छोड़ो राजा जी ! राजाई, खेलो आंखमिचौनी।
पक्के शेखचिली बन जाओ, जोड़ी सजे सलौनी॥

ये दोनों सेवक राजा को प्रसन्न करने का बहुत यत्न करते, किन्तु अकेली राजकुमारी ही उसका जी जलाने को बहुत थी। एक दिन वह झल्लाई हुई कमरे में आई और बोली :

'पिताजी ! दया करो और अपने वज़ीरों से मेरा पिंड छुड़वाओ। राजदरबार न हुआ चंडूखाना हुआ। यह फिज़ूल-खर्ची और भीड़-भड़क्का अब मुझसे और नहीं सहा जाता। बहुत हो चुका ! अब इतनी बड़ी फौज के साथ अधिक देर तक आपको अपने महल में रखना मेरे बस का नहीं।'

यह सुनकर राजा की नस-नस में आग लग गई और उसने उसी समय सईसों को रथ तैयार करने की आज्ञा दी। पलक झपकाते ही सब तैयारियां हो गईं। राजा दायें-बायें अपने सौ वज़ीरों सहित हृदय में बड़ी आशाएं लेकर मंझली राजकुमारी रीगन के महल की ओर चला। विदा होने से पहले राजा ने भर्राए हुए स्वर में भगवान से दुआ मांगी—'हे भगवान ! यदि तू सच्चा न्यायकारी है तो इस दुष्टा के कभी कोई संतान न हो। यदि कोई हो भी तो ऐसी कि वह इसे जीवन-भर संताप की उसी आग में जलाती रहे जिसमें यह मुझे जला रही है। ताकि इसे भी पता चले कि कृतघ्न संतान का दुःख सौ बिच्छुओं के डंक से भी अधिक दुःखदायी होता है।'

राजा को इस प्रकार जाते देखकर गोनरिल ने संतोष की सांस ली और झटपट एक पत्र लिखने बैठी :

प्रिय बहिन रीगन !

ये पंक्तियां लिखते समय स्वयं मेरा हृदय अपने वश में नहीं। क्योंकि अभी-अभी महाराज मुझसे रूठकर तुम्हारे महल की ओर प्रस्थान कर चुके हैं। शायद तुम सोचती होगी कि एक महीना समाप्त होने से पहले ही मेरे महल से महाराज के चल देने में मैं ही कारण हूं, और मुझसे ही उनकी सेवा में त्रुटि हुई होगी ! तुम्हें या किसी अन्य को भी ऐसा भ्रम होना स्वाभाविक ही है। इसलिए मैं सारी परिस्थिति से तुम्हें परि-चित कराना चाहती हूं।

तुम जानती हो कि शर्त के अनुसार महाराज को एक महीना मेरे महल में रहना चाहिए था। वे एक महीना क्या,

जीवन-भर भी रहते तो मुझे कोई आपत्ति न होती, किन्तु उनके सौ वज़ीरों से मैं कैसे निबाहती ? एक-एक वज़ीर एक-एक महाराज के समान है। उनकी सेवा के लिए हर समय सेवकों की पलटनें तैयार रहें, शराब की बोतलें खुली रहें और कोष का रुपया पानी की तरह बहता रहे ! क्या तुम मेरी जगह होतीं तो यह सब सहन करतीं ? कभी नहीं, और मुझे निश्चय है कि कोई भी इसे सहन नहीं कर सकता। अब महाराज वृद्ध हैं, उन्होंने अपनी सारी आयु मनमानी करने में बिताई है। मनुष्य का एक समय ऐसा भी आता है जब उसे किसी दूसरे की भी माननी पड़ती है, उसे दूसरों के नीचे दबकर भी रहना पड़ता है। अब तुम्हीं सोचो कि यदि मैंने महाराज को इस फिज़ूलखर्ची को रोकने के लिए कहा तो क्या बुरा किया ? महाराज ने इसे अपना अपमान समझा और मुझसे रूठकर चले गए। मुझे अब भी विश्वास है कि महाराज मेरी प्रार्थना को कभी न ठुकराते यदि उन्हें बहकानेवाले खुशामदी उनके चारों ओर न होते ! वे बहकाते भी क्यों न ! उनकी ठकुराई जो छिनी जा रही थी। फिर महाराज को तुमपर बड़ा गुमान था। यदि उन्हें यह विश्वास होता कि एक जगह से ठुकराए जाने पर दूसरी जगह भी शिष्टाचार के बन्धनों में बंधना ही पड़ेगा तो वे मुझे दुनिया की आंखों में कृतघ्न बनाकर इस प्रकार चले न जाते। मैंने सारी परिस्थिति से तुम्हें परिचित करवा दिया। अब मेरी लाज और अपनी लाज तुम्हारे हाथ में है। मेरे अनुभवों से यदि तुम कुछ लाभ उठा सको तो मैं अपनी इस प्रेरणा को सार्थक मानूंगी। आगे तुम्हारी इच्छा ! शेष सब बातें संदेशहर की ज़ुबानी जान लेना।

तुम्हारी हितैषिणी बहिन
गोनरिल

इस पत्र को झटपट एक लिफाफे में बन्द करके गोनरिल ने एक संदेशहर को बुलाकर कहा : 'जाओ, घुड़साल में से तीव्र

से तीव्र चलने वाला घोड़ा चुन लो और अभी जाकर यह पत्र राजकुमारी रीगन के पास पहुंचा आओ ! महाराज के पहुंचने से पहले ही यह पत्र वहां पहुंच जाना चाहिए। जाओ, अब तनिक भी देरी मत करो। काम सिद्ध होने पर तुम्हें बहुत पुरस्कार देकर प्रसन्न करूंगी।'

संयोग की बात कि जिस समय गोनरिल का संदेशहर महल में पहुंचा, ठीक उसी समय महाराज लियर का पत्र लेकर कायस भी रीगन के महल में पहुंचा। इस पत्र में राजा ने रीगन को सूचित किया था कि वह उससे मिलने के लिए आ रहा है और वह स्वागत के लिए तैयार रहे। कायस को यह पहचानते देर न लगी कि वह वही नौकर था जिसे उसने एक बार राजा का अपमान करने के कारण नाली में पटका था। इस अवसर पर उसे वहां देखकर वह यह भी समझ गया कि वह किस विचार से वहां आया है। उसे देखते ही कायस की त्योरियां चढ़ गईं और उसने घूंसों तथा जूतों की मार से उसकी खूब मरम्मत की। जब यह समाचार रीगन के पास पहुंचा तो उसने कायस के हाथ-पांव बंधवाकर उसे कटघरे में बन्दी बना दिया।

इतने में राजा की सवारी भी वहां आ पहुंची। आंगन में पांव रखते ही राजा ने सबसे पहला दृश्य जो देखा, वह अपने प्रिय सेवक के हाथ-पांवों में बेड़ियां जकड़ी देखीं। उसके लिए यह पहला अपशकुन था। कहां तो वह भारी स्वागत की आशा में यहां आया था और कहां द्वार पर एक नौकर को भी न पाया। परिस्थिति को भांपते राजा को देर न लगी। फिर भी उसने साहस करके द्वारपाल से पूछा—'राजकुमारी कहां है ?' उत्तर मिला कि इस समय राजकुमारी अपने शयनगृह में विश्राम कर रही हैं और प्रातःकाल से पहले न मिल सकेंगी।

यह सुनकर क्रोध के मारे राजा की आंखों से चिंगारियां निकलने लगीं और उसने होंठ फड़फड़ाते हुए कहा—'इतनी निर्लज्जता ! जिस पिता ने अपने सिर का मुकुट उतारकर

तुम्हारे माथे पर रखा, उसीके प्रति इतना तिरस्कार ! ऐसी पुत्रियों के ··'

अभी ये शब्द राजा के मुंह में ही थे कि उसकी दृष्टि प्रवेश-द्वार पर पड़ी और क्या देखता है कि स्वयं गोनरिल आंगन का फाटक पार करके रीगन के महल की ओर तेज़ी से बढ़ी जा रही है। उसे देखकर राजा काठ के पुतले की तरह वहीं का वहीं खड़ा रह गया। सहसा रीगन महल से निकली और राजा को वहीं खड़ा छोड़कर गोनरिल के हाथ में हाथ डालकर उसे भीतर लिवा ले गई। अब राजा से न रहा गया। उसके मुख से निकल पड़ा :

'गोनरिल ! क्या मेरी सफेद दाढ़ी और बुढ़ापे का भी तुझे कुछ लिहाज नहीं, ओ तू यहां भी···'

रीगन नागिन की तरह तड़पकर पीछे की ओर घूमी और राजा की बात समाप्त होने से पहले ही बोली :

'उसे आपका लिहाज है और सदा वह करे भी···किन्तु एक शर्त पर ! पहले आप अपनी मनमानी के लिए उससे क्षमा मांगें और भविष्य में इसकी आज्ञा में रहने की प्रतिज्ञा करें। अब वह मालिक है, मल्लिका है और आपकी संरक्षिका है। यदि उसकी आज्ञा में रहना आपको स्वीकार हो तो आप अब भी उसके साथ उसके महल में लौट जाइए ! इसमें उसे कोई आपत्ति न होगी।'

राजा ने एक कातर दृष्टि अपने जर्जर शरीर पर डाली और दूसरी रीगन के गर्वोन्मत्त मस्तक की ओर···और कुछ सहमे स्वर में बोला :

'और यदि मैं गोनरिल के पास न रहकर तुम्हारे पास रहना चाहूं तो···'

रीगन के पास मानो उत्तर पहले से ही गड़ा हुआ तैयार था। वह तुरन्त बोली :

'तो आपको मेरी आज्ञा में रहना होगा और उसी शर्त

पर !'

यह सुनकर राजा की आंखों के सामने अंधेरा छा गया और वह गिरते-गिरते बचा। अब उसे कोर्डीलिया की याद आई और वह पागलों की तरह आकाश की ओर देखकर बड़-बड़ाने लगा :

'कोर्डीलिया ! मेरी लाड़ली कोर्डीलिया ! न · न वह मुझे क्षमा न करेगी। मैंने उसके सरल स्नेह को न पहचाना ! मैंने उसके कोमल हृदय को खुशामद के पांवों तले रौंद डाला ! तब मैंने तनिक न सोचा कि वह मुझे कितना चाहती है। मुझे ज़रा भी उदास देखकर उसका फूल-सा चेहरा कुम्हला जाता था और वह घंटों मेरे सिरहाने बैठकर अपने नन्हे-नन्हे हाथों से मेरे सिर को सहलाते हुए पूछती थी :

'पिताजी ! बोलते क्यों नहीं, कहां दर्द है ? मुझे बताओ, नहीं तो मैं रो पड़ूंगी।' कितना रस था उसकी वाणी में ! उसके कोमल स्पर्श से मेरा रोम-रोम खिल जाता और मैं उसकी मीठी-मीठी बातों में ऐसा खो जाता कि मानो स्वप्नलोक में विचरण कर रहा हूं। मुझसे विदा होते समय उसने कितनी कातर दृष्टि से मेरी ओर देखा था, जैसे कि घायल कबूतरी शिकारी की ओर देखती है। हाय ! उस समय मेरा हृदय क्यों न फट गया ! मेरी जीभ क्यों न जल गई ! जो मैंने उस निर-पराधिनी को देश से निकल जाने की आज्ञा दे दी। हाय ! अब मैं कोर्डीलिया को फिर कैसे पाऊं ? मुझे निश्चय है कि यदि वह मुझे इस अवस्था में रोते देख ले तो अपना सारा तिरस्कार, अपनी सारी विपत्तियां और मेरे सारे अपराध भूलकर वह मेरे गले से चिपट जाए और गर्म आंसुओं की धारा से मेरे हृदय के दुःख को धो डाले।

इधर राजा की आंखों से आंसुओं की बरसात हो रही थी, उधर आकाश में सहसा घनघोर घटाएं घिर आईं। क्षण-भर में तूफान गरजने लगे, बिजलियां कड़कने लगीं और आसमान

कटकर धरती पर उतरने लगा। चिड़ियां घोंसलों में छिप गईं और घरों के कुत्ते-बिल्लियां भी सिमटकर कोनों में जा बैठे। यदि कोई खुले आकाश तले खड़ा था तो वह था राजा लियर। वही लियर जिसपर छत्र तानने के लिए आज से कुछ ही दिनों पहले सहस्रों हाथ आगे बढ़ते थे। और जिसपर चंवर डुलाने में लाखों अमीर अपना अहोभाग्य समझते थे, आज वही लियर नंगे आकाश तले खड़ा है और उसकी ओर कोई देखता नहीं। हाय कृतघ्नता !

शोक की अन्तिम सीमा तक पहुंच जाने पर मनुष्य का विवेक जाता रहता है। लियर भी पागलों की तरह यह बड़-बड़ाता हुआ तूफान में कूद पड़ा :

'आंधियो ! तूफानो ! आओ और घिर-घिरकर आओ। तूफानो ! बहो और इतने वेग ने बहो कि यह आकाश फट जाए और धरती हिल जाए। घटाओ ! बरसो और इतने ज़ोर से बरसो कि धरती का पाप तुम्हारी लहरों में समा जाए। संसार से मनुष्य और कृतघ्नता का नाम सदा के लिए मिटा दो।'

तूफानों को चीरता हुआ राजा अंधियारे में खो गया। 'महाराज ! महाराज !' चिल्लाते हुए कायस और शेखचिल्ली उसके पीछे भागे। राजा झाड़-झंखाड़ों, पत्थर-चट्टानों को लांघता हुआ बीहड़ जंगल में जा रहा था कि सहसा कायस ने पीछे से पहुंचकर उसके कंधे पर हाथ रखा और बड़ी कठिनाई से उसे एक गुफा की ओट में चलने के लिए राज़ी किया। ज्योंही शेखचिल्ली ने पहले गुफा में झांका तो 'भूत ! भूत !' कहकर पीछे की ओर भागा। वास्तव में वह भूत नहीं था, अपितु कोई किस्मत का मारा आंधी से बचने के लिए इस गुफा में जा छिपा था, शायद कोई फकीर मस्ताना या पागल। उसका पेट सिकुड़कर पीठ से जा लगा था और मुंह पर मुर्दनिगी छाई हुई थी। तन ढकने के लिए सिवाय एक चिथड़े के उसके पास एक कपड़ा तक न था। राजा ने उसकी यह दयनीय दशा देखकर

हाथ पसारकर उस फकीर को गले से लगाने का प्रयत्न किया। और कहा—'दीखता है, तुम भी किसी की कृतघ्नता के शिकार हुए हो, नहीं तो कृतघ्न की चोट खाए बिना कोई भी व्यक्ति इस हीन दशा को प्राप्त नहीं हो सकता।'

यह बात सुनकर कायस को यह समझने में देर न लगी कि राजकुमारियों के दुर्व्यवहार ने राजा को पागल बना दिया है।

कायस ने अब देर करना उचित न समझा और थोड़ी देर के लिए राजा को शेखचिल्ली के हवाले करके स्वयं नगर की ओर गया और दूसरे दिन पौ फटने से पहले ही पहले राजा के पुराने अनुचरों में से कुछ ऐसों को साथ लेकर आया जो अब भी राजा के लिए प्राण देने को उद्यत थे। उसी जंगल में 'डोबर' नाम का एक पुराना किला था। उन अनुचरों के साथ कायस ने राजा को उसी किले में पहुंचा दिया और उनकी सेवा-शुश्रुषा का भार उन्हीं लोगों पर छोड़कर स्वयं जल्दी से जल्दी कोर्डीलिया के पास फ्रांस जा पहुंचा। वहां जाकर उसने कोर्डीलिया को राजा की सारी रामकहानी कह सुनाई। राजा की इस दुरवस्था को सुनकर उसकी आंखों से टपटप आंसू गिरने लगे। उसने अपने पति की अनुमति से उसी समय एक बड़ी-सी सेना तैयार की और उन कृतघ्न राजकुमारियों के दमन के लिए इंग्लैंड को रवाना हो गई।

उधर कायस जिन संरक्षकों को राजा की देखभाल का काम सौंप आया था, उनकी आंख बचाकर राजा किसी प्रकार किले से भाग निकला। जब कोर्डीलिया इंग्लैण्ड पहुंची तो डोबर की ओर आते हुए उसके सैनिकों ने राजा को आस-पास के खेतों में पागलों की तरह चक्कर काटते हुए देख लिया। उसने जंगली घास का एक मुकुट बनाकर सिर पर पहन रखा था, और झाड़ियों तथा पेड़-पौधों को संबोधित करके कह रहा था—'राजा मैं हूं, राजा मैं हूं।' अपने प्यारे पिता को इस विक्षिप्त दशा में देखकर कोर्डीलिया का हृदय टुकड़े-टुकड़े हो गया। उसने

अपने वैद्यों को बुलाकर कहा :

'है कोई तुममें ऐसा, जो एक बार—केवल एक बार मेरे पिता को इतना होश में लाए कि वह मुझे पहचान ले। इस उपकार के लिए मैं तुम्हें सारे आभूषण और सारे हीरे-जवाहरात देने को तैयार हूं।'

वैद्यों ने अपनी सारी हिकमत और सारी योग्यता राजा के उपचार में लगा दी। कोर्डीलिया की सहानुभूति ने औषधि से भी बढ़कर काम किया। उसका प्रेमपूर्ण व्यवहार पाकर राजा का विवेक फिर से लौट आया और तब कोर्डीलिया उससे मिलने के लिए गई। पिता और पुत्री का यह मिलाप देखने योग्य था। राजकुमारी पिता की गोदी से लिपटी बार-बार उसे आश्वासन देने का प्रयत्न कर रही थी और राजा अपने आंसुओं की धारा से उसे नहला-सा रहा था। जिसने इस दृश्य को देखा उसी की आंखे डबडबा आईं। इधर से दो पवित्र हृदय एक-दूसरे पर न्यौछावर हो जाने को तैयार थे, उधर इंग्लण्ड के दरबार में एक नया ही कांड उपस्थित हो रहा था।

इंग्लैण्ड के एक पड़ोसी राज्य में एक बड़ा विलासी वज़ीर रहता था, जिसका नाम था एडमंड। वह जितना ही रूपवान था, स्वभाव में उतना ही कुटिल भी था। पिता का देहान्त हो जाने पर उसने राज्य के लोभ में अपने बड़े भाई की हत्या कर दी और स्वयं सिंहासन का स्वामी बन बैठा था। संयोगवश वह अभी कुंवारा था। एडमंड के रूप की प्रशंसा गोनरिल और रीगन के कानों तक पहुंच चुकी थी। दोनों बहनों ने कोर्डीलिया को सेना सहित राजा की सहायता के लिए आया सुनकर एक बहुत बड़ी सेना तैयार की और उसे ग्लौसेस्टर के नेतृत्व में कोर्डीलिया का सामना करने के लिए डोबर की ओर भेजा। इसी बीच सहसा मंझली राजकुमारी रीगन के पति राजकुमार कार्नवाल का देहान्त हो गया। अब उसे अपना प्रेम प्रकट करने का उचित अवसर मिल गया और उसने तत्काल ही एडमंड से

अपना विवाह रचाने की घोषणा कर दी। बड़ी राजकुमारी गोनरिल ने यह सुना तो मारे डाह के उसकी छाती पर सांप लोटने लगे। पिता के बाद अपने पति का प्रेम भी वह ठुकरा चुकी थी और अब इस बिगड़े रईस एडमंड को अपने प्रेमपाश में बांधना चाहती थी। उसकी इस राह में यदि कोई बाधा थी तो वह थी उसकी छोटी बहिन रीगन। गोनरिल ने उसे विष देकर अपना मार्ग निष्कंटक बना लेना चाहा।

उसने रीगन को विष दे दिया। उधर एडमंड के साथ उसकी गुप्त प्रेम-कहानी और रीगन की हत्या का समाचार गोनरिल के पति को मिल गया। इन दोनों अपराधों के कारण उसने गोनरिल को कारागार में बन्द कर दिया। जहां उसने अपने गले में फांसी लगा ली। इस प्रकार एक प्रातःकाल रीगन ने तड़प-तड़पकर प्राण दे दिए और दूसरे सायंकाल गोनरिल ने अपने जीवन का अन्त कर लिया। विधि के विधान के अनुसार दोनों राजकुमारियों ने अपनी-अपनी कृतघ्नता का फल पाया और राजा लियर के संतृप्त हृदय से निकली आह सत्य सिद्ध हुई।

उधर ग्लौसेस्टर को सेना सहित आते सुनकर कोर्डीलिया उससे लड़ने के लिए स्वयं युद्ध क्षेत्र में आ उपस्थित हुई। कहां भोली-भाली कोर्डीलिया, कहां वह धूर्त ग्लौसेस्टर ! कोर्डीलिया उसकी कुटिल चालों को न समझ सकी और एक अंधियारी रात में सोते-सोते बन्दी बना ली गई। वहीं उसने पिता की मंगल कामना करते हुए अपने प्राण त्याग दिए।

राजा ने एक कान से उन कृतघ्न राजकुमारियों का अन्त सुना और दूसरे कान से इस पितृवत्सला कोर्डीलिया का बलिदान। इतने बड़े आघात को राजा का कोमल हृदय सहन न कर पाया और अपनी लाड़ली पुत्री कोर्डीलिया का नाम पुकारते-पुकारते उसने भी अपने प्राण त्याग दिए। कहते हैं कि उन दोनों

की एक समय, एक घड़ी और एक स्थान पर अन्त्येष्टि की गई।

भगवान के घर में देर भले ही हो, किन्तु अन्धेर नहीं होता। दुराचारी ग्लौसेस्टर का सितारा चमक उठा था, किन्तु अधिक देर के लिए नहीं। बुझती दीप-शिखा के समान वह एक बार ही चमककर बुझ गया।

2. मैकबेथ

(Macbeth)

एक था वज़ीर। उसका नाम था मैकबेथ। वह बड़ा साहसी और पराक्रमी था। उसकी वीरता से प्रसन्न होकर स्कॉटलैंड के सम्राट् ने उसे 'ग्लेमिस' की जागीर का अमात्य बना दिया था। इसलिए प्रजा के लोग उसे ग्लेमिस का अमात्य या प्यार से केवल 'अमात्य' ही कहकर पुकारते थे।

एक बार की बात है कि मैकबेथ एक बड़ी लड़ाई को जीतकर लौट रहा था। रास्ते में एक सुनसान और उजाड़ मैदान पड़ता था। मैकबेथ ने अपनी सेना को दिन रहते उस मैदान से पार चले जाने का आदेश दिया और स्वयं अपने एक सेनापति बैंको के साथ टहलता हुआ मैदान के पार जाने लगा।

सांझ का समय था। सूर्य अभी-अभी पहाड़ की ओट में छिपा था और चांद के उगने में अभी कुछ देर थी। सहसा मैकबेथ को अपने आगे की राह पर किसी के फुसफुसाने की आहट सुनाई दी। उसने आंखें उठाकर देखा तो उसकी ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की नीचे रह गई। मैकबेथ के ठीक सामने कोई दस हाथ की दूरी पर तीन काली छायाएं सी उन दोनों की राह रोककर खड़ी थीं। वे इस दुनिया की रहनेवाली दिखाई न देती थीं। उनके चेहरे हल्दी-से पीले, झुर्रियों वाले, आंखे धंसी हुई, गाल भीतर को पिचके हुए और सारे शरीर पर नाम को भी मांस न था। उभरी हुई हड्डियों और उनपर ढलकती हुई पोशाक से ऐसे लगता था मानो तीन मुर्दे अपनी कब्रें खोदकर कफन सहित बाहर निकल आए हों। उनकी आकृति डरावनी और चाल-ढाल स्त्रियों जैसी थी, किन्तु मुंह पर लटकती हुई लम्बी सफेद दाढ़ी को देखकर उनके पुरुष होने का भ्रम होता था। इन छायाओं का इस प्रकार सहसा अपने

सामने आते देखकर मैकबेथ भय से चिल्लाना ही चाहता था कि उसमें सबसे आगे वाली छाया ने लकड़ी-सी सूखी अंगुली को होंठों पर रखकर उसे चुप रहने का संकेत किया, मानो उन्हें मनुष्य का शोर बिलकुल पसन्द न हो। फिर मैकबेथ को हैरान देखकर उसी छाया ने फुसफुसाती आवाज़ में कहा, 'ग्लेमिस के अमात्य मैकबेथ ! डरो मत।'

छाया के मुंह से अपनी जागीर का और फिर अपना नाम सुनकर मैकबेथ चौंका। उसे चौंकता देखकर उसी छाया ने कहा, 'मैकबेथ ! चौंको नहीं ! हम तुम्हें चिरकाल से जानती हैं।'

मैकबेथ ने साहस कर पूछा, 'क्या तुम मुझे चिरकाल से जानती हो ?'

पहली छाया—हां, हम तुम्हारे भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों कालों को भी जानती हैं और तुम्हें बताने आई हैं कि कल तुम क्या बननेवाले हो !

मैकबेथ—बताओ, क्या ?

दूसरी छाया—काडौर के जागीर का अमात्य और कुछ समय के बाद स्काटलैंड के सिंहासन के अधिकारी !

मैकबेथ—क्या कहा ? सिंहासन के अधिकारी !

दूसरी छाया—तो क्या सिंहासन पाने की अभिलाषा तुम्हारे मन में नहीं है ?

मैकबेथ—उन्नति की अभिलाषा किसे नहीं होती, फिर बहादुर तो सदा उन्नति के ही लिए जिया करते हैं।

'तो तुम्हारी अभिलाषा पूर्ण होगी।' दूसरी छाया ने कहा।

मैकबेथ—मुझे इस बात पर विश्वास नहीं आता !

दूसरी छाया—इसका कारण ?

मैकबेथ—मेरे अविश्वास का कारण है सम्राट् दंकन के दो राजकुमार। भला उनके जीते-जी मैं सिंहासन का अधिकारी बनने की आशा कैसे कर सकता हूं ?

तीसरी छाया—मैकबेथ ! भविष्य के गर्भ में बहुत कुछ है।

तुम राजा बनोगे और अवश्य बनोगे, किन्तु···

राजा बनने की सान्त्वना पाकर मैकबेथ का खिलता हुआ चेहरा 'किन्तु' शब्द को सुनकर सहसा कुम्हला गया और उसने पूछा—किन्तु क्या ?

तीसरी छाया—किन्तु तुम्हारे बाद बैंको की संतान राज्य की अधिकारी होगी !

मैकबेथ—क्या कहा ? बैंको की संतान !

अबकी बार तीनों छायाओं ने एकसाथ ज़ोर का ठहाका लगाया और यह कहती हुई गायब हो गईं :

राज्य करोगे···नहीं करोगे,
शाह बनोगे··· नहीं बनोगे।
निश्चय ही संतान तुम्हारी,
नहीं राज्य की है अधिकारी ! !

छायाओं की इस अटपटी वाणी का मतलब मैकबेथ बिलकुल न समझ सका और उसने आश्चर्य से बैंको की ओर देखते हुए कहा— यह सब क्या है ?

बैंको—सत्य !

मैकबेथ—कहीं स्वप्न तो नहीं ?

बैंको—स्वप्न तो नहीं, यह कल का सत्य है।

मैकबेथ—आखिर ये छायाएं कौन थीं ?

बैंको—भविष्य की छायाएं।

मैकबेथ—तो क्या मैं कल केडौर का अमात्य बनूंगा ? तो क्या मैं एक दिन स्काटलैंड का सम्राट बनूंगा ?

बैंको—इसका निर्णय भविष्य करेगा, अमात्य !

मैकबेथ—नहीं इसका निर्णय मेरी तलवार करेगी। वीर लोग भाग्य के सहारे नहीं जिया करते। उनके लिए एक संकेत ही पर्याप्त है और वह संकेत आज मुझे मिल गया है।

इस प्रकार मैकबेथ जब आधी रात के समय अपनी सेना में पहुंचा तो विजय की खुशी के बदले उसके विचारों में उथल-

पुथल थी और मन में अशान्ति। भविष्य की चिन्ता करते हुए उसने सारी रात आंखों ही आंखों में काट दी। वह सुबह उठा तो एक दूत ने आकर एक बन्द लिफाफा उसके हाथों में दिया। लिफाफे पर सम्राट् की मुहर थी। मैकबेथ ने कांपते हाथों से लिफाफे को खोला। नीले रंग के एक कागज़ पर सुनहरी अक्षरों में लिखा था—

वीरवर अमात्य मैकबेथ!

साधुवाद सहित अभिवादन!

आपके अद्भुत पराक्रम और राजभक्ति को देखकर राज्य के विद्रोह को शांत करने के पुरस्कारस्वरूप प्रजाजनों की राय से मैंने आपको काडौर रियासत जागीर के रूप में देने का निश्चय किया है। इस पत्र के साथ काडौर रियासत के सब अधिकार और अमात्य पद आपको सौंपता हूं। इसे स्वीकार करके आप मुझे तथा स्काटलैंड के प्रजाजनों को अनुगृहीत करें।

आपका प्रशंसक,

डंकन

(मुहर) राजाधिराज स्काटलैंड प्रदेश

यह पत्र पढ़कर मैकबेथ ने उसे उसी तरह सेनापति बैंको की तरफ बढ़ा दिया। बैंको ने एक नज़र में राजपत्र को पढ़कर कहा—'बधाई हो अमात्य! सम्राट् ने काडौर की जागीर आपको पुरस्कार में देकर आपकी बहादुरी का उचित ही सम्मान किया है। सम्राट् के इस आज्ञापत्र से जादूगरनियों की भविष्यवाणी का पहला चरण सिद्ध हो गया।'

मैकबेथ ने अभिमान से कहा—हां! पर मुझे तब तक शान्ति नहीं मिलेगी जब तक भविष्यवाणी का दूसरा चरण भी सत्य सिद्ध न हो जाए।

बैंको ने मन ही मन कहा—और तब तक मुझे शान्ति न मिलेगी, जब तक भविष्यवाणी का तीसरा चरण सत्य सिद्ध न हो और मैं अपनी सन्तान को स्काटलैंड के सिंहासन पर

ग्रासीन न देखूं।

विजययात्रा से लौटकर जब मैकबेथ ग्रपने घर पहुंचा तो उसने जादूगरनियों के प्रकट होने से लेकर काडौर की जागीर मिलने तक सारी रामकहानी ग्रपनी पत्नी को कह सुनाई। ऐसे टोने-चमत्कारों पर उसकी पत्नी बहुत विश्वास करती थी। साथ ही उसके मन में राजरानी बनने की ग्रभिलाषा भी जाग उठी थी। उसने भविष्यवाणी की ग्राड़ में मैकबेथ को खूब भड़काया ग्रौर राजा की हत्या करने के लिए उसे विवश किया। जब हत्या करने से ग्रमात्य ने ग्रानाकानी की तो पत्नी ने उसे कायर, बुज़दिल ग्रौर डरपोक तक कहा।

ठीक उसी समय विजय की बधाई देने के लिए स्वयं सम्राट् दंकन ग्रमात्य मैकबेथ के महल पर पहुंचे। मैकबेथ ग्रौर उसकी पत्नी ने राजा के स्वागत में कोई कसर न उठा रखी। उसकी पत्नी ने ग्रपने हाथों से राजा को खाना खिलाया, ग्रपने हाथों से राजा के पहरेदारों को शराब परोसी ग्रौर यह दिखावा किया कि राजा के ग्राने से वे बहुत प्रसन्न हैं। सरल-हृदय सम्राट् को क्या पता था कि इस स्वागत की ग्रोट में ही उसकी मृत्यु खड़ी मुस्करा रही है।

जब ग्राधी रात का समय हुग्रा ग्रौर सब ग्रतिथि गाढ़ी नींद में सो गए तो मैकबेथ की पत्नी एक नंगी तलवार हाथ में लेकर ग्रपने पति के पास गई ग्रौर बोली—बस, यही मौका ठीक है। इसी समय यह तलवार लेकर जाग्रो ग्रौर राजा का सिर धड़ से ग्रलग कर ग्राग्रो।

मैकबेथ ने कहा—वहां पहरेदार होंगे।

पत्नी—उनका प्रबन्ध मैंने पहले ही कर दिया है। वे सब शराब के नशे में बेहोश पड़े हैं।

मैकबेथ—लेकिन मेरे ग्रपने होश जो कायम नहीं। जिस राजा के लिए मैंने विद्रोह का दमन किया, उसी के विरुद्ध विद्रोह करने का मेरा साहस नहीं होता।

पत्नी—तो लाओ तलवार ! मैं अपने हाथ से राजा की हत्या करके अपनी उन्नति का रास्ता बनाऊंगी। तुम्हारे मन में राजा बनने की चाह भले ही न हो, किन्तु मैं तो रानी बनकर रहूंगी।

पत्नी को तलवार हाथ में लिए जाते देखकर मैकबेथ का सोया अभिमान जाग उठा। उसने लपककर पत्नी के हाथ से तलवार छीन ली और अकेला ही राजा के कमरे की ओर बढ़ा। चारों ओर शान्ति का साम्राज्य था। केवल मैकबेथ के मन में असीम अशान्ति थी। उसने दबे पांव कमरे में प्रवेश किया तो आकाश में लटकती हुई एक दूसरी तलवार दिखाई दी जो लहू से लथपथ थी और जिसकी नोक उसी तरफ निशाना बांधे खड़ी थी। पहले तो मैकबेथ उसे देखकर घबराया, किन्तु जब साहस करके उसने लटकती तलवार को पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया तो वहां कुछ न पाया—वह केवल उसके दिल का वहम था। यह देखकर उसे अपनी कायरता पर क्रोध आया और उसने तलवार के एक झटके में राजा के दो टुकड़े कर दिए।

ज्योंही मैकबेथ ने राजा के शरीर से उछलते लहू के फव्वारों से दृष्टि हटाकर भागने की कोशिश की, तभी उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि कमरे की एक-एक ईंट पुकार-पुकारकर कह रही है—

जागो सोने वालो जागो !
भागो! भागो! भागो! भागो !
खूनी तलवारें हैं जागीं
अपने आज बने हैं बागी
लुटी जा रही नींद अभागी
निंदिया त्यागो, निंदिया त्यागो
भागो ! भागो ! भागो ! भागो !

यह कुछ नहीं था, केवल मैकबेथ के दिल की चेतना ही उसे धिक्कार रही थी। मैकबेथ से वह शोर सुना न गया।

उसने दोनों हाथों से अपने कानों को बन्द कर लिया और कमरे में पहुंचकर लिहाफ में अपना मुंह भी छिपा लिया। उसकी पत्नी ने इस वीरता के काम के लिए उसकी पीठ थपथपाई और लहू से सनी हुई अपनी तलवार राजा के पहरेदारों के पास रख आई तथा कुछ लहू उनके हाथों तथा वस्त्रों में भी पोत आई।

सवेरा हुआ तो आते-जाते के होंठों पर यही बात थी—'मैकबेथ ने ही राजा की हत्या की है।' किन्तु उसके भय से कोई कुछ कहने का साहस न करता था। पहले दिन मैकबेथ और उसकी पत्नी ने जितना राजा के स्वागत का दिखावा किया था, उतना ही आज उन्होंने शोक का दिखावा किया। पिता की मृत्यु का समाचार सुनकर दोनों राजकुमार तो अपने प्राण लेकर रातों-रात ही कहीं भाग गए थे। मैकबेथ सम्राट् का निकट का रिश्तेदार भी था, इसलिए प्रजा ने राजसिंहासन को खाली देखकर उसे ही सम्राट् घोषित कर दिया। इस प्रकार जादूगरनियों से भेंट होने के तीसरे ही दिन उनकी दूसरी भविष्यवाणी भी सत्य सिद्ध हुई।

अब मैकबेथ यद्यपि सम्राट् बन चुका था, किन्तु वह तीसरी जादूगरनी की भविष्यवाणी अब तक न भूला था। रह-रहकर उसके दिल में आता कि मैंने राजा के खून से हाथ रंगे, मैंने उसके राजकुमारों को भागने पर विवश किया, मैं लोगों की नज़रों में हत्यारा बना—यह सब क्या इसलिए कि मेरे बाद बैंको की सन्तान राजगद्दी पर बैठे?

उसकी पत्नी कहती—तो राह के रोड़े हटा क्यों नहीं देते?

मैकबेथ चौंककर कहता—तो क्या एक और खून करना पड़ेगा?

पत्नी कहती—पहला खून तुमने अपने लिए किया, अब दूसरा खून अपनी संतान के लिए करना होगा। क्या तुम यह सहन करोगे कि तुम्हारे बाद तुम्हारी संतान दर-दर

भीख मांगती फिरे ?

आखिर पत्नी का दूसरा जादू भी मैकबेथ पर चल गया और उसने एक निमन्त्रण पर बुलाकर बैंको की तो हत्या करवा दी, किन्तु उसका पुत्र किसी तरह बचकर भाग निकला। जो सभा खुशी के अवसर पर बुलाई गई थी, वही शोकसभा बनकर रह गई और दुनिया को दिखाने के लिए मैकबेथ ने गहरी सांसें भर-भरकर कहना शुरू किया—हाय, मुझे क्या पता था बैंको, तुम मुझे इतनी जल्दी अकेला छोड़कर चले जाओगे।

जिस समय मैकबेथ भरी सभा में बैंको का नाम ले-लेकर चिल्ला रहा था, उसी समय बैंको का भूत (प्रेत आत्मा) आकर उसी कुर्सी पर बैठ गया, जिसपर मैकबेथ बैठनेवाला था। भूत को सामने देखकर मैकबेथ का चेहरा फीका पड़ गया और वह भय से थर-थर कांपने लगा। सभा में बैठे सब व्यक्तियों ने तो मैकबेथ को इस प्रकार कांपते और कुर्सी पर नज़र लगाए हुए देखा, किन्तु उनमें से किसीको भूत दिखाई न दिया। मैकबेथ की पत्नी ने उसकी बीमारी का बहाना करके झटपट सारी सभा को विसर्जित किया और कहा कि इन्हें प्रायः इस बीमारी का दौरा हो जाया करता है।

उस दिन के बाद से उस भूत ने उठते-बैठते, सोते-जागते हर समय उन पति-पत्नी को सताना आरम्भ कर दिया। अब मैकबेथ बड़ा व्याकुल रहने लगा। उसे हर समय यह चिन्ता घेरे रहती कि कहीं जादूगरनियों की तीसरी भविष्यवाणी सच न हो जाए। बहुत सोचने के बाद उसने एक बार फिर उन जादूगरनियों से मिलने की ठानी और एक दिन उनसे मिलने के लिए उसी उजाड़ मैदान में पहुंचा।

जादू की माया से जादूगरनियों को मैकबेथ के आने का पहले से ही पता चल चुका था, इसलिए वे भविष्य की बातों का पहले से ही पता लगानेवाले जादू-टोनों की तैयारी में लग गई थीं। उनके टोने के सामान में सांप का फन, चमगादड़ के

पर, कुत्ते की जीभ, बिल्ली की आंखें, छिपकली की पूंछ, भेड़िए का दांत, बकरी की दाढ़ी, हब्शी का जिगर, आदमी के बच्चे का खून और इसी प्रकार की बीसियों चीज़ें थीं। ऐसे ही जादू-टोनों की मदद से वे प्रेत आत्माओं को बुलातीं और उनसे भूत, भविष्य और वर्तमान की अमुक बातें पूछा करती थीं।

जब मैकबेथ वहां पहुंचा तो उनका टोना बनकर तैयार हो चुका था। उन्होंने मैकबेथ से पूछा—मैकबेथ ! तुम अपने प्रश्नों का उत्तर हमसे लेना चाहते हो या हमारे गुरुओं से ?

मैकबेथ ने कहा—गुरुओं से ! कहां हैं वे, क्या मैं उन्हें देख सकता हूं ?

मैकबेथ के यह कहने की देर थी कि उस टोने में से एक कटा हुआ सिर ऊपर उठा और बोला—मैकबेथ ! पूछो, तुम क्या पूछना चाहते हो ?

मैकबेथ—मैं पूछना चाहता हूं कि क्या मेरे जीते-जी मेरे सिंहासन को कोई भय हो सकता है ?

कटा सिर—तुम्हें फाइफ के सरदार मैकडफ से होशियार रहने की ज़रूरत है।

मैकबेथ—आपकी यह बात बिल्कुल ठीक है, क्योंकि मैकडफ मेरी उन्नति से मन ही मन जलता है !

तभी कटा हुआ सिर अन्तर्धान हो गया और लहु से लथपथ एक धड़ उठकर आकाश में जा खड़ा हुआ। बोला—मैकबेथ, पूछो, क्या पूछना चाहते हो ?

मैकबेथ—मैं पूछना चाहता हूं कि मेरे प्राणों को किस-किससे खतरा हो सकता है ?

धड़—तुम जैसे खूंखार को किसी से खतरा नहीं। मारो-काटो और राज्य करो !

यह कहकर धड़ भी अन्तर्धान हो गया और अन्त में एक बच्चा वृक्ष की हरी टहनियों से खेलता हुआ प्रकट हुआ। बच्चे ने पूछा—मैकबेथ, पूछो, तुम क्या पूछना चाहते हो ?

मैकबेथ—मैं पूछना चाहता हूं कि मेरे राज्य का अन्त कब होगा ?

बच्चा—जब तेरे राज्य का जंगल तेरे विरुद्ध उठ खड़ा होगा।

मैकबेथ—जंगल तो कभी उठा नहीं करता। तो क्या इसका मतलब है कि मेरा राज्य अटल रहेगा ?

बच्चा—बशर्ते कि तेरे विरुद्ध जंगल न उठ खड़ा हो !

मैकबेथ—अच्छा, जिस बात के लिए चिरकाल से मेरे हृदय में तूफान मच रहा है, अब मैं उसी के बारे में पूछना चाहता हूं।

बच्चा—पूछो !

मैकबेथ—मेरे बाद सिंहासन पर मेरी संतान बैठेगी या बैंको की ?

यह सुनकर बच्चा खिलखिलाया और गायब हो गया। उसके स्थान में राजाओं जैसी आठ छायाएं प्रकट हुईं और एक के बाद एक करके मैकबेथ के सामने से गुज़र गईं। उनमें सबसे आगे लहू से लथपथ बैंको की मुस्कराती हुई छाया थी। मैकबेथ को यह समझते देर न लगी ये सातों बैंको की उन संतानों की छायाएं हैं जो मेरे बाद स्काटलैंड के सिंहासन पर बैठेंगी। मैकबेथ के देखते ही देखते वे आठों छायाएं, वे जादूगरनियां और उनका जादू-टोना सब कुछ अन्तर्धान हो गया। केवल मैकबेथ के हृदय में निराशा और गम उसी प्रकार अड़ा रहा।

इधर प्रेतात्माओं के मुंह से भविष्यवाणी निकलने की देर थी कि उधर एक-एक करके उसी क्रम से घटनाएं भी आरम्भ हो चुकी थीं। मैकबेथ के राजधानी में लौटने से पहले ही फाइफ का सरदार वहां से फरार हो चुका था और उसने राजा दंकन के भगोड़े पुत्र को वापस बुलाकर उसके नेतृत्व में एक बड़ी विद्रोही सेना भी तैयार कर ली थी। जब यह समाचार मैकबेथ को मिला तो वह स्वयं नंगी तलवार हाथ में लेकर मैकडफ के घर में पहुंचा और उसने चुन-चुनकर उसके स्त्री-पुत्र और सब

रिश्तेदारों को अपने हाथ से तलवार के घाट उतारा। जिसने भी मैकडफ के परिवार के लिए आह तक भरी, मैकबेथ ने उसका भी सिर धड़ से अलग कर दिया। इस प्रकार लहू की नदियां बहा-कर मैकबैथ ने सोचा कि वह अपने शत्रुओं का अन्त कर देगा और प्रेतात्माओं की भविष्यवाणी को सत्य सिद्ध नहीं होने देगा। किन्तु विधाता को कुछ और ही मंजूर था। उसके बढ़ते हुए अत्याचारों को देखकर उसके अपने हितैषी सरदार भी नाराज़ हो गए और विद्रोहियों से जा मिले। अब तक मैकबेथ को अपनी जीवन-साथिन पर भरोसा था, किन्तु वह भी इस आड़े समय में उसका साथ छोड़कर परलोक सिधार गई। अब मैकबेथ पंख कटे पक्षी के समान चारों ओर से असहाय हो चुका था। वह अपने दो-चार बचे-खुचे सरदारों को लेकर एक रात राजधानी से भाग निकला और स्काटलैंड के जंगलों में स्थित एक पुराने किले में जाकर उसने शरण ली।

उधर यह खबर उड़ते-उड़ते विद्रोहियों के कानों में जा पहुंची। वे पहले ही उसके खून के प्यासे हो रहे थे। हो-हल्ला मचाते हुए एक दिन वे जंगल में उसी पुराने किले की ओर बढ़ चले। उन्होंने चलते-चलते राह में वृक्षों की बड़ी-बड़ी टहनियां तोड़ लीं और उनकी आड़ में छिपकर चलने लगे, ताकि उनको कोई आदमी आते हुए देख न ले। उस समय एक सिपाही किले के बुर्ज पर पहरा दे रहा था। उसे दूर से दिखाई दिया कि हरा-हरा जंगल उठकर किले की ओर बड़े वेग से भागा चला आ रहा है। वह हांफते-हांफते मैकबेथ के पास पहुंचा और बोला—दुहाई महाराज की! बड़ा अनर्थ हो गया!

मैकबेथ ने धमकाकर कहा—क्या अनर्थ हो गया! बकता क्यों नहीं?

सिपाही—महाराज, स्काटलैंड का सारा जंगल उठकर हमारे किले की ओर भागा चला आ रहा है।

अब मैकबेथ के क्रोध की सीमा न रही। उसने होंठ चबाते हुए कहा—अंधे कहीं के, क्या कभी जंगल भी भागा करता है !

सिपाही ने कहा—सौगंध महाराज की ! मैं झूठ नहीं बोलता। आप स्वयं चलकर देख लीजिए।

मैकबेथ—और अगर झूठ निकला तो मैं तुम्हारी चमड़ी कुत्तों से नुचवा दूंगा।

सिपाही—महाराज, अगर मेरी बात झूठ निकले तो जो चाहें मुझे दण्ड दीजिएगा! मैंने अपनी आंखों से देखा कि सारा जंगल किले की ओर भागा आ रहा है।

मैकबेथ ने सोचा कि जो यह सिपाही इतनी सौगंध खाकर कह रहा है, तो हो सकता है कि यह असम्भव बात भी प्रेतात्माओं के अनुसार सत्य हो जाए। उन्होंने आज तक जितनी भी भविष्यवाणियां कीं वे सब एक-एककरके सच्ची साबित हुई हैं, तो उनकी आखिरी भविष्यवाणी कैसे झूठ हो सकती है ? हो न हो, आज जीवन में मेरा अन्तिम दिन है इसीलिए आज असम्भव बातें भी संभव हो रही हैं और स्काटलैंड का जंगल भी मेरे विरुद्ध उठ खड़ा हुआ है।

उसके यह सोचते-सोचते ही धड़ाम से किले का दरवाज़ा टूटा और नंगी तलवार हाथ में लिए हुए फाइफ का सरदार मैकडफ गुर्राता हुआ भीतर घुसा। मैकबेथ को प्रेतात्मा की भविष्यवाणी याद हो आई कि तू फाइफ के सरदार मैकडफ से होशियार रहना। मैकबेथ समझ गया कि अब मेरा अन्त समय निकट आ गया है। फिर भी उसने आगे बढ़कर तलवार का एक भयंकर वार मैकडफ पर किया। वार खाली गया और मैकडफ ने तड़पकर अपनी दुधारी कटार मैकबेथ की छाती में घुसेड़ दी। इस प्रकार प्रेतात्माओं की तीसरी भविष्यवाणी भी सत्य सिद्ध हुई और स्काटलैंड के सिंहासन पर बैंको की आठ पीढ़ियों ने निष्कंटक राज्य किया।

3. हैमलेट

(Hamlet)

किसी समय डेनमार्क के दूर देश में हैमलेट नाम का एक राजा राज्य करता था। उसकी एक परम सुन्दरी रानी थी। राजा रानी को और रानी राजा को हृदय से प्यार करते थे और दोनों एक-दूसरे पर न्यौछावर होने को तैयार रहते थे। उनके एकमात्र पुत्र का नाम कुमार हैमलेट था जो माता की अपेक्षा पिता का ही अधिक लाड़ला और प्यारा था।

एक दिन अनायास ही महाराज हैमलेट का देहान्त हो गया और उसके छोटे भाई क्लेदियस ने आंखों में आंसू भरकर बड़े खेद से प्रजा को यह समाचार सुनाया कि एक विषधर सांप के काटने से राजा की तत्काल मृत्यु हो गई है। लोग राजा को अपने पिता के समान समझते थे, इसलिए उसकी मृत्यु पर सारी प्रजा में गहरा शोक छा गया। महाराज की मृत्यु का यदि किसी को सबसे अधिक आघात पहुंचा तो वह था कुमार हैमलेट। पिता के वियोग में रो-रो कर उसने अपनी आंखें सुजा लीं। रात को सोते-सोते पिता का नाम लेकर वह हड़बड़ाकर उठ बैठता।

अभी उसकी आंखों से अपने प्यारे पिता के वियोग के आंसू भी न सूख पाए थे कि दो महीने के थोड़े समय के बाद ही उसने एक और दुःखद समाचार सुना कि उसकी माता ने दूसरा विवाह कर लिया है। विवाह भी किससे—स्वर्गीय महाराज के छोटे भाई क्लेदियस से—जो रूप, रंग और गुणों में अप्रशंसनीय तो क्या, प्रत्युत रानी का पति बनने और राजा कहलाने के भी बिलकुल अयोग्य था! इससे भी बुरी बात जो कुमार हैमलेट को लगी, वह थी उसकी मां की इस विवाह करने में जल्दबाज़ी। कहां तो वह स्वर्गीय महाराज को अपने

तन-मन से अधिक प्यार करती थी और कहां उसकी मृत्यु के केवल दो महीने बाद ही उन्हें बिलकुल भुलाकर दूसरा पति भी कर बैठी। यह देखकर कुमार हैमलेट के हृदय पर गहरी चोट लगी और मारे शर्म के उसका दिल डूब मरने को चाहने लगा।

एक दिन वह इसी चिन्ता में बैठा सोच रहा था, कि इतनी जल्दी उसकी मां क्यों बदल गई, कि सहसा उसके ध्यान में आया कि हो न हो इस विवाह में भी कोई रहस्य है। हो सकता है कि मेरे चाचा और मेरी मां ने जान-बूझकर मेरे पिता की हत्या करवाई हो और झूठमूठ ही प्रजा में सांप काटने का समाचार फैला दिया हो। मेरे पिता को डसने वाला विषधर सांप और कोई नहीं—वह यही क्लेदियस है। राज्य के लोभ से उसने मेरे पिता को मरवा दिया है और मेरी माता को वश में करके अब मेरे राज्याधिकार पर भी फण फैलाए बैठा है। इन्हीं चिन्ताओं के कारण वह दिनोंदिन दुबला होने लगा। उसका फूल-सा चेहरा कुम्हलाकर पीला पड़ गया और वह बच्चों वाली चुलबुलाहट भूलकर बूढ़ों की तरह दिन-रात चिन्ताग्रस्त रहने लगा।

इसी बीच एक दिन महल के पहरेदारों ने उसे बताया कि उन्होंने स्वर्गीय महाराज की प्रेतात्मा को महल के सामने प्रकट होते देखा है। वह तीन दिन लगातार प्रकट होती रही और हर बार वह चुपचाप आई और मुंह से बिना एक भी शब्द बोले चुपचाप चली गई। किन्तु उसकी चाल-ढाल से यही पता चलता था कि वह किसी को ढूंढ़ रही है और कुछ बात कहना चाहती है।

यह सुनकर कुमार हैमलेट को निश्चय हो गया कि वह उसीके पिता की भटकती आत्मा है। उसने उससे भेंट करने का निश्चय किया और दूसरी ही रात को पहरेदारों के साथ उस स्थान पर जा बैठा जहां उन्होंने पिछली रातों में उसके पिता

की प्रेतात्मा को देखा था।

जब रात का अन्धकार छा गया और महल की घड़ी ने दस बजाए तो एक पहरेदार ने महल के सामने वाले चबूतरे की ओर इशारा करके कुमार हैमलेट के कान में धीरे से कहा—'भूत'। कुमार को चांद की चांदनी में स्पष्ट दिखाई दिया कि उसके पिता की छाया लगभग पचास कदम की दूरी पर खड़ी उसी की ओर टकटकी लगाकर देख रही है और जैसे कुछ कहना चाहती है। वही चाल, वही ढाल और वही वेश था जो महाराज ने अपने अन्तिम क्षणों में धारण किया हुआ था। उसे देखकर सहसा कुमार के मुंह से निकल पड़ा—'पिताजी !' और वह पहरेदारों की चेतावनी की परवाह किए बिना ही पिता की प्रेतात्मा की ओर लपका। वह छाया मुंह से एक शब्द भी न बोली और हाथों के इशारों ही इशारों से उसने कुमार को ऐसे एकांत स्थान में चलने को कहा, जहां कोई भी उनकी बात को न सुन सके। यह देखकर एक क्षण के लिए कुमार के मन में सन्देह हुआ कि कहीं यह कोई मायावी प्रेतात्मा न हो और मेरे पिता के रूप में प्रकट होकर कहीं मुझे छलना न चाहती हो, किन्तु दूसरे ही क्षण उसकी अन्तरात्मा ने भीतर से गवाही दी कि यह तेरे पिता की ही भटकती आत्मा है और कुमार निडर होकर उसी ओर चलने लगा जिस ओर छाया उसे ले जाना चाहती थी। जब वे एक बिलकुल एकांत स्थल में पहुंचे तो छाया ने एक बार चारों ओर दृष्टि घुमाकर देखा कि कोई उनकी बातें सुन तो नहीं रहा और फिर कुमार की ओर झुककर बोली—'कुमार !'

कुमार ने देखा कि स्नेह और लाड़ से भरा यह वही स्वर और संबोधन था, जिसके द्वारा उसके स्वर्गीय पिता जब बहुत उदास होते तो उसे पुकारा करते थे। इससे कुमार का हौसला बढ़ा और उसने साहस करके पूछा—'पिताजी ! मैं जानना चाहता हूं कि किस बात ने आपको परलोक के शांत वाता-

वरण से लौटकर फिर इस दुनिया में आने को विवश किया है ! आपके मन की उस अशांति और इस भटकने का क्या कारण है ?'

छाया ने फुसफुसाती ज़बान में कहा—मेरी रहस्यमयी हत्या !

कुमार को जिसका सन्देह था, उसी की पुष्टि सुनते हुए उसने चौंककर पूछा—हत्या ?

छाया—हां हत्या ! अपनी हत्या के इसी रहस्य को बताने के लिए तब से मेरी आत्मा भटक रही है। आज वह रहस्य तुम्हें बताकर मेरी आत्मा को कुछ शान्ति मिलेगी।

कुमार ने सहसा आवेश में आकर पूछा—किस दुष्ट ने आपकी···

छाया ने बात काटकर कहा—कुमार, आवेश में मत आओ ! धैर्य से सुनो :

अपनी मृत्यु के दिन प्रातःकाल मैं उसी स्फूर्ति से जागा था जिससे कि बसन्त के उषाकाल में गुलाब की कली खिला करती है। उठकर मैं प्रतिदिन की तरह नहाया-धोया और दरबार के काम से निपटकर महल के उसी बाग में सुस्ताने के लिए जा लेटा, जिसमें अभी मेरी तुमसे भेंट हुई थी। वहां के झोंकों के शीतल स्पर्श से पल-भर में मेरी आंख लग गई और मैं स्वप्नलोक में विहार करने लगा। तभी तुम्हारा चाचा अर्थात् मेरा छोटा भाई क्लेदियस दबे पांव उसी बाग में आया और चुपके से उसने मेरे कान में किसी विषैले तेल की केवल दो बूंदें टपका दीं। बूंद के कान में टपकते ही मेरी नस-नस जल उठी और मेरा हृदय एक साथ ही सौ बार धड़ककर गतिहीन हो गया। इस प्रकार एक क्षण में ही उस ज़ालिम ने मुझे अपने राज्य, अपनी पत्नी और अपने प्यारे पुत्र से छीनकर अंधकार की दुनिया में जा धकेला, जहां मेरी आत्मा को गति नहीं और मेरे मन को शांति नहीं। कुमार !

यदि तुम्हें मुझसे तनिक भी स्नेह है तो…
कुमार—तो मैं इसका बदला लेकर छोड़ूंगा।
छाया हां! तभी मेरी आत्मा को सच्ची शांति मिलेगी! किन्तु एक बात याद रखना कि अपनी माता के अपराधों को क्षमा करके उसे भगवान के न्याय पर छोड़ देना।

यह कहकर महाराज की प्रेतात्मा अन्तर्धान हो गई।

उसी क्षण से कुमार हैमलेट अपने चाचा से बदला लेने की चिंता में रहने लगा। हैमलेट जैसे सरल-हृदय कुमार के लिए किसी की हत्या जैसा जाल रचना कोई सरल बात न थी। फिर, क्लेदियस के गुप्तचर हर समय और हर जगह उसका पीछा किया करते और उसकी छोटी से छोटी बात को क्लेदियस तक पहुंचा दिया करते थे। सन्देह की इस चारदीवारी से बचने के लिए कुमार को एक उपाय सूझा—वह जान-बूझकर पागल बन बैठा। चाल-ढाल, वेश-भूषा और बातचीत में उसने पागलपन का अभिनय (नाटक) इस निपुणता से किया कि स्वयं क्लेदियस और रानी को भी पूरा विश्वास हो गया कि कुमार का दिमाग ठिकाने पर नहीं रहा और क्लेदियस ने उसकी जासूसी करना भी छोड़ दिया। उन्हीं दिनों क्लेदियस के दरबार में एक वज़ीर था, जिसकी लड़की ओफीलिया से कुमार प्यार करता था। सबने यही समझा कि प्यार के आवेश ने ही कुमार को पागल बना दिया है। उनकी इसी समझ की आड़ में और क्लेदियस को चकमा देने के विचार से कुमार ने एक ऊट-पटांग पत्र ओफीलिया के नाम लिखा, जिसकी उल्टी-सीधी भाषा से यही प्रकट होता था कि वह अब भी ओफीलिया को दिल से प्यार करता है और प्यार की बीमारी ने ही उसे पागल बना दिया है। ओफीलिया ने यह पत्र अपने पिता को दिखाया और उसके पिता ने क्लेदियस को। पत्र की भाषा को पढ़कर क्लेदियस का कुमार के प्रति रहा-सहा सन्देह भी जाता रहा और उसने उसकी चौकसी करना बिलकुल छोड़ दिया।

अब कुमार सब कहीं जाने और सब कुछ करने को स्वतंत्र था। उसने छिपे-छिपे क्लेदियस की हत्या का जाल रचना आरम्भ किया। संयोगवश उन्हीं दिनों एक नाटक मंडली वहां आई। कुमार ने भी मंडली का एक नाटक देखा, जिसमें एक राजा की हत्या का दृश्य दिखाया गया था। हत्या का वह दृश्य इतना स्वाभाविक बन गया था और नटों ने उसे इस निपुणता से खेला था कि राजा की हत्या होते समय दर्शक लोग 'त्राहि-त्राहि' चिल्ला उठे थे और कई तो बेहोश तक हो गए थे। उस दृश्य को देखकर कुमार को अपने पिता की हत्या स्मरण हो आई और साथ ही उसे यह भी विचार आया कि इसी नाटक की कथा में कुछ परिवर्तन करके स्वर्गीय महाराज हैमलेट की हत्या का दृश्य रंगमंच पर दिखाया जाए और उसे देखने के लिए क्लेदियस को भी निमन्त्रित किया जाए। देखें नाटक का उसपर क्या असर होता है। यदि वह बिल्कुल पत्थर-दिल न हुआ और उसमें थोड़ी भी सहृदयता शेष हुई तो अपने हाथों से किए गए खून का अभिनय अपनी आंखों के सामने देखकर वह अपने-आप को संभाल न सकेगा और इससे उसके हत्यारा होने का मुझे आंखों देखा सबूत मिल जाएगा। यह सोचकर उसने तीसरे ही दिन नाटक मंडली को राजभवन में एक नाटक खेलने के लिए कहा, जिसकी कथा संक्षेप में इस प्रकार थी :

वियना नगरी में गुंजाक नाम का एक राजा था। उसकी रानी बेपतिस्ता उसे प्राणों से भी अधिक प्यार करती थी। राजा का एक चचेरा भाई भी था जिसका नाम लोशियन था। वह मन ही मन राजा के ऐश्वर्य और उसकी रूपवती रानी को देखकर जला करता था। एक दिन राजा गुंजाक अपने महल की एक फुलवारी में सोया था कि लौशियन ने दबे पांव जाकर राजा के कान में विषैले तेल की दो बूंदें टपका दीं, जिसके फलस्वरूप राजा ने उसी क्षण तड़पकर प्राण दे दिए और लोशियन ने राजा की पत्नी को वश में करके उसके सिंहा-

सन पर भी अधिकार जमा लिया।

वस्तुतः यह क्लेदियस के अपने पाप की सच्ची कहानी थी। केवल मनुष्यों के नाम बदल दिए गए थे। जब नाटक आरम्भ हुआ और रानी बेपतिस्ता ने गुंजाक के सामने अपने प्यार की सौगन्ध उठानी आरम्भ की तो इस वार्तालाप को सुनकर रानी के चेहरे का रंग उड़ने लगा। आगे चलकर जब नाटक में एक फुलवारी का दृश्य दिखाया गया, जिसमें एक ओर राजा गाढ़ी नींद में सोया था और दूसरी ओर से लोशियन हाथ में विषैले तेल की शीशी लेकर राजा के कान के पास पहुंचा तो इस दृश्य को देखकर क्लेदियस का दिल डावांडोल हो गया। जिसे वह अब तक एक छिपा रहस्य मान रहा था, उसी रहस्य-भरी हत्या का खुले आम नाटक खेला जाता हुआ देखकर क्लेदियस वहां अधिक देर तक न बैठा रह सका और बीमारी का बहाना करके आधे नाटक से ही उठकर चला गया।

कुमार हैमलेट ने इसी अभिप्राय से यह नाटक खिलवाया था और नाटक के आरम्भ से ही वह टकटकी लगाकर क्लेदियस के मुंह पर आते-जाते भावों को भांप रहा था। इसलिए जब उसने क्लेदियस को बेचैनी की दशा में अधूरे नाटक में से ही उठकर जाते देखा तो पास बैठे अपने एक मित्र के कान में कहा—देखा! क्लेदियस के मन का चोर!

मित्र ने कहा—यही हत्यारा है!

कुमार ने कहा—चुप रहो! यहां कुछ कहने या करने का समय नहीं! जब समय आएगा तो मैं तुम्हें कहूंगा।

नाटक समाप्त हुआ तो रातों रात ही रानी ने कुमार को एक आवश्यक सन्देश भेजकर अपने पास बुलवा भेजा। कुमार को यह समझते देर न लगी कि इसमें भी क्लेदियस का ही हाथ है। उसे मां पर भी क्रोध आ रहा था, किन्तु शीघ्र ही उसे पिता की प्रेतात्मा के ये शब्द याद हो आए कि माता के अपराध को क्षमा कर देना। कुमार यह सोचकर उसी क्षण मां से मिलने के

लिए चल दिया। जिस बात का उसे पहले से ही अनुमान था, मां ने उसे ही कहा :

कुमार ! अपने पिता के प्रति तुम्हारा यह व्यवहार ठीक नहीं !

कुमार ने कड़क कर पूछा—किस पिता के प्रति ?

मां—महाराज क्लेदियस के प्रति ! अब वें ही तुम्हारे पिता हैं !

ये शब्द सुनकर कुमार की आंखों से क्रोध की चिनगारियां निकलने लगीं। उसने गुस्से से होंठ चबाते हुए कहा—मां ! तुम्हारे मुंह से—उस पुरुष के प्रति जो कि स्वर्गीय महाराज का हत्यारा है—ये शब्द सुनकर मेरा सिर शर्म से झुका जा रहा है। 'पिता' जैसा पवित्र नाम क्लेदियस जैसे नीच व्यक्ति को देने से पहले मैं तलवार से उसके टुकड़े-टुकड़े क्यों न कर दूं!

कुमार को जोश में आया देखकर रानी को कुछ और कहने का साहस न हुआ और वह वहां से उठकर जाने लगी। कुमार ने उसका हाथ पकड़कर उसे बिठा लिया और कहा—मां ! मैं तब तक तुम्हें जाने न दूंगा, जब तक तुम मेरे एक प्रश्न का उत्तर न दे लो !

रानी ने हाथ छुड़ाकर भागना चाहा, किन्तु कुमार ने उसे दृढ़ हाथों से पकड़कर फिर बिठा लिया। रानी ने डरकर 'बचाओ, बचाओ' चिल्लाना आरम्भ किया। रानी की चिल्लाहट सुनकर पर्दे के पीछे से, बाहर की ओर से भी किसी पुरुष ने 'बचाओ, बचाओ' का शोर मचाया। कुमार ने समझा कि छिपकर हमारी बातें सुनने के लिए क्लेदियस ही पर्दे के पीछे बैठा होगा और अब रानी को चिल्लाते देखकर वह भी चिल्लाने लगा है। यह सोचकर कुमार रानी को कमरे के एक कोने में धकेलकर बिजली की फुर्ती से तलवार लेकर पर्दे की ओर झपटा। तलवार के पड़ते ही किसी के 'हाय' कहने और धड़ाम से नीचे गिरने का शब्द सुनाई दिया। कुमार ने झटपट आगे बढ़कर

देखा तो वह क्लेदियस न था—अपितु उसकी प्रियतमा ओफीलिया का पिता था, जो क्लेदियस की खुशामद करने के लिए अपने प्राणों की बाज़ी लगाकर भी छिपकर कुमार की बातें सुनने के लिए आया था। कुमार के मुंह से केवल इतना निकला—इस अपराध के लिए ओफीलिया मुझे कभी क्षमा न करेगी! भगवान उसके पिता की आत्मा को सद्गति दे।

यह कहकर कुमार रानी की ओर बढ़ा। मारे भय के रानी की बोलती बन्द हो चुकी थी और वह अचेत होकर भूमि पर गिरना ही चाहती थी कि कुमार ने हाथ का सहारा देकर उससे कहा—मां डरो मत! मैं तुम्हारा पुत्र कुमार हैमलेट हूं। और स्वर्ग की देवी के समान तुम्हारी पूजा करता हूं। डरावना व्यक्ति तो स्वयं क्लेदियस है जिससे तुम्हें डरना चाहिए। वह स्वर्गीय महाराज का हत्यारा है। उसने उनके खून से हाथ रंगकर डेनमार्क के सिंहासन पर अधिकार कर लिया है और अब हमारे वंश की इज़्ज़त के साथ भी अठखेलियां करना चाहता है।

रानी मूक होकर सुनती रही। सामन ही एक दीवार पर महाराज हैमलेट का चित्र टंगा था। कुमार ने उसी ओर संकेत करके कहा—वह देखो मां! पिताजी हमारी ओर देखकर मुस्करा रहे हैं, मानो मां और बेटे के इस मिलन पर वे भी गद्गद होकर हमें गले लगा लेना चाहते हों।

ये शब्द कुमार ने इस दर्द-भरे स्वर में कहे कि रानी का हृदय मोम की तरह पिघल गया और उसकी आंखों से टपटप आंसू गिरने लगे। कुमार ने उसके आंसू पोंछते हुए कहा—मां, अब भी कुछ बिगड़ा नहीं! तुम आर्शीवाद दो···। कुमार ने अभी इतना ही कहा था कि कमरे के दूसरे कोने से गम्भीर आवाज़ में सुनाई दिया :

···कि मैं अपने पिता के हत्यारे का बदला ले सकूं।

कुमार ने चकित होकर उस ओर देखा तो उसके पिता की

प्रेतात्मा शोक-भरी मुद्रा में उसके सामने खड़ी थी। उसे देखकर कुमार के मुंह से एक चीख निकल गई और उसने उसी ओर टकटकी लगाते हुए कहा—पिताजी !

इसके उत्तर में प्रेतात्मा ने उसी धैर्य के साथ कहा—कुमार ! मैं तुम्हें तुम्हारे कर्त्तव्य की याद दिलाने आया हूं। कहीं तुम उसे भूल तो नहीं गए ?

कुमार ने कहा—नहीं पिताजी ! प्राण रहते मैं आपकी आज्ञा को कभी भूल नहीं सकता। मैं उस हत्यारे से बदला लेकर छोड़ूंगा।

प्रेतात्मा—मैं फिर तुम्हें याद दिलाता हूं कि बदला लिए बिना मेरी आत्मा भटकती रहेगी। क्लेदियस की हत्या से ही मेरी आत्मा को सच्ची शान्ति प्राप्त हो सकती है।

यह कहकर प्रेतात्मा अन्तर्धान हो गई। रानी ने कुमार को कांपते और दीवार की ओर टकटकी लगाए देखा, किन्तु इसके अतिरिक्त उसे कुछ न दिखाई दिया। हां, जितनी देर प्रेतात्मा कमरे में रही उतनी देर उसे अपने चारों ओर सर्दी की एक लहर के साथ-साथ कंपकंपी का अनुभव होता रहा। कुमार ने महाराज की प्रेतात्मा के विषय में रानी को कुछ न बताया, केवल उसे क्लेदियस से होशियार रहने की चेतावनी देकर गली के अन्धेरे में कहीं गुम हो गया।

पल-पल की खबर गुप्तचरों के द्वारा क्लेदियस के पास पहुंच रही थी। उसने दूसरे दिन कुमार को विदेश भेजने का प्रबन्ध कर लिया और बहाना बनाया कि राजपुरुष की हत्या करने के कारण प्रजा के लोग कुमार से सख्त चिढ़े हुए हैं और डेनमार्क में रहते हुए उसके प्राणों का खतरा है। उसने प्रातःकाल ही कुमार को अपने दो अफसरों के साथ जहाज़ पर चढ़ाकर विदेश भेज दिया और गुप्त रूप से अफसरों को समझा दिया कि समय पाकर वे समुद्र में ही कुमार को हत्या कर दें। जाको राखे साइयां, मार सके न कोय ! कुमार का जीवन

अभी कुछ शेष था। इसलिए कुछ ऐसी बात बनी कि तट से कुछ दूर जाते ही उस जहाज़ पर समुद्री डाकुओं ने आक्रमण कर दिया। इसी मुठभेड़ में वे दोनों अफसर मारे गए और डाकुओं ने कुमार को पहचान कर उसे बड़े आदर के साथ वापस डेनमार्क पहुंचा दिया।

जहाज़ से नीचे पांव रखते ही कुमार ने जो पहली खबर सुनी वह यह कि उसकी प्रियतमा ओफीलिया अपने पिता के वियोग को न सहकर इस संसार से चल बसी है और उसकी अन्त्येष्टि क्रिया की जा रही है। कुमार पागलों की तरह बेत-हाशा भागता हुआ वहां जा पहुंचा जहां ओफीलिया की अर्थी रखी थी और उसका भाई उसे दफनाने ही वाला था। क्लेदि-यस, रानी और दूसरे दरबारी भी वहां उपस्थित थे। उस भीड़ को चीरता हुआ कुमार अर्थी के पास पहुंचा और बेसुध-सा होकर अर्थी पर गिर पड़ा। ओफीलिया के भाई ने देखा कि यही वह कुमार है जिसने मेरे पिता का वध किया और मेरी बहिन की मृत्यु का कारण है तो वह बदला लेने के लिए कुमार पर झपट पड़ा। यह देखकर क्लेदियस मन ही मन बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने उस समय तो उन दोनों को छुड़ा दिया किन्तु बाद में उन दोनों का द्वन्द्व-युद्ध होना निश्चित करवा लिया। यह भी क्लेदियस की एक नीचता-भरी चाल थी। उसने ओफीलिया के भाई को भड़काकर उसे इस बात पर राज़ी कर लिया कि द्वन्द्व-युद्ध में नियम के अनुसार कुमार तो नकली तलवार से लड़ने आएगा, किन्तु वह विष में बुझी हुई असली तलवार लेकर जाए और अवसर पाते ही कुमार का वध कर दे।

द्वन्द्व का समय निश्चित हो गया और नगर के सहस्रों नाग-रिक इस युद्ध को देखने के लिए इकट्ठे हुए। ओफीलिया के भाई ने शुरू-शुरू में जान-बूझकर अपने वार खाली दिए और कुमार अपनी जीत होती देखकर मारे खुशी के उछल रहा था तो अपनी विषैली तलवार से कुमार पर उसने घातक वार

किया। कुमार अपनी तरफ से संभला और बहुत संभला, फिर भी तलवार की एक खुरचन उसके शरीर पर लग गई। विष ने अपना असर दिखाना आरम्भ किया और कुमार की देह आग की तरह जलने लगी। यह देखकर कुमार गुस्से से पागल हो उठा और उसने अपने विरोधी के हाथ से उसीकी तलवार लेकर उसकी छाती में घुसेड़ दी। यह देखकर रानी घबरा गई और उसने अपनी घबराहट मिटाने के लिए पास पड़े शर्बत के प्याले को मुंह से लगा लिया। वास्तव में यह प्याला क्लेदियस ने विशेष रूप से कुमार के लिए तैयार करवाया था और उसमें वही विष घोला गया था जिसकी दो बूंदें उसने महाराज हैमलेट के कान में टपकाई थीं। उसने सोचा था कि यदि दुर्भाग्यवश कुमार इस युद्ध से जीवित बच निकला तो उसे यह प्याला पिलाकर सदा के लिए अपने रास्ते के कांटे को निकाल फेंकूंगा। इसी अभिप्राय से उसने वह प्याला अपने पास रखा था और रानी को यह बात कहनी उसे याद न रही थी। प्याले को मुंह से लगाते ही रानी ने दो बार 'हाय विष, हाय विष' कहा और निर्जीव होकर वहीं लुढ़क गई। कुमार ने अपनी आंखों से पिता की अर्थी देखी थी, और अब अपनी आंखों से माता को भी तड़पते देखा। उसके अपने शरीर में भी विष फैल चुका था और उसे विश्वास हो गया था कि अब वह कुछ क्षणों का ही मेहमान है, फिर वह अपने कुल के हत्यारे को जीता क्यों छोड़े! वह बिजली के वेग से क्लेदियस पर झपटा और वही विषैली तलवार उसने उसकी भी छाती में चुभो दी। तड़पने से पहले ही क्लेदियस मरकर वहीं ढेर हो गया। उसके कुछ ही क्षणों के बाद कुमार ने भी प्राण छोड़ दिए, किन्तु तब उसके मन में इस बात का अरमान न था कि उसने अपने पिता के हत्यारे से बदला नहीं लिया! वह उसकी आंखों के सामने लहू से लथपथ पड़ा धरती को चूम रहा था। इस दृश्य से कुमार के मन को असीम शांति मिली और महाराज हैमलेट की भटकती आत्मा को भी।

4. वेनिस का व्यापारी

(The Merchant of Venice)

शाइलाक वेनिस का माना हुआ रईस था। आवश्यकता पड़ने पर लोगों को रुपया देना और उसपर ब्याज कमाना, यही उसका एकमात्र पेशा था। वह अपने फन का पक्का और अवसर का पूरा पारखी था। जैसा मुंह देखता, वैसी चपेट लगाता। ब्याज की जो दर एक बार मुंह से निकाल देता, उससे कौड़ी भी कम न करता। शाइलाक की इस मनमानी से वेनिस का बच्चा-बच्चा परिचित था और लोग उसकी मुंह पर भी निन्दा करने से न टलते थे। किन्तु इससे क्या ? आवश्यकता पड़ती तो वे ही लोग अपनी गरज को आते और ऊंचे से ऊंचा ब्याज देकर भी रुपया उधार ले जाते थे।

शाइलाक के प्रति वेनिसवालों की घृणा का एक और कारण भी था। वह यह कि शाइलाक यहूदी था और वहां की अधिकांश जनता ईसाई। इस विरोध की उसे रत्ती-भर भी चिन्ता न थी। वह डंके की चोट से कहता—जिसे गरज हो वह मेरे पास आए। मैं उसकी मदद करने को तैयार हूं। जिसे गरज न हो वह मेरे पास न आए। मैं किसीको बलाने किसीके घर नहीं जाता।

बात भी सच थी। मुसीबत पड़ने पर जब लोगों के चारों तरफ के रास्ते बन्द हो जाते थे, तब शाइलाक ही अपने खज़ाने की थैलियां खोलकर उनकी बिगड़ी बनाता था। विपदा टल जाए तो ऊंचे से ऊंचा सूद देना भी किसी को भारी नहीं लगता। इस नाते शाइलाक का वेनिस के लोगों पर बड़ा एहसान था।

उसी नगर में एक और व्यापारी रहता था, जिसका नाम था एंटोनियो। वेनिस में उसके अनेक मित्र थे और नगर-भर में उसकी साख थी। उसमें एक विशेषता यह भी थी कि वह जाति

का ईसाई था और सूदखोरी को घृणा की दृष्टि से देखता था। इसी बात पर प्रायः उसकी और शाइलाक की सरे बाज़ार टक्कर हो जाया करती थी। वह जब भी शाइलाक को देखता तो उसे 'सूदखोर', 'कंजूस', 'यहूदी कुत्ता' और 'लहूचूस' और इसी प्रकार के अन्य कठोर शब्द कहने से भी न चूकता था। वह लोगों को बिना सूद के रुपये दे देता और मुसीबत में सहायता किया करता था। शाइलाक यह सब देखता और लहू का घूंट पीकर रह जाता। वह मन ही मन एंटोनियो से इस व्यवहार का बदला लेने की सोचता।

एक बार एंटोनियो का एक घनिष्ठ मित्र बैसैनियो उससे मिलने के लिए आया। एंटोनिओ ने जी खोलकर उसका स्वागत किया और उसके आने का कारण पूछा।

बसैनियो ने कहा—मित्रवर! मेरी कहानी बहुत लम्बी है। उसे ध्यान से सुनो और यदि कुछ मदद कर सको तो करो!

एंटोनियो—ज़रूरत के समय यदि काम न आए तो मित्रों का लाभ ही क्या? मैं तुम्हारे एक इशारे पर अपने प्राणों तक को संकट में डालने को तैयार हूं।

बैसेनियो—तो सुनो! इस नगर से थोड़ी दूर पर एक हरा-भरा टापू है, जिसमें एक बड़ा मालदार सौदागर रहता था। उसके घर बचपन से मैं आया जाया करता था। कुछ बरस हुए वह सौदागर अपनी सारी सम्पत्ति अपनी इकलौती बेटी के नाम करके इस संसार से विदा ले चुका है। अब उस सारी सम्पत्ति की मालकिन वही युवती है। उसका नाम पोर्शिया है और रूप-सौंदर्य में वह दुनिया-भर में अद्वितीय है। बचपन के साथी होने के नाते हम दोनों एक-दूसरे से प्यार करते हैं। जितना मैं उसे चाहता हूं उतना ही पोर्शिया मुझे चाहती है। हम दोनों विवाह के पवित्र बन्धन में बंधकर सदा के लिए एक-दूसरे के हो जाना चाहते हैं; किन्तु···

एंटोनियो—किन्तु क्या! बताते क्यों नहीं? क्या विश्वास नहीं

है कि एंटोनियो तुम्हारे लिए अपने प्राण तक न्यौछावर करने से नहीं झिझकता ? यदि तुम मुझे अपना सच्चा मित्र समझते हो तो निःसंकोच अपने मन की बात कहो। तुम्हारे और पोर्शिया के विवाह में कौन-सी रुकावट है ?

बैसैनियो—केवल धन की। मैं तुम्हें बता चुका हूं कि पोर्शिया कितने धन की मालकिन है। उसकी तुलना में मैं निरा कंगाल और फटेहाल हूं। ऐसी अवस्था में पोर्शिया को अपना बनाने का मैं कभी साहस न करता यदि वह हृदय से मुझे चाहती न होती। अब न उसे छोड़ते बनता है और न अपनाते। यदि धन से तुम मेरी कुछ सहायता कर सको तो मैं जीवनभर तुम्हारा उपकार मानूंगा।

एंटोनियो—बस इतनी-सी बात के लिए तुम इतने व्याकुल हो रहे हो ! कितने कुछ धन से तुम्हारा काम चल सकता है ?

बैसैनियो—कम से कम तीन हज़ार दुकैत तो हों ही।

'तीन हज़ार' का नाम सुनकर एंटोनियो सोच में पड़ गया। वास्तव में उस समय उसके पास पांच सौ दुकैत भी नकद मौजूद न थे। किन्तु मित्र का काम तो हर सूरत में बनाना ही था। वह सीधा शाइलाक के पास धन उधार लेने के लिए चला। एंटोनियो को देखकर शाइलाक को उसके आने का कारण पहचानते देर न लगी। वह ऐसे ही किसी अवसर की तलाश में था। उसने मन ही मन प्रसन्न होकर कहा—यदि आज मैं एंटोनियो को अपने फंदे में फंसा सकूं तो अगले-पिछले सारे बैर का पूरा बदला लेकर छोड़ूंगा। उसकी आशा के अनुरूप जब एंटोनियो ने तीन हज़ार दुकैत उधार मांगे तो शाइलाक ने कहा—एंटोनियो ! चाहे तुम बाज़ार में सदा मेरा विरोध करते रहे हो, तुमने मुझे कुत्ता और लहूचूस तक कहा है, फिर भी इस समय मैं तुम्हारी ज़रूरत को देखकर एक शर्त पर बिना ब्याज के रुपये देने को तैयार हूं।

एंटोनियो—किस शर्त पर ?

शाइलाक—इस शर्त पर कि यदि तुम तीन महीने के अन्दर ही अन्दर ऋण के रुपये मुझे लौटा न दो, तो मैं तुम्हारे शरीर के जिस भाग से चाहूं, डेढ़ सेर मांस काट लूंगा।

एंटोनियो को पूरा विश्वास था कि माल से भरे हुए उसके जहाज़ कुछ ही दिनों में विदेशों से आ जाएंगे और तीन महीने से पहले ही वह शाइलाक का ऋण लौटा देगा। इसलिए उसने बड़ी खुशी से इस शर्त को मान लिया और इस विषय का एक प्रतिज्ञा-पत्र लिखकर उसपर हस्ताक्षर भी कर दिए। शाइलाक ने गिनकर तीन हज़ार दुकैत एंटोनियो के हवाले किए। एंटोनियो ने उन्हें बैसैनियो के हाथ में देते हुए कहा—'लो मित्र, इस धन की सहायता से तुम अपनी बारात सजधज से पोर्शिया के घर ले जाओ और ब्याह करके लौटो तो मेरी भी शुभ कामनाएं अपनी प्रिय पत्नी तक पहुंचा देना।'

बैसैनियो ने इस कड़ी शर्त पर रुपये उधार लेने से एंटोनियो को बार-बार रोका था, किन्तु एंटोनियो ने हर बार उसे विश्वास दिलाया कि वह तीन महीने से पहले ही ऋण का धन अवश्य लौटा देगा और शाइलाक उसका बाल भी बांका न कर सकेगा।

फिर क्या था? बैसैनियो अपनी बारात लेकर बड़ी सजधज से उस टापू में पहुंचा, जिसमें बैठी पोर्शिया उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। हृदय से तो वह पहले ही बैसैनियो की बन चुकी थी। केवल एक रीति का निभाना शेष था। पोर्शिया ने हीरे से जड़ी हुई एक अंगूठी बैसैनियो के हाथ में पहनाते हुए कहा—आज से मैं और मेरा सर्वस्व तुम्हारा हुआ।

बैसैनियो—और मैं तुम्हारा।

पोर्शिया—आज मेरे मन का स्वप्न पूरा हुआ।

बैसैनियो—और मेरे जीवन की साधना सफल हुई।

अभी वे यह प्रेमालाप कर ही रहे थे कि एक दूत भागता हुआ उनके पास आया। उसने बैसैनियो के हाथ में एक पत्र

दिया, उसमें लिखा था :

प्रिय मित्र बैसैनियो !

क्षमा करना ! मैं तुम्हारे रंग में भंग डाल रहा हूं। पोर्शिया से भी मेरी ओर से क्षमा मांग लेना। संक्षेप में वृत्तांत यह है कि विदेशों से आने वाले अपने माल के जहाज़ों के बलबूते पर मैंने शाइलाक से ऋण लिया था। वे समुद्र में कहीं लापता हो गए हैं और उनके लौट आने की कोई सम्भावना नहीं। इसी वजह से मैं तीन महीने की अवधि में शाइलाक का रुपया उसे समय पर नहीं लौटा सका, जिसका परिणाम तुम जानते ही हो ! प्यारे मित्र, इस संसार से विदा होते समय मेरी अन्तिम साध यही है, कि एक बार तुम्हारे दर्शन कर सकूं। मैं अन्तिम सांस रहते तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगा। यदि तुम्हारे प्रम में बाधा न हो तो एक बार अवश्य आना !

तुम्हारा बिछुड़ता साथी—
एंटोनियो

यह पढ़ते ही बैसैनियो की सारी प्रसन्नता शोक में बदल गई। पत्र छूटकर उसके हाथ से गिर पड़ा। पोर्शिया ने उसे कांपते हाथों से उठाकर पढ़ा तो वह उसका कुछ भी अभिप्राय समझ न सकी। उसने धड़कते दिल से बैसैनियो से पूछा—यह एंटोनियो कौन है ?

बैसैनियो— वह मेरा प्राण से भी प्यारा मित्र है और मेरे ही कारण आज उसके प्राण संकट में पड़ गए हैं। प्यारी पोर्शिया ! हमें आज, अभी और इसी क्षण एंटोनियो की रक्षा के लिए वेनिस जाना होगा।

यह कहकर बैसैनियो ने जब अपने प्रति एंटोनियो के असीम प्रेम की कहानी आदि से लेकर अन्त तक पोर्शिया को सुनाई तो उसकी आखों में आंसू छलछला आए। उसने भर्राई आवाज़ में कहा— तो क्या ऐसे सच्चे दोस्त भी इस दुनिया में मौजूद हैं ! एंटोनियो सचमुच मनुष्य नहीं, वह तो देवता है ! ऐसे मित्र

के प्राण तो हर सूरत में बचाने ही होंगे। अब तुम एक क्षण की भी देर किए बिना वेनिस के लिए चल पड़ो और मैं यहीं बैठे-बैठे तुम दोनों के लिए भगवान से प्रार्थना करती हूं।

पोर्शिया बड़ी सूझ वाली और साहसी युवती थी। बैसैनियो के जाने के बाद उसने झटपट पुरुष का वेश पहना और अपनी एक दासी को नौकर का वेश पहनाकर दोनों तेज़ से तेज़ घोड़ों पर चढ़कर वेनिस के लिए चल पड़ीं।

उधर वेनिस की कचहरी में एंटोनियो और शाइलाक दोनों उपस्थित थे। हज़ारों की संख्या में लोग इस अनोखे मुकदमे का निर्णय सुनने के लिए इकट्ठे थे। शाइलाक के हाथों में एंटोनियो के हाथों से लिखा हुआ ऋण का प्रतिज्ञा-पत्र और एक तेज़ चाकू था और वह भूखी आंखों से एंटोनियो की ओर घूर-घूरकर देख रहा था। बेचारा एंटोनियो अपराधियों की तरह सिर झुकाए शाइलाक के सामने खड़ा था और उसकी बगल में आंसू बहाता हुआ बैसैनियो! केवल जज के आने की देर थी। इसी समय कचहरी का खास दरवाज़ा खुला और दो सुन्दर नवयुवकों ने कचहरी में प्रवेश किया। आगे के युवक ने एक पत्र निकालकर अधिकारियों के सामने पेश किया, जिसमें लिखा था :

मान्य अधिकारीगण !

मुझे खेद है कि अस्वस्थ होने के कारण मैं स्वयं कचहरी में न्याय करने के लिए आज उपस्थित नहीं हो सकता। मैं अपने स्थान पर एक होनहार युवक को भेजता हूं। उसकी आयु भले ही कम है, किन्तु बुद्धि और निपुणता में वह मुझसे किसी प्रकार भी कम नहीं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह शाइलाक और एंटोनियो की कठिन उलझन भी बड़ी निपुणता से निपटायेगा और मैं आशा करता हूं कि आप लोग उसे स्वीकार करेंगे।

हस्ताक्षर—सेशन जज

यह जज पुरुष-वेश में पोर्शिया के अतिरिक्त कोई और न

था। कचहरी में प्रवेश करते ही पोर्शिया ने मुकदमे के सारे विवरण को एक ही सांस में पढ़ डाला और उसने शाइलाक की ओर घूमकर कहा—शाइलाक ! मैं समझता हूं कि एंटोनियो तीन महीने के निश्चित समय में ऋण की राशि तुम्हें नहीं लौटा सका, इसलिए कानून के अनुसार तो तुम्हें प्रतिज्ञा-पत्र पर लिखी बात पर अम्ल करने का पूरा अधिकार है।

जज को अपने पक्ष में निर्णय देते देखकर शाइलाक मारे खुशी के पागल हो उठा और कहने लगा– ओ धर्मावतार ! सचमुच तुम मनुष्य नहीं देवता हो। मैं समझता हूं कि तुम्हारे रूप में स्वयं धर्मराज अवतार लेकर पृथ्वी पर उतर आए हैं। मुझे आपका निर्णय स्वीकार है।

पोर्शिया ने उसी स्वर में कहा – सबको विदित है कि एंटोनियो शर्त हार चुका है। इसलिए कानून के अनुसार मेरा यह निर्णय है कि अपने ऋण के बदले में शाइलाक एंटोनियो के शरीर के जिस हिस्से से चाहे डेढ़ सेर मांस काट सकता है।

अब तो शाइलाक बल्लियों उछलने लगा।

पोर्शिया ने अपना निर्णय जारी रखते हुए कहा—किन्तु शाइलाक, कानून से भी बढ़कर दया होती है। यदि तुम मनुष्य हो और तुम्हारे हृदय में दया है तो मैं चाहता हूं कि तुम एंटोनियो को प्राणदान दो और उसके बदले में ऋण में दी हुई राशि को वापस लेना स्वीकार कर लो। तुम चाहो तो वह राशि दुगनी, तिगुनी या चौगुनी करके भी तुम्हें दी जा सकती है।

शाइलाक ने अकड़कर कहा – मुझे अपनी धन-राशि वापस नहीं चाहिए ! मैं तो न्याय चाहता हूं, एंटोनियो द्वारा किए गए अपने सब अपमानों का बदला चाहता हूं !

पोर्शिया तो मेरी आज्ञा से तुम एंटोनियो के शरीर के किसी भी हिस्से से डेढ़ सेर मास काट सकते हो !

यह निर्णय सुनकर जनता हैरान रह गई। लोगों का दिल

एंटोनियो के लिए तरसने लगा। बैसैनियो की आंखों में आंसू छलछला आए और उसने एंटोनियो की ओर देखकर कहा— मित्र, मेरे कारण आज तुम्हें यह दिन देखना पड़ रहा है !

एंटोनियों ने कहा बैसैनियो ! मुझे हर्ष है कि मैं अपने मित्र के लिए प्राण त्याग रहा हूं। आओ अन्तिम बार तुम मेरे गले मिल लो।

दोनो मित्रों को गले मिलते देखकर पत्थर का दिल भी रो पड़ता, किन्तु शाइलाक अब भी अपना चाक़ू तेज़ किए जा रहा था। बैसैनियो ने एंटोनियो को कई बार गले लगाया और जब उसके आंसुओं ने उसकी आखों को अन्धा बना दिया तो वह वहीं सिर पकड़कर बैठ गया। समय पाकर शाइलाक चाक़ू लेकर एंटोनियो की ओर बढ़ा। वह एंटोनियो का मांस काटना चाहता ही था कि पोर्शिया ने रोककर कहा—शाइलाक ! खबरदार ! यदि एंटोनियो के लहू की एक बूंद भी गिरी तो तुम्हें फांसी पर लटका दिया जाएगा। क्योंकि प्रतिज्ञा-पत्र में डेढ़ सेर मांस काटने का तो स्पष्ट उल्लेख है, किन्तु लहू का नहीं।

इस अनोखी दलील को सुनकर शाइलाक की अक्ल के तोते उड़ गए और वह हक्का-बक्का होकर पोर्शिया को दखने लगा।

पोर्शिया बोली—देखते क्या हो ! एंटोनियो के शरीर से शर्त के अनुसार मांस काटते क्यों नहीं ?

शाइलाक के पास इसका कोई जवाब न था। उसने गिड़-गिड़ाकर कहा – अब मुझे मांस नहीं चाहिए। मेरा असली धन ही मुझे लौटा दिया जाए।

पोर्शिया ने कहा—न्यायालय का निर्णय टल नहीं सकता। यदि तुम यह निर्णय मानने को तैयार नहीं तो मैं आज्ञा देता हूं कि निर्णय न मानने और एंटोनियो की हत्या का जाल रचने के अपराध में तुम्हारी सारी सम्पत्ति ज़ब्त कर ली जाए।

शाइलाक—मैं लुट जाऊंगा मुझ पर दया करो !

पोर्शिया—जो दया करना नहीं जानता उसे दया की प्रार्थना

करने का भी कोई अधिकार नहीं । क्यों एंटोनियो ! तुम्हारा क्या विचार है ?

एंटोनियो ने शाइलाक के सारे अपराध भूलकर उसे क्षमा कर दिया और जज से प्रार्थना की कि शाइलाक की एक इकलौती बेटी है, जिसे शाइलाक ने बिना किसी अपराध के अपने घर से बाहर निकाल दिया । इसकी सम्पत्ति इस शर्त पर लौटा दी जाए कि यह उसे अपनी बेटी के हाथ में देगा ।

शाइलाक ने सिर हिलाकर इस प्रस्ताव को स्वीकार किया और जज ने उसे कचहरी से मुक्त कर दिया ।

अब भी बैसैनियो यह न पहचान सका कि जज के वेश में उसी की पत्नी पोर्शिया है । उसने हाथ बांधकर उसकी न्याय-निपुणता की बड़ी प्रशंसा की और बदले में तीस हज़ार दुकैत स्वीकार करने की प्रार्थना की । पोर्शिया ने रुपये न लेकर बैसैनियो को अपने हाथ में पहनी हुई अंगूठी देने को कहा । अंगूठी को छोड़कर यदि जज उससे उसके प्राण भी मांगता तो बैसैनियो देने से इन्कार न करता किन्तु पोर्शिया की निशानी वह किसीको देना नहीं चाहता था । उधर पोर्शिया भी अंगूठी लेने पर तुली हुई थी । आखिर बैसैनियो ने अपने हाथ की अंगूठी उतारकर पोर्शिया को दे दी ।

कचहरी से निकलकर पोर्शिया अपने नौकर को साथ लेकर शीघ्र से शीघ्र अपने घर जा पहुंची और पुरुष-वेश उतारकर बैसैनियो के आने की प्रतीक्षा करने लगी । थोड़ी देर में बैसैनियो और एंटोनियो भी वहां पहुंच गए । पोर्शिया ने पहली बात जो बैसैनियो से पूछी, वह यह कि निशानी—अंगूठी कहां है ? उत्तर में एंटोनियो को हैरान देखकर पोर्शिया ने अपनी जेब से निकालकर अंगूठी फिर उसकी अंगुली में पहना दी, अपनी सारी कहानी कह सुनाई और बताया कि पुरुष-वेश धारण करके कचहरी में जो दो युवक न्याय के लिए गए थे, उनमें एक स्वयं पोर्शिया और दूसरी उनकी नौकरानी थी ।

इसी समय एंटोनियो का एक कर्मचारी भागता हुआ आया और बोला—आपके खोए हुए सब जहाज़ सुरक्षित लौट आए हैं।

इस प्रकार अनेक शुभ समाचारों के बीच एक ओर दो हृदय एक सूत्र में बंध गए और दो बिछुड़े मित्र फिर से मिल गए।

5. भूल-चूक माफ

(The Comdey of Errors)

प्राचीन काल में साइरेकस और एफेसस नाम के दो पड़ोसी देश थे। किसी कारण से वहां के लोगों में परस्पर गहरी शत्रुता थी। यदि साइरेकस का कोई नागरिक एफेसस की सीमा में घूमता हुआ देख लिया जाता तो इस अपराध के लिए उसे एक हज़ार रुपये का जुर्माना देना पड़ता और यदि वह न दे सकता तो उसे मौत के घाट उतार दिया जाता था।

एक बार की बात है, साइरेकस का एजियन नामक एक सौदागर एफेसस में घूमता हुआ पकड़ लिया गया। जुर्माना देने को उसके पास एक कौड़ी भी न थी। अतः उसे राजा के सामने उपस्थित किया गया। राजा ने उसे संबोधित करके कहा :

ओ परदेशी! हमारे देश के नियम के अनुसार अब तू मृत्यु-दंड का भागी है, किन्तु तुझे यह दंड देने से पहले मैं तेरी राम-कहानी सुनना चाहता हूं।

एजियन ने एक लम्बी सांस भरकर कहा—मुझ दुखिया की कहानी सुनकर आपको क्या मिलेगा महाराज! उल्टा इससे मेरे हृदय का दुःख ताजा हो जाएगा। इसलिए मेरी आपसे प्रार्थना है कि मुझे शीघ्र से शीघ्र मृत्यु-दंड दिया जाए।

इससे राजा की उत्सुकता और बढ़ी और उसने अपनी आप-बीती सुनाने का एजियन से बड़ा आग्रह किया। सब राज-दरबारी भी उसकी कहानी सुनने के लिए कान लगाए बैठे थे। एजियन ने आंसुओं से भीगी पलकें उठाईं और यूं कहना आरम्भ किया :

"मैं साइरेकस का एक अभागा सौदागर हूं और मेरा नाम एजियन है। पिता की मृत्यु के उपरान्त मुझे विदेश-यात्रा की धुन सवार हुई और मैं बहुत-सा माल जहाज़ में भरकर अपनी

पत्नी सहित अपिडैमनम नामक एक नगर में जा उतरा। वहां मेरा व्यापार इतना चमका कि मैंने स्थायी रूप से वहीं रहने का निश्चय कर लिया। कुछ समय बाद वहीं मेरे दो जुड़वां पुत्र हुए। रंग-रूप, डील-डौल और चाल-ढाल में वे एक-दूसरे से इतना मिलते थे कि उनमें भेद करना कठिन हो जाता था। उन दिनों हमारे पड़ोस में एक निर्धन भटियारिन रहती थी। जिस दिन, जिस समय और जिस क्षण मेरे पुत्र हुए उसी दिन, और उसी क्षण उस भटियारिन के भी दो जुड़वां पुत्र उत्पन्न हुए। वे भी शक्ल-सूरत में बिलकुल एक समान थे। भटियारिन इतनी निर्धन थी कि वह दो बच्चों का पालन-पोषण न कर सकती थी। अतः उसने उन बच्चों का भार भी मुझे अपने पर ले लेने को कहा। पत्नी की सलाह से मैंने उन्हें भी गोद ले लिया और अपने पुत्रों के साथ उनका भी पालन-पोषण करने लगा। मैंने अपने दोनों पुत्रों के एक समान होने के कारण दोनों का एक ही नाम रखा—एंटिफोलस और भटियारिन के पुत्रों का भी एक ही नाम रखा—ड्रोमियो।

"बाल-बच्चों के साथ मेरे दिन बड़े सुख से बीत रहे थे कि एक बार मुझे कार्यवश कुछ दिनों के लिए एक दूर के टापू में जाना पड़ा। अपने चारों पुत्रों से मुझे इतना स्नेह था कि एक क्षण के लिए भी मैं उन्हें अपनी आंखों से दूर न कर सकता था, इस-लिए मैंने उन्हें तथा अपनी पत्नी को भी साथ ले लिया। अभी हमारा जहाज़ तट से कुछ ही दूर गया होगा कि समुद्र में बहुत ज़ोर का तूफान उठा। मल्लाह लोग अपने प्राण बचाकर छोटी नावों में कूद पड़े और जहाज़ पर हम अकेले रह गए। तूफान के थपेड़ों से जहाज़ समुद्र में डूबना ही चाहता था कि मैंने फुर्ती से जहाज़ के चार तख्ते खींचे और उन्हें जोड़-तोड़कर उनको दो नौकाएं-सी बनाईं। एक पर मैं स्वयं बैठ गया और मैंने अपने साथ छोटे एंटिफोलस और छोटे ड्रोमियो को बिठा लिया। दूसरी नाव पर मेरी पत्नी, बड़ा एंटिफोलस और बड़ा ड्रोमियो सवार

हुए। मैंने उन्हें साहस करके नाव खेने को कहा। कुछ देर तक दोनों नावें साथ-साथ रहीं, किन्तु शीघ्र ही लहरों के कारण हम एक-दूसरे से जुदा हो गए। जब मैंने अन्तिम बार अपनी पत्नी की नाव की तरफ देखा तो कुछ मल्लाह उन्हें पकड़कर अपनी नाव पर बिठा रहे थे। यह देखकर मैंने सन्तोष की सांस ली और अपनी नाव को किनारे लगाने का कोई उपाय सोचने लगा। संयोगवश उधर से एक जहाज़ आता हुआ दिखाई दिया, जिसके कप्तान ने मुझे तथा मेरे दोनों पुत्रों को अपने जहाज़ पर बिठा लिया। बातों ही बातों में उससे मेरा पुराना परिचय निकल आया और उसने हमें बड़े आराम से किनारे तक पहुंचा दिया। उस दिन से लेकर आज पूरे बीस बरस बीत चुके हैं, किन्तु पत्नी और पुत्रों का मुझे कुछ पता नहीं चल सका।

"खैर, मैंने उन्हें भुला देने का यत्न किया और अपने साथ के दोनों बालकों की सेवा में लग गया। जब छोटा एंटिफोलस कुछ सयाना हुआ तो वो वह अपनी माता के विषय में बार-बार मुझसे पूछा करता था। उसकी बात सुनकर समुद्र की दुर्घटना का सारा दृश्य मेरी आंखों के सामने घूम जाता। मैंने सिसकते हुए वह सारी घटना छोटे एंटिफोलस को कह सुनाई। एंटिफो-लस उसी क्षण से अपनी माता और बड़े भाई को खोज निकालने की चिन्ता में रहने लगा। आखिर एक दिन उसने बड़ा हठ किया और अपने साथी छोटे ड्रोमियो को लेकर घर से निकल पड़ा। मैं उसे क्षण-भर भी अपने से अलग नहीं करना चाहता था, किन्तु न जाने उस दिन क्यों मैं उसे रोकने का साहस न कर सका। मूल के लोभ में मैंने ब्याज को भी गंवा दिया। उसे गए भी आज पूरे आठ बरस बीत चुके हैं, किन्तु अब तक वह भी लौट-कर नहीं आया। बाल-बच्चों के बिना घर मुझे भूतों का डेरा लगने लगा। उनकी खोज में मैं निकल पड़ा और देश-देशान्तर घूमते हुए आज आपकी नगरी में पहुंचा था कि आपके सिपाहियों ने मुझे पकड़ लिया। बस महाराज! यही मेरी जीवन कहानी

है !"

यह करुणा-भरी कहानी सुनकर राजा का हृदय भी पिघल गया और उसने एजियन को जुर्माने का रुपया जुटाने की एक दिन की और अवधि दी। यह अवधि पाकर एजियन तनिक भी प्रसन्न न हुआ, क्योंकि उस अनजाने देश में उसका जानने वाला कौन था ! और यदि कोई जाननेवाला होता भी तो क्या ! अब उसके मन में जीने की इच्छा ही शेष न रह गई थी। उसने सोचा, चलो अन्तिम बार अपने पुत्रों की तलाश कर देखूं ! यह सोचकर वह बाज़ार की ओर चल पड़ा।

उधर मल्लाहों ने एजियन के दोनों पुत्रों को लाकर एफेसस के एक रईस के हाथ बेच दिया। रईस ने उन्हें होनहार देखकर पढ़ाया-लिखाया और सेना में एक ऊंचे पद पर नियुक्त करवा दिया। तब से बड़ा एंटिफोलस और बड़ा ड्रोमियो उसी नगरी में रहते थे। एंटिफोलस ने वहीं की एक कुलीन कन्या से विवाह भी कर लिया था और वह वहां बड़े आनन्द से जीवन बिताता था। अपने पिता और दूसरे भाई से बिछुड़े उसे एक युग बीत चुका था, अतः वह उन्हें बिलकुल भूल चुका था।

संयोगवश जिस दिन एजियन उस नगरी में पहुंचा, उसी दिन छोटा एंटिफोलस भी अपने साथी ड्रोमियो के साथ उसी नगरी के बंदरगाह पर उतरा। नगर में प्रवेश करते ही उसने सुना कि साइरेकस का एक सौदागर आज इस नगर में प्रवेश करने के अपराध में पकड़ा गया है और मृत्युदंड दिया जाने वाला है। उसे स्वप्न में भी यह विचार न आया कि साइरेकस का वह अभागा सौदागर उसीका बिछुड़ा हुआ पिता है। अस्तु, जहाज़ से उतरकर वह सीधा एक सराय में गया और वहां एक कमरा किराए पर लेकर ठहर गया। सराय के मालिक के पूछने पर उसने अपने आपको एफेसियस का ही नागरिक बताया। उसने अपने साथी छोटे ड्रोमियो को बाज़ार से कुछ आवश्यक वस्तुएं खरीदने के लिए भेज दिया और स्वयं इस नई नगरी का परि-

चय पाने के लिए सराय के सामने टहलने लगा। उसे यह देख-कर बड़ा क्रोध आया कि जाने के दो क्षण बाद ही ड्रोमियो लौट आया और आवश्यक वस्तुओं में से एक भी खरीदकर न लाया। छोटा एंटिफोलस उसे डांटना ही चाहता था कि ड्रोमियो ने बड़ी सरलता से कहा—कप्तान साहब ! चलिए आपकी पत्नी आपको भोजन के लिए बुला रही हैं।

मुसाफिर एंटिफोलस ने हैरान होकर कहा—ड्रोमियो ! कहीं तुम्हारा दिमाग तो नहीं फिर गया ! क्या यह हंसी मज़ाक करने का समय है ?

ड्रोमियो—मैं आपसे मज़ाक नहीं कर रहा ! घर में भोजन तैयार है और आपकी पत्नी आपको याद कर रही है।

मुसाफिर एंटिफोलस ने चिढ़कर कहा—जाओ-जाओ ! मेरी पत्नी-वत्नी कोई नहीं। जो काम तुमसे कहा है, वह करो।

वास्तव में यह मुसाफिर ड्रोमियो नहीं था, जिसे छोटे मुसाफिर एंटिफोलस ने वस्तुएं लेने बाज़ार भेजा था, यह बड़ा ड्रोमियो था और कप्तान एंटिफोलस को ढूंढ़ते-ढूंढ़ते वहां आ पहुंचा था। शक्ल तो दोनों की एक समान थी ही, इसलिए बड़े ड्रोमियो ने उसे ही कप्तान एंटिफोलस समझा। उधर दोनों ड्रोमियो की आकृति भी मिलती-जुलती थी, इसलिए मुसाफिर एंटिफोलस ने उसे अपना ही साथी समझा और बाज़ार से वस्तुएं न लाने तथा 'पत्नी बुला रही है, पत्नी बुला रही है' कहकर चिढ़ाने के लिए खूब डांटा।

बड़े ड्रोमियो की समझ में यह बात बिलकुल न आई। उसने समझा कि कप्तान साहब शायद घर से लड़कर आए हैं, इस-लिए बार-बार घर चलने के लिए उनसे प्रार्थना करने लगा। मुसाफिर एंटिफोलस यह सुनकर बड़ा चिल्लाया और यह कह-कर बड़े ड्रोमियो के साथ चला—'पत्नी-पत्नी' की रट लगाकर कान खा गया। चल ! पहले तेरे साथ चलकर वहीं देखता हूं कि किसे मेरी पत्नी बनाए बैठा है ?

यह कहकर वह बड़े ड्रोमियो के साथ चला। भीड़-भाड़ में बड़े ड्रोमियो का तो कहीं साथ छूट गया और उसे अपना साथी मुसाफिर ड्रोमियो सामने से आते हुए दीख पड़ा। वह उसीको बड़ा ड्रोमियो समझकर बोला—भीड़ में मुझे छोड़कर कहां चला गया था तू !

मुसाफिर ड्रोमियो ने कहा—मैं भला आपको भीड़ में कहां छोड़ आया हूं ? मैं तो आपको सराय में छोड़कर आपके लिए समान खरीदने बाज़ार आया हूं। यह सुनकर मुसाफिर एंटि-फोलस के गुस्से का ठिकाना न रहा। वह बोला—इस तरह का मज़ाक करने की अक्ल आज तुम्हें किसने दी ! सराय से तो तुम मुझे यह कहकर साथ लाए हो कि तुम्हारी पत्नी बुला रही है और अब इतनी जल्दी बदल गए !

इधर बाज़ार में ये दोनों एक-दूसरे से उलझ रहे थे और उधर जब कप्तान एंटिफोलस की पत्नी ने देखा कि न बड़ा ड्रोमियो लौटा है और न कप्तान एंटिफोलस तो वह स्वयं उनकी खोज में बाहर निकली। बाज़ार में आते ही उसकी दृष्टि मुसाफिर ड्रोमियो और मुसाफिर एंटिफोलस पर पड़ी। मुसाफिर एंटिफोलस को ही कप्तान समझकर पत्नी बोली—पतिदेव ! क्या रूठ गए हो मुझसे जो अब तक घर नहीं लौटे। मुसाफिर एंटिफोलस को यह बात बहुत बुरी लगी कि एक स्त्री, जिसे वह पहचानता तक नहीं, उसे इस प्रकार की बात कहे। उसने झल्लाकर कहा—मेरी पत्नी-वत्नी कोई नहीं, तुम कौन डायन की तरह मेरे पीछे पड़ गई हो।

पत्नी ने कहा—चाहे आप मुझे चुड़ैल कहें या डायन, पर मेरे तो आप ही पति हैं। मैं आपको साथ लिए बिना घर न जाऊंगी।

परदेश में यह सब मामला मुसाफिर एंटिफोलस की समझ में बिलकुल न आया। जो होगा देखा जाएगा, यह सोचकर वह चुपचाप उस पत्नी के साथ-साथ चल पड़ा और उसके पीछे-

पीछे मुसाफिर ड्रोमियो भी। पत्नी ने घर पहुंच कर एंटिफोलस को बड़े आग्रह से भोजन खिलाया और ड्रोमियो को कहा कि जाओ नौकरानी से मांगकर रोटी खा लो। वह नौकरानी के पास गया तो वह उसे 'पति'-'पति' कहकर पुकारने लगी। उस बेचारी को क्या पता कि यह उसका पति ड्रोमियो नहीं, अपितु मुसाफिर ड्रोमियो है। उधर मुसाफिर ड्रोमियो ने भी समझा कि मैं अजब आफत में आ फंसा और कोई उपाय न देखकर वह नौकरानी के हाथ से रोटी खाने बैठ गया।

इतने में बाहर से कप्तान एंटिफोलस और बड़ा ड्रोमियो दोनों अपने घर भोजन करने के लिए लौट आए। वे अपना नाम ले-लेकर बार-बार दरवाज़ा खटखटाते कि दरवाज़ा खोलो, किन्तु भीतर से यही उत्तर मिलता—यह धोखा किसी और को दो ! हमारे पति तो हमारे घर बैठे हैं।

आखिर हारकर कप्तान ने यही समझा कि आज श्रीमती जी बहुत नाराज़ हैं। चलो, उन्हें खुश करने के लिए तब तक बाज़ार से कोई कीमती उपहार ही ले आते हैं। यह सोचकर कप्तान और उसका साथी ड्रोमियो दोनों बाज़ार की ओर चले गए।

इधर मुसाफिर एंटिफोलस और उसका साथी ड्रोमियो जब भोजन कर चुके तो वे किसी प्रकार इन बनावटी पत्नियों की आंख बचाकर घर से भाग खड़े हुए। अभी मुसाफिर एंटिफोलस कुछ कदम ही आगे बढ़ा था कि एक सुनार ने सोने का एक जड़ाऊ हार उसके हाथ में देते हुए कहा—लो कप्तान साहब ! यह आपका हार तैयार है। घंटे दो घंटे तक इसके दाम भिजवा देना। इतना कहकर सुनार आगे बढ़ गया। मुसाफिर एंटिफोलस हैरान था कि मैं तो इस सुनार को जानता नहीं और न मैंने इसे यह हार बनाने को कहा है, फिर यह मुझ अजनबी को हार देकर इतनी जल्दी चला कहां गया ? कहीं यह कोई ठग तो नहीं और चकमा देकर कहीं यह मुझे पकड़वाना

तो नहीं चाहता ? अभी वह यह सोच ही रहा था कि एक बुढ़िया आई और सलाम करके बोली—कप्तान साहब ! भगवान तुम्हें लम्बी आयु दे। पिछले साल तुमने मेरे बेटे को जेल जाने से छुड़वाया था। मैं आपके इस एहसान को जीवन-भर न भूलूंगी !

अभी वह बुढ़िया गई भी न थी कि एक और नौजवान उधर से गुज़रा और मुसाफिर एंटिफोलस को देखकर इस तपाक से मिला कि मानो वह उसे बहुत देर से जानता हो। वास्तव में कप्तान एंटिफोलस इस नगर में पन्द्रह-बीस बरस से रह रहा था और विरला ही कोई ऐसा पुरुष होगा जो उसे न जानता हो। दोनों भाइयों की आकृति बिलकुल एक जैसी होने के कारण सब लोग मुसाफिर को कप्तान एंटिफोलस ही समझ रहे थे। इसी भूल से एक आया, तो उसे अपने लड़के के ब्याह का निमंत्रण दे गया। दूसरा आया, तो रुपयों की थैली देते हुए बोला—अच्छा हुआ आप रास्ते में ही मिल गए। परसों जो रुपये मैं आपसे उधार ले गया गया था, वे लौटाने मैं आपके घर ही जा रहा था। अन्त में एक दर्जी आया और उसे आदर से दुकान पर विठाकर उसके कपड़ों का नाप लेने लगा और क्षमा मांगने लगा कि आपका पुराना नाप लड़के की लापरवाही से कहीं खो गया है। बेचारा मुसाफिर एंटिफोलस हैरान था कि यह सब झमेला क्या है ! कहीं मैं किसी जादू की नगरी में तो नहीं पहुंच गया ? अभी वह यह सोच ही रहा था कि एक स्त्री आई और उसे बांह से पकड़कर बोली—लाओ भैया, मेरा सोने का हार, जो तुमने राखी वाले दिन मुझे देने की प्रतिज्ञा की थी।

मुसाफिर एंटिफोलस चीखकर बोला—जाओ-जाओ यहां से ! कल ही तो मैं इस नगरी में आया हूं ! एक रात में ही कहां तुम मेरी बहिन बन गईं, कहां राखी का त्योहार गुज़र गया और कहां मैंने तुम्हें सोने का हार देने का वायदा कर

दिया ? तुम सब लोग मिलकर कहीं मुझे पागल तो नहीं बनाना चाहते !

यह कहकर मुसाफिर एंटिफोलस बड़बड़ाता हुआ इतने ज़ोर से भागा कि उस स्त्री को भ्रम हुआ कि वह पागल हो गया है, इसीलिए ऐसी ऊटपटांग बाते कर रहा है और मुझे, अपनी बहिन तक को नहीं पहचानता। वह स्त्री भागती हुई कप्तान एंटिफोलस के घर पहुंची और उसकी स्त्री को जाकर बोली—भाभी ! भैया तो पागलों की तरह बाज़ार में घूम रहे हैं। तुम उन्हें संभालती क्यों नहीं ? कप्तान की पत्नी बौखलाकर बोली—अभी तो वे यहां बैठे भोजन कर रहे थे ! कहां चले गए ! मुझे उनके पागल होने का तभी शक हो गया था, जब वे बहकी-बहकी बातें कर रहे थे और मुझे कहते थे कि तू मेरी पत्नी नहीं, मैंने किसी से ब्याह ही नहीं किया और इस नगर में कल ही पहली बार आया हूं ! हाय बहिन, मैं तो लुट गई। जल्दी बता, तूने उन्हें कहां देखा है ? चिल्लाती हुई कप्तान की पत्नी अपने पति को ढूंढ़ने के लिए बाज़ार की ओर भागी।

उधर कप्तान जब अपने घर के दरवाज़े बन्द देखकर अपनी पत्नी के लिए कोई उपहार लेने सुनार की दूकान पर पहुंचा, तो सुनार बोला—कप्तान साहब ! पहले पिछला उधार तो चुका दो !

कप्तान हैरान होकर बोला—पिछला उधार कैसा ! तुमने मुझे कौन-सी चीज़ उधार दी है ?

सुनार—आज सुबह ही तो आपको सोने का जड़ाऊ हार देकर आया हूं न !

कप्तान बोला—झूठ, बिलकुल झूठ ! न तुम सुबह मुझे मिले हो और न तुमने मुझे हार दिया है।

इस प्रकार वे दोनों झगड़ते हुए पुलिस थाने पर पहुंचे। थानेदार ने उन दोनों को हथकड़ियां डालकर कोठरी में बन्द कर दिया। उधर अपने पति को ढूंढ़ती-ढूंढ़ती कप्तान की स्त्री

थाने में पहुंची। उसने थानेदार की जेब गर्म करके उससे प्रार्थना की कि इस झगड़े में उसके पति का तनिक भी दोष नहीं। उसका तो दिमाग खराब हो गया है, इसलिए अंटसंट बातें करता हुआ घर से भाग निकला है। थानेदार ने भी कप्तान को पागल समझकर उसे छोड़ दिया। कप्तान की स्त्री उसे साथ लेकर अपने घर आई और उसने नौकरों को आज्ञा दी कि इन्हें रस्सियों और सांकलों से बांधकर कमरे में बन्द कर दो, तब तक मैं पागलखाने के डाक्टर को बुलाती हूं। बेचारा कप्तान चिल्लाता रह गया कि मैं पागल नहीं हूं, मुझे क्यों बांध रहे हो! किन्तु नौकरों ने उसकी एक न सुनी और उसके हाथ-पांव बांधकर उसे एक ओर डाल दिया। कप्तान की पत्नी पागलखाने के डाक्टर को साथ लेकर अभी रास्ते में ही आ रही थी कि एक आदमी भागता हुआ आया और बोला—आप कहती हैं कि मैंने अपने पति को कमरे में बन्द किया है, किन्तु मैंने तो उन्हें बाज़ार में घूमते देखा है। शायद वे बंधन तुड़ाकर भाग गए हैं।

वास्तव में उस आदमी ने मुसाफिर एंटिफोलस को बाज़ार में देखा था और उसे ही कप्तान एंटिफोलस समझकर वह उसकी सूचना कप्तान की पत्नी को देने आया था। डाक्टर को वहीं छोड़कर कप्तान की पत्नी अपने पति को पकड़ने के लिए उस आदमी के साथ-साथ चली। चलते-चलते उसने दूर से एक स्थान पर मुसाफिर एंटिफोलस को खड़े देखा और उसे ही अपना पति समझकर चिल्लाई—वह रहा मेरा पति! वह रहा मेरा पति! पकड़ो-पकड़ो, वह भागने न पाए।

मुसाफिर एंटिफोलस ने देखा कि यह वही चुड़ैल है, जो ज़बरदस्ती उसे अपना पति बना रही थी और जिसकी आंख बचाकर वह अभी भागकर आया है। उसे अपने पीछे आते देखकर वह भी पूरा ज़ोर लगाकर भागा और पास ही के एक मंदिर में जा घुसा। मंदिर में एक दयालु पुजारिन रहती थी।

मुसाफ़िर एंटिफोलस ने उसे ज़बरदस्ती अपनी सारी राम-कहानी कह सुनाई कि किस तरह से वह स्त्री उसे ज़बरदस्ती अपना पति बना रही है और वह मंदिर की शरण में आया है और उस स्त्री से छुटकारा पाना चाहता है।

न जाने क्यों इस एंटिफोलस को देखकर पुजारिन के हृदय में स्नेह का स्रोत उमड़ आया और वह अनजाने ही उसके सिर पर हाथ फेरकर बोली—बेटा! चिन्ता न करो! मैं सब प्रकार से तुम्हारी सहायता करूंगी। तुम भीतर चलकर मंदिर में बैठो।

तब तक अपने पति के भ्रम से मुसाफिर एंटिफोलस का पीछा करती हुई कप्तान की पत्नी भी वहां पहुंची। पुजारिन ने उसे धैर्य से समझाना चाहा, किन्तु वह तो यही रट लगाए थी—मेरा पति मुझे दे दो! वह पागल है! उसका दिमाग ठिकाने नहीं। मैं उसे लेकर ही छोड़ूंगी!

इधर इस प्रकार दो भाइयों की आकृति के कारण नगर में हुड़दंग मचा हुआ था। उधर बेचारे एजियन को मिली एक दिन की अवधि समाप्त होने को थी। दिन डूब चला था, और राजा उसे फांसी का हुक्म सुनाने ही वाला था। संयोगवश फांसीघर मंदिर के पीछे ही था और एजियन की फांसी के सिलसिले में राजा तथा हज़ारों की संख्या में लोग उपस्थित थे। जब राजा ने मंदिर के सामने इतनी भीड़ देखी तो उसका कारण जानने के लिए वह वहां आया। हथकड़ियों में बंधा एजियन भी उसके साथ लाया गया। तब तक कप्तान एंटिफोलस भी किसी प्रकार अपनी रस्सियां तुड़वाकर घर से भागा और मंदिर के सामने भीड़ इकट्ठी हुई देखकर उसका तमाशा देखने के लिए ठहर गया। कप्तान को देखकर उसकी पत्नी उसके गले से लिपट गई और बोली—मिल गया मेरा पति, मिल गया। पुजारिन की समझ में कुछ न आया। वह हैरान थी कि इसी शक्ल के एक मनुष्य को मैं अभी भगवान के मंदिर में बिठाकर आई हूं, फिर वैसा ही यह दूसरा मनुष्य कहां से आ

गया ! वह झटपट भीतर गई और मुसाफिर एंटिफोलस को बुलाकर बाहर ले आई। अब कप्तान की पत्नी को काटो तो खून नहीं। वह एक नज़र कप्तान एंटिफोलस की ओर डालती और दूसरी मुसाफिर एंटिफोलस की ओर। एक जैसे दो पतियों को सामने खड़े देखकर उसकी बुद्धि चकरा गई।

इसी समय एजियन को साथ लिए हुए राजा वहां पहुंचा। अपने दोनों पुत्रों को सामने खड़े देखकर एजियन ने झट उन्हें पहचान लिया और उसकी आंखों से टप-टप प्रेम के आंसू झरने लगे। मुसाफिर पुत्र ने भी अपने पिता को पहचान लिया, किंतु कप्तान न पहचान सका, क्योंकि वह बचपन में ही समुद्र दुर्घटना के समय उससे बिछुड़ गया था। एजियन के मुख से राजा ने उसकी रामकहानी प्रातःकाल ही सुनी थी और उसे पता चल चुका था कि उसके दोनों पुत्रों की शक्ल, सूरत, डीलडौल और चाल-ढाल बिलकुल एक-सी है और नाम भी एक है। अतः इस सारे मामले को समझते उसे देर न लगी। उसने कप्तान एंटिफोलस को पास बुलाकर उसे एजियन की सारी कहानी कह सुनाई और बिछुड़े पिता के इतने बरसों के बाद मिल जाने पर उसे बधाई दी। पास ही खड़ी पुजारिन यह सब दृश्य देखती हुई कहानी सुन रही थी। उसकी आंखों से भी टप-टप आंसू बहने लगे और उसने आगे बढ़कर एजियन से कहा—मैं ही तुम्हारी वह अभागिन पत्नी हूं जो समुद्र दुर्घटना में तुमसे बिछुड़ गई थी। मुझे और मेरे साथ के दोनों पुत्रों को पकड़कर वे मल्लाह अपने घर ले आए। वहां आकर उन्होंने रुपयों के लालच में मेरे दोनों पुत्रों को एक रईस के हाथ बेच दिया। पुत्रों को सदा के लिए बिछुड़े देखकर मेरे दिल को बड़ी चोट लगी और मैं संन्यासिनी बनकर देश-विदेश घूमने लगी। कई बरसों तक तीर्थों में भ्रमण करने के बाद अन्त में मैं इस मंदिर में आकर रहने लगी हूं। ये दोनों एंटिफोलस हमारे ही बेटे हैं और उनकी समान आकृति के कारण ही यह हुड़दंग मचा है।

इस प्रकार अनायास ही बरसों के बिछुड़े अपने माता और पिता को देखकर दोनों एंटिफोलस उनके चरणों से लिपट गए। अब कप्तान की पत्नी की समझ में भी सभी बातें आ गईं और एफेसियस के निवासियों, सुनार, दर्ज़ी आदि को जो भ्रम हुआ था उसका कारण भी उनकी समझ में आ गया। कप्तान ने उसी समय अपने पिता को छुड़ाने के लिए एक हज़ार रुपये देने चाहे किन्तु राजा ने उससे एक पैसा भी लिए बिना एजियन को छोड़ दिया। बरसों के बिछुड़े फिर से एक साथ सुख से रहने लगे।

6. तूफान

(The Tempest)

किसी समय सातों द्वीपों से दूर, सात समुन्दर पार एक बड़ा ही सुन्दर टापू था। उस सारे टापू में मनुष्य नाम का एक ही प्राणी था—प्रास्परो। वह नदी के किनारे चट्टानों की एक गुफा में रहता और अपनी इकलौती बेटी, मिरांडा, के साथ जीवन बिताया करता था। मिरांडा लगभग चौदह बरस की एक भोली-भाली लड़की थी। दिन-भर जंगल के हिरण और खरगोशों के पीछे भागते-कूदते, चिड़ियों-चकोरों के साथ खेलते खिलखिलाते तथा नदी के किनारे कंकर और सीपियां चुनते हुए उसका दिन बीत जाता था। यहां रहते-रहते उसे तेरह बरस बीत चुके थे, किन्तु अब तक उसने अपने बूढ़े बाप के अतिरिक्त किसी और पुरुष या स्त्री को न देखा था। बापू ही सब कुछ था और टापू ही उसकी सारी दुनिया। इससे अधिक वह कुछ न जानती थी।

प्रास्परो का अधिकतर समय इसी बालिका के साथ हंसते-खेलते और गाते-गुनगुनाते हुए बीत जाता था; शेष समय वह बड़ी-बड़ी पुरानी पोथियों पर झुका कुछ पढ़ता रहता था—शायद जादू की बातें। कभी-कभी पढ़ते-पढ़ते वह अचानक उठ खड़ा होता और आंखों का काला गोल चश्मा ऊपर चढ़ाकर खाली आकाश में किसीसे घंटों बातें करता रहता था। जी आता तो पास पड़ी काली-सी एक छड़ी को ज़ोर-ज़ोर से अपने सिर के बालों पर रगड़ना आरम्भ कर देता। इससे एकदम हवा में उथल-पुथल मच जाती, तूफान गरजने लगते और समुद्र की लहरें उमड़ती हुई उसके पांवों को छू जाती थीं। उसके एक ही इशारे पर बिजलियां कड़कने लगतीं और पृथ्वी मलेरिया के बीमार की तरह थरथर कांपने लगती थी। क्या

आंधी, क्या तूफान, क्या शेर, क्या इन्सान सब उसकी अंगुली के इशारे पर नाचते थे। यहां तक कि लोक-परलोक की आत्माएं भी उसके वश में थीं। ज़रूरत पड़ने पर वह मुंह से एक अजीब-सी सीटी बजाता, तो अनेक शक्लें दायें-बायें से प्रकट हो जातीं और प्रास्परो के सामने हाथ बांधे उसकी आज्ञा की प्रतीक्षा में खड़ी रहतीं और फिर उसकी आज्ञा पाते ही न जाने पल-भर में कहां गायब हो जातीं। इन्हें वह अपने प्रेतों की सेना कहकर पुकारता था। उसके सबसे प्यारे और लाड़ले प्रेत का नाम एरियल था। दुनिया में ऐसा कोई काम न था जो एरियल न कर सकता हो और ऐसा कोई स्थान न था जहां एरियल न पहुंच सकता हो। इसलिए प्रास्परो के सभी काम वही कर दिया करता था और प्रास्परो सब ओर से निश्चित होकर पोथियों में मग्न रहता था।

एक दिन प्रास्परो अपनी गुफा के सामने हरी घास पर गाढ़ी नींद में सोया था और पास बैठी मिरांडा फूलों पर मंडराती हुई रंग-बिरंगी तितलियों को पकड़ने का यत्न कर रही थी कि प्रास्परो हड़बड़ा कर उठ बैठा। शायद उसने कोई डरावना सपना देखा था। 'बदला लो ! बदला लो !' कहता हुआ वह तनकर बैठ गया और दूर समुद्र की ओर अपनी लाल-लाल आंखें गाड़कर क्रोध से देखने लगा। आज उसे यह भी ध्यान न रहा कि मिरांडा भी पास में बैठी है। नहीं तो उसके डर जाने के भय से मिरांडा के रहते हुए वह कोई भी जादूगरी का काम न करता था। उसके घूरते ही समुद्र की शांति भंग हो गई और उसकी लहरों पर एक भयंकर तूफान उठता हुआ दिखाई दिया। तूफान के बीचोंबीच एक चमकीला जहाज़ लहरों के थपेड़ों से डगमगाता हुआ इसी टापू की ओर बढ़ने लगा। प्रास्परो की आंखें उसी जहाज़ पर गड़ी थीं और स्वयं उसका शरीर इस तरह कांप रहा था कि मानो आज तक उसने जादू के जितने मंत्र सिद्ध किए थे, आज उन सबका ज़ोर

लगा देना चाहता हो। तूफान का वेग क्षण-क्षण बढ़ता गया और वह चमकीला जहाज़ उसी में कहीं गायब हो गया।

यह देखकर प्रास्परो ने संतोष की एक गहरी सांस ली। मानो बरसों की कोई खोई हुई वस्तु उसे मिल गई हो। वह लहरों को पुचकारते हुए आपसे-आप गुनगुनाने लगा :

सागर की ओ लहर ! अब
ठहर ठहर कर लहराना
तूफानों के क्रूर उफानो
इसे बचाना, इसे बचाना !

युग युग से मैं जिसे ढूंढ़ता
बैठा इस निर्जन वन में
वही खड़ा है आज सामने···

अंतिम पंक्ति समाप्त करते ही उसे किसी के कोमल स्पर्श का अनुभव हुआ। उसने घूमकर देखा तो उसकी लाड़ली मिरांडा भय से थर-थर कांपती हुई उसकी गोदी में छिपने का यत्न कर रही थी। प्रास्परो ने पुचकार कर कहा—बिटिया !

मिरांडा धीमे स्वर में बोली —बापू ! तुम यह क्या गा रहे हो ?

प्रास्परो ने उसे गोदी में बिठाते हुए कहा—लहरों का गीत !

मिरांडा—बापू तुम ऐसा गीत क्यों गा रहे हो ?

इसके उत्तर में प्रास्परो ने समुद्र की ओर अंगुली उठाकर कहा—उधर देखो बिटिया ! मेरी अंगुली की सीध में तूफानों के बीच क्या तुम्हें कोई चमकती हुई चीज़ दिखाई देती है ?

मिरांडा—हां बापू ! वह चांदी-सी चमकीली-सी कोई चीज़ लहरों में कभी डूबती और कभी उभरती हुई मुझे साफ दिखाई दे रही है।

प्रास्परो—इसे जहाज़ कहते हैं। इसमें हमारे-तुम्हारे जैसे कई मनुष्य सवार हैं। मैंने अपने जादू के प्रभाव से इन्हें दूर से ही देख लिया था। इन्हें इस टापू की ओर लाने के लिए

ही मैंने यह तूफान उठाया है।

मिरांडा—भगवान के लिए बापू ! इन तूफानों को बन्द करो ! वह देखो, जहाज किस बुरी तरह से डगमगा रहा है और वे लोग ज़ोर-ज़ोर से चीख-पुकार रहे हैं। क्या बापू, तुम्हें उनपर दया नहीं आती ?

प्रास्परो—बिटिया ! यदि तुम जानती होती कि वे लोग कौन हैं तो कभी तुम मुझे उनपर दया करने के लिए न कहतीं !

मिरांडा—तो ये लोग कौन हैं ? क्या तुम इन्हें पहले से जानते हो बापू !

प्रास्परो—बिटिया ! मैंने आज तक इन लोगों की कहानी तुझसे छिपाकर रखी, किन्तु आज मैं तुझसे न छिपाऊंगा। तुझे दिखाने के लिए ही मैं इन्हें तेरे पास खींचकर ला रहा हूं। सुन :

"यहां से सात समुन्दर पार 'मिलन' नाम का एक बहुत सुन्दर टापू है। किसी समय मैं वहां का राजा और तू वहां की राजकुमारी कहलाती थी। जिन दिनों की यह बात है तब तू बारह-चौदह मास की नन्हीं-सी बालिका थी और नौकर-नौकरानियां तुझे हर समय फूलों की तरह संभालकर पालती-पोसती थीं। अभी तू केवल तीन ही मास की थी कि तेरी माता तुझे छोड़कर इस दुनिया से चल बसी थी। उसकी एकमात्र निशानी समझकर मैं अधिकतर समय तेरे ही पालन-पोषण में बिताया करता था। मुझे शुरू से ही पढ़ने-लिखने का बड़ा शौक था, इसलिए तेरी देखभाल से जो समय बचता, उसे मैं इन्हीं पुरानी पोथियों के पढ़ने में बिता देता जिन्हें तुम आज भी मेरी अलमारी में पड़ी हुई देखती हो। काले जादू की ये पोथियां मुझे इतनी प्यारी थीं कि इनके पीछे मैं राज-काज के कामों की ओर तनिक भी ध्यान न दे सकता था। मेरा एक छोटा भाई भी था, जिसका नाम था एंटोनियो। उसपर मुझे पूरा विश्वास था और वही राज्य के सारे कामों की देखभाल किया करता था।

धीरे-धीरे उसके मन में लोभ उत्पन्न हो गया और वह मुझे हटाकर स्वयं राजा बनने की इच्छा करने लगा।

"एक बार उसने समुद्र की सैर का बहाना बनाया और मुझे तथा तुझे लेकर एक जहाज़ पर सवार हो गया। जहाज़ के मल्लाहों को उसने पहले ही सिखा दिया था। इसलिए ज्यों ही हमारा जहाज़ किनारे से दूर एक गहरे स्थान पर पहुंचा त्यों ही मल्लाहों ने मुझे और तुझे जहाज़ से धकेलकर एक छोटी-सी डोंगी में बैठने को विवश किया और अपने आप जहाज़ लेकर उस टापू की ओर वापस लौट गए। एंटोनियो का विचार था कि हम दोनों वहीं समुद्र की लहरों में डूब जाएंगे या भूख-प्यास से तड़पकर प्राण दे देंगे, किन्तु भगवान को ऐसा मंजूर न था। जहाज़ के मल्लाहों में से एक मल्लाह मुझे अपने प्राणों से भी अधिक प्यार करता था और किसी प्रकार एक दिन पहले ही उसे एंटोनियो के इस बुरे विचार का पता चल गया था। इसलिए उसने मेरी डोंगी में पहले ही से खाने-पीने का इतना सामान छिपाकर रख दिया कि हमें महीने भर तक पर्याप्त हो सके। साथ ही वह उन जादू की पोथियों को भी डोंगी में रखना न भूला जो मुझे प्राणों से भी अधिक प्यारी थीं। भगवान उस मल्लाह का भला करे! उसकी कृपा से हम समुद्र में भूखों मरने से बच गए। जहाज़ को आंखों से ओझल देखकर मुझे इतनी अपनी चिन्ता न थी जितनी कि तेरी। मैंने तुझे अपनी छाती से बांध लिया और दोनों हाथों का पूरा बल लगाकर उस डोंगी को खेने लगा। न मैं दिन को आराम करता न रात को, न मैं नींद की परवाह करता न थकान की। बस मुझमें केवल यही इच्छा शेष थी की किसी प्रकार मैं तुझे सही-सलामत किनारे तक पहुंचा सकूं। आखिर एक दिन जबकि मैं थककर चकनाचूर हो चुका था और मुझे अपने बचने की कोई आशा न रही थी, तभी सामने हरे-हरे पेड़-पौधे और फूस की छतवाली एक झोंपड़ी दिखाई दी। उसे देखकर मेरी थकी बांहों में भी बल आ गया

ग्रौर मैंने डोंगी को खेने में सारे शरीर का ज़ोर लगा दिया। सांझ होते-होते हमारी डोंगी एक किनारे पर लगी। वह इसी टापू का किनारा था, जिसमें कि हम ग्राज तक रह रहे हैं।

"ग्रस्तु, हमारी डोंगी किनारे पर तो लग गई, किन्तु मेरी कहानी यहीं समाप्त नहीं हुई। ज्योंही मैंने तुझे गोद में लिए हुए किनारे पर पांव रखा, त्योंही एक बुढ़िया उस फूस के झोंपड़े से बाहर निकली ग्रौर किनारे पर हम दोनों को खड़े देखकर बहुत खुश हुई। वह हमें ग्रपनी झोंपड़ी में ले गई ग्रौर हंस-हंसकर बड़ी फुसलाने वाली बातें करने लगी। पहले तो मैं उसके ग्रभिप्राय को बिलकुल न समझा किन्तु जब रात पड़ी ग्रौर बुढ़िया रोटी के बहाने बाहर निकली तो उसकी पीठ के पीछे एक छोटा-सा कुब दिखाई दिया। यह वैसा ही कुब था जैसाकि मैंने जादू की पोथियों में पढ़ रखा था कि जादूगरनियों की पीठ पर हुग्रा करता है। साथ ही उस जादूगरनी के निकलते ही झोंपड़ी के ग्रासपास के पेड़ों में से मुझे चीखने-पुकारने की ग्रावाज़ें सुनाई देने लगीं। मैं डरता हुग्रा पेड़ों के पास पहुंचा। ध्यान से देखने पर भी मुझे पेड़ों पर एक भी ग्रादमी दिखाई न दिया, किन्तु पेड़ों की डाली-डाली ग्रौर पात-पात से 'बचाग्रो, बचाग्रो', 'हाय मरा, हाय मरा' की चीखें सुनाई दे रही थीं। ग्रब कुछ-कुछ बात मेरी समझ में ग्राई। मैं थोड़ा-बहुत जादू तो जानता ही था। मैंने एक पेड़ की जड़ को हाथ में लेकर पूछा—सच बताग्रो! तुम कौन हो, यह बुढ़िया कौन है, ग्रौर तुम इस प्रकार क्यों चिल्ला रहे हो?

"पेड़ में से ग्रावाज़ ग्राई—मुसाफिर! कभी हम भी तेरे जैसे जीते-जागते ग्रौर ग्राज़ाद मनुष्य थे ग्रौर तेरी तरह ही समुद्र में भटकते हुए इस टापू के किनारे पर ग्राकर लगे थे। यह जो बुढ़िया है, जिसे शायद तुम बड़ी भगतिन समझते होगे, वास्तव में महाठगनी ग्रौर बड़ी जादूगरनी है। इसने पहले-पहल तो हमारे साथ बड़ी फुसलाने वाली बातें की, किन्तु शीघ्र ही

पता चला कि यह हमें अपना दास बनाना चाहती है। इसने हमसे मांस भूनने, हुक्का भरने और सिर मलने जैसे ओछे काम कराने आरम्भ किए। मैंने इसका कहना मानने से साफ इंकार कर दिया। गुस्से में आकर इस बुढ़िया ने हममें से एक-एक की आत्मा को शरीर से निकालकर उसे एक-एक वृक्ष पर पटक दिया और कहा, अब जीवन-भर यहीं लटके रहो और अपनी-अपनी करनी का फल भोगो !—बस, ऐ मुसाफिर, उस दिन से लेकर हमारी आत्माएं इन पेड़ों से बंधी उल्टी लटक रही हैं। दिन को सूर्य निकलने से हमें कुछ शान्ति मिलती है, किन्तु अंधेरा पड़ते ही इस जादूगरनी की माया हमारे अंग-अंग को जलाने-सी लगती है। हमारे शरीर कब से गल-सड़कर मिट्टी के ढेर बन चुके हैं, किंतु हमारी आत्माएं आज भी नरक की आग में जल रही हैं। ऐ मुसाफिर ! अभी समय है ! यदि तू इस बुढ़िया के हाथों से बचकर कहीं भाग सके तो भाग जा, नहीं तो कल तेरी भी वही दशा होगी जो हमारी है।'

"यह कहकर वह फिर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा, मानो कोई काट खा रहा हो। उसकी यह करुण चीख-पुकार सुनकर मैंने निश्चय कर लिया कि उन्हें इस प्रकार दुःखी छोड़कर मैं वहां से भागने का यत्न नहीं करूंगा। या तो अपने जादू के प्रभाव से इन आत्माओं को भी बुढ़िया के बंधन से छुटकारा दिलाऊंगा या जीता-जागता समुद्र में कूदकर प्राण दे दूंगा। बस बिटिया ! उस समय मुझे अपनी बिलकुल चिन्ता न थी। मुझे कोई चिन्ता थी तो केवल तेरी ! कुछ तेरे प्यार और कुछ उन आत्माओं की चीख-पुकार के कारण, मैंने बुढ़िया का दास बनना स्वीकार कर लिया। वह मुझे घृणित से घृणित जो भी काम कहती, मैं उसे करने से कभी इंकार न करता और छिपे-छिपे उस बुढ़िया का जादू जानने और अपने में जादू की शक्ति बढ़ाने का यत्न किया करता था। आखिर जब मैंने अपने-आपको पूरा समर्थ पाया तो बुढ़िया को जादू-युद्ध के लिए

ललकारा। कई दिनों तक हमारा युद्ध चलता रहा। हमारी कई झड़पें हुईं, कई टक्करें हुईं किन्तु अन्त में मेरे जादू ने बुढ़िया को पछाड़ दिया और उसे मारकर मैंने पेड़ों पर लटकी सब आत्माओं को भी मुक्त कर दिया। इस उपकार के बदले आज भी वे आत्माएं मेरे उस अहसान को नहीं भूल पातीं और हर समय मेरे हुक्म की प्रतीक्षा में रहती हैं। ये तूफान, ये आंधियां और चमचमाते जहाज़ की डगमगाहट सब उन्हीं आत्माओं के कारनामे हैं। आज मैंने उन्हें तेरे लिए बहुत सुन्दर खिलौना लाने के लिए कहा है। शायद वे लाते होंगे। बस, बिटिया तेरे बूढ़े बाप की यही कहानी है।"

यह कहानी सुनकर मिरांडा कोई बात पूछने के लिए अभी मुंह ही संवार रही थी कि आकाश की ओर से किसी ने पुकारा, 'मालिक !' प्रास्परो को पहचानते देर न लगी। यह उनका प्यारा प्रेत एरियल ही है। कहीं उसे खाली आकाश में किसी अदृश्य चीज़ से बात करते देखकर भोली मिरांडा डर न जाए, यह सोचकर प्रास्परो ने पास पड़ी छड़ी से धीरे-से मिराडां को छुआ और वह तत्काल गाढ़ी नींद में सो गई। प्रास्परो ने आकाश की ओर देखा और कहा—आ गए एरियल ! सुनाओ, उस जहाज़ और उसके संचालकों का क्या बना ?

एरियल—मालिक ! आपके कहे अनुसार मैंने किसी का बाल भी बांका नहीं होने दिया और वे सब सही-सलामत इस टापू के किनारे पर पहुंच गए हैं। मालिक ! जैसे बिल्ली चूहे को और बंदर सांप को जी-भर छकाता है, उसी तरह आज मैंने आपके इन भाई-बन्धुओं को जी-भर छकाया है। मैंने अंधड़ उठाकर, तूफान मचाकर जहाज़ को लहरों पर ऐसे उछाला जैसे कि बल्ले पर गेंद उछलती है। बेचारे मल्लाहों का दिल तो धक्-धक् करता होगा। जिसे आप अपना भाई बताते थे और जिसकी बहादुरी की आप इतनी प्रशंसा करते थे, वह तो औरतों से भी बदतर निकला।

तूफान की पहली गरज से ही उसने जीने की आशा छोड़ दी और 'मुझे बचाओ ! मुझे बचाओ !' कहकर मल्लाहों के पांवों में पड़ने लगा ! उसके गिड़गिड़ाने की यह सूरत मुझे इतनी पसन्द आई कि उसकी एक तस्वीर भी खींचकर आपको दिखाने के लिए लाया हूं। बाप जितना ही कायर है, उसका बेटा फर्डिनैण्ड उतना ही बहादुर निकला। सबको डरते-कांपते देखकर वह अकेला ही एक डोंगी में कूद पड़ा और लहरों को चीरता हुआ किनारें की ओर बढ़ने लगा। आपकी हिदायत के अनुसार मैंने राजकुमार फर्डिनैण्ड की रक्षा का विशेष ध्यान रखा। वह सकुशल किनारे पर पहुंच चुका है, मैंने अपने-आपको प्रकट किए बिना ही उसके सामने ऐसा संगीत छेड़ दिया जैसा कि कोई स्वर-सुन्दरी भी न गा सकती हो। मेरे संगीत पर लट्टू होकर वह किसी सुन्दरी का मधुर स्वप्न देखता हुआ इधर ही की ओर आ रहा है। उधर एंटोनियो और शेष जहाज़ियों को मैंने जहाज़ से कूदकर अलग-अलग डोंगियों में बैठने पर विवश किया और उन्हें रोते-डुबोते हुए मैं इस तरीके से किनारे पर ले आया कि उनमें से हर एक यही सोचता रहा कि अपने सब साथियों में से वही अकेला बच रहा है। एक-दूसरे की खोज में भटकते हुए वे भी अलग-अलग दिशाओं से इधर ही आ रहे हैं।

प्रास्परो—शाबाश ! मेरे बहादुर प्रेत, शाबाश ! तुम्हारी इस होशियारी के लिए मैं आज ही तुम्हें अपनी सेवा से मुक्त कर दूंगा। और तुम स्वतंत्र होकर अपने बिछुड़े संबंधियों में रह सकोगे। अभी जाओ, जिस ढंग से तुम्हें उन जहाज़ियों को खदेड़ने का काम सौंपा है, उसी ढंग से उन्हें खदेड़ लाओ, लेकिन इस बात का ध्यान रखो कि उनमें से कोई भी निराश होकर आत्महत्या न करने पाए। विशेषकर एंटोनियो के प्राणों की रक्षा तो करनी ही होगी।

यह सुनकर एरियल जिधर से आया था, उधर ही चला गया। उसके मधुर संगीत के प्रभाव से राजकुमार फर्डिनैण्ड समुद्र की दुर्घटना और अपने साथियों के वियोग को बिलकुल भूल-सा चुका था और जिस ओर से संगीत सुनाई दे रहा था, उसी ओर चलता हुआ वह उस स्थान पर जा पहुंचा जहां प्रास्परो और मिरांडा एक पेड़ की छाया में हरी घास पर बैठे थे। आज तक मिरांडा ने अपने पिता दढ़ियल बूढ़े के अतिरिक्त किसी भी पुरुष को न देखा था। इसलिए इस सुन्दर राजकुमार को सामने से आते हुए देखकर वह बहुत प्रसन्न हुई और यह न समझ सकी कि उसका दिल उसकी ओर क्यों खिंचा जा रहा है। उधर इस बियाबान जंगल में मिरांडा जैसी सुन्दरी को पेड़ की छाया में बैठे देखकर फर्डिनैण्ड ने समझा कि शायद वह किसी दिव्य लोक में पहुंच गया है या कोई स्वर्ग की अप्सरा ही देवलोक से उतरकर धरती पर आ गई है। आंखों ही आंखों में उन दोनों को एक-दूसरे की ओर इस तरह आकर्षित होते देखकर प्रास्परो का मनोरथ पूरा हुआ और वह जान-बूझकर कुछ क्षणों के लिए अदृश्य होकर छिपे-छिपे देखने लगा कि वे एक-दूसरे को कितना चाहते हैं। समुद्र की दुर्घटना के कारण फर्डिनैण्ड का चेहरा कुछ उतर गया था। फिर भी उसकी सुन्दरता अच्छी थी। उसे देखकर स्वयं प्रास्परो रीझ गया और उसने मन ही मन कहा—मेरी बिटिया ऐसे ही राजकुमार के योग्य है और सौभाग्य से पहली नज़र में ही दोनों एक-दूसरे से प्यार करने लगे हैं. किन्तु पहले मैं इनके प्यार की परीक्षा लूंगा।

अभी तक प्रास्परो अदृश्य रूप धारण किए उन दोनों की बातें सुन रहा था। अब वह सहसा उनके सामने प्रकट होकर बोला—ओ बदतमीज़ मनुष्य ! सच बता, तू कौन है ? कहां से आया है और किसकी आज्ञा से तूने इस टापू में प्रवेश किया है ? लगता है कि तू किसीका जासूस है और मेरा भेद लेने के लिए चुपके-चुपके मेरे राज्य में घुस आया है ! और अपने

किए का फल अभी तुझे मिल जाएगा। देख, कान खोलकर सुन ले, आज से तू मेरा दास है। तुझे सुबह और शाम चावलों के छिलकों की रोटी और मरी हुई चिड़ियों का कच्चा मांस खाना होगा और दिन-भर कुल्हाड़े से काट-काटकर इस कुटिया के चारों ओर का जंगल साफ करना होगा। यदि काम में मैंने तनिक भी ढील पाई तो तेरे लिए मुझ-सा बुरा कोई न होगा! यह ले कुल्हाड़ा और आज, अभी, इसी क्षण से पेड़ काटना आरम्भ कर दे!

यह सुनकर मारे क्रोध के फर्डिनैण्ड की आंखों से चिनगारियां निकलने लगीं। उसने अकड़कर कहा—अरे बुड्ढे, शायद तुम्हें यह पता नहीं कि मैं महाराज एंटोनियो का राजकुमार और एक विशाल राज्य का एकमात्र उत्तराधिकारी हूं! जो शासन करने के लिए उत्पन्न हुए हैं, वे कभी भी गुलामी स्वीकार नहीं किया करते।

प्रास्परो—कल के छोकरे! तेरी इतनी हिम्मत! मैं अभी तुझे तेरी उद्दण्डता का मज़ा चखाता हूं।

फर्डिनैण्ड—और मैं कब तुमसे दया दिखाने की प्रार्थना करता हूं। मेरे हाथ में तलवार रहते हुए तुम तो क्या, स्वयं यमराज भी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

यह कहते ही फर्डिनैण्ड ने म्यान से तलवार खींच ली, किन्तु यह क्या, उसकी तलवार और उसकी मूठ में पड़ा हुआ हाथ, दोनों जहां उठे थे, वहीं के वहीं जमकर रह गए। एड़ी-चोटी का सारा बल लगाकर भी फर्डिनैण्ड उसे न हिला सका और पत्थर की मूर्ति की तरह निस्तब्ध खड़ा रहा।

प्रास्परो—अब कहां गई वह हिम्मत! देखा इस छड़ी का कमाल! तुम्हारी राजकुमारिता और वह तुम्हारी उत्तराधिकारिता कहां गई? इस छड़ी की एक कंपन से ही तुम्हारी सारी वीरता कहां गई? बोलो, अब भी तुम्हें मेरी दासता स्वीकार है या नहीं?

राजकुमार ने केवल सिर हिलाकर अपनी अनुमति का संकेत किया। प्रास्परो ने उसके हाथ में कुल्हाड़ा देते हुए आज्ञा के स्वर में कहा—यह लो कुल्हाड़ा। और अब मैं जाता हूं। शाम को फिर इसी जगह तुम्हें मिलूंगा। तब तक आसपास झाड़-झंखाड़ कटकर साफ होना चाहिए।

पिता को जाते देखकर मिरांडा ने मिन्नत के स्वर में कहा—बापू, यह सुन्दर राजकुमार इस काम को कैसे कर सकेगा? इसके अंग कुल्हाड़े की चोट को कैसे सह सकेंगे! बापू! आप इतने कठोर न बनिए! इसे क्षमा कीजिए। मेरे लिए क्षमा कर दीजिए।

प्रास्परो ने तर्जनी अंगुली दिखाकर कहा—चुप! ढीठ लड़की, तुझे इसका वकील किसने बनाया है! यह न समझ कि दुनिया में यही एक राजकुमार रह गया है। इससे भी सुन्दर और इससे भी बांके अनेक राजकुमार दुनिया में भरे हैं। मैं आज्ञा देता हूं कि इससे दिन-भर लकड़ियां काटने का काम लो और यदि यह तनिक भी ढील करे तो मुझे बताना!

यह बनावटी क्रोध दिखाकर प्रास्परो बड़बड़ाता हुआ प्रकट रूप में वहां से चला गया, किन्तु वास्तव में अदृश्य होकर उन दोनों की बातें सुनने लगा। उनकी जो बातें उसने सुनीं उनसे उसे विश्वास हो गया कि वे एक-दूसरे के सच्चे जीवन-साथी बनकर रह सकेंगे।

फर्डिनैण्ड ने कहा—मैं तुम्हें अपने दिल की रानी बनाकर रखूंगा और अपने राज्य की मलिका!

मिरांडा कह रही थी—मैं तुम्हें अपना राजा मानकर जिऊंगी और अपने प्राणों का स्वामी!

अब प्रास्परो अपने-आपको रोक न सका। वह प्रकट होकर बोला—और मैं तुम्हारे इस प्रेम-सम्बन्ध को पूरा करने के लिए दिल से आशीर्वाद दूंगा।

इसी समय प्रास्परो के कहे अनुसार एरियल भी एंटोनियो

और उसके अन्य साथियों को लेकर वहां आ पहुंचा। एंटोनियो अब तक अपने पुत्र को मरा हुआ समझे बैठा था। अब अचानक उसे जिन्दा देखकर और उसके पास एक सोलह साल की किशोरी को देखकर उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। बगल में ही बूढ़े प्रास्परो को देखकर उसने समझा कि यह कोई जादूगर है और वे लोग किसी जादूनगरी में पहुंच गए। उसे अचरज में पड़े देखकर प्रास्परो ने आगे बढ़कर कहा :

"इधर आओ एंटोनियो ! इस शुभ अवसर पर मेरे गले मिलो। हम दोनों अपनी कमज़ोरियों के कारण एक-दूसरे से अलग हो गए थे, किन्तु हमारी संतानों ने आज हमें फिर मिला दिया। अब तुम अधिक हैरान मत हो ! मैं वही तुम्हारा बिछुड़ा भाई प्रास्परो हूं। आओ, पहले गले मिलो और इस नये युगल को आशीर्वाद दो, फिर मैं तुम्हें आदि से लेकर अन्त तक सुनाऊंगा कि मैं यहां कैसे पहुंचा, किस प्रकार यहां इतने दिनों से रह रहा हूं और किस प्रकार मैंने इस नये वर-वधू के मिलने का यह प्रबन्ध किया।

बस फिर क्या था ! दोनों भाई एक-दूसरे से लिपट-लिपट-कर गले मिले। पेड़ों की डाली-डाली नाचने लगी और पात-पात से मधुर संगीत सुनाई देने लगा। प्रास्परो की प्रेत-सेना आकाश से फूलों की वर्षा करने लगी। ऐसे ही मधुर समय में मिरांडा का विवाह फर्डिनैण्ड के साथ हो गया और दोनों भाई अपने साथियों समेत राजधानी को लौट गए। कहते हैं फर्डिनैण्ड और मिरांडा ने चिरकाल तक वहां राज्य किया और प्रास्परो तथा एंटोनियो ने अपनी शेष आयु साधु-महात्माओं की भांति और प्रजा की सेवा में बिताई।

7. आधी रात का सपना

(A Midsummer Night's Dream)

प्राचीन काल में एथेंस नगर में एक राजा राज्य करता था। उसने नगर में ढिंढोरा पिटवा रखा था कि युवा होने के बाद उसके राज्य में कोई भी लड़की कुंआरी न रहे। लड़की की इच्छा हो या न हो, किन्तु उसका पिता किसी भी वर के साथ ज़बर-दस्ती उसका विवाह रचा सकता है। इस विषय में यदि कोई लड़की अपने पिता की आज्ञा का उल्लंघन करे तो उसे फांसी पर लटका दिया जाएगा। फांसी के भय से अधिकतर लड़कियां अपने पिताओं की इच्छानुसार विवाह करवा लिया करती थीं और यदि कोई अपनी मरज़ी से विवाह करवा भी लेती तो कोई भी पिता इसकी सूचना राजा को नहीं देता था। हां, एक दिन एक पिता, पहली बार अपनी फरियाद लेकर राजा के दरबार में आया और बोला :

"महाराज ! मेरी एक इकलौती बेटी है जिसका नाम हर्मिया है। मैंने उसे बड़े लाड़-प्यार से पाला-पोसा और बड़ा किया है। किन्तु जब उसका विवाह करने का समय आया तो उसने मेरी इच्छा के अनुसार विवाह करने से इंकार कर दिया। जिस युवक के हाथ में उसे सौंपना चाहता हूं उसे हर्मिया बिलकुल नहीं चाहती और किसी अन्य युवक से प्यार करती है। महाराज, मैं चाहता हूं कि आप ऐसी बेवफा लड़की को मौत की सज़ा देकर मेरे साथ अच्छा काम कीजिए।"

यह सुनकर राजा ने हर्मिया को बुलाया और पिता को रुष्ट करने का उससे कारण पूछा। हर्मिया ने कहा, "महा-राज ! मेरा पिता मेरा विवाह डीमिट्रीयस नामक एक युवक के साथ करना चाहता है; किन्तु वह हेलेना नामक किसी और लड़की से प्यार करता है। जब डीमिट्रीयस मुझे चाहता नहीं

तो भला मैं उससे कैसे विवाह कर सकती हूं ? मैं विवाह करूंगी तो लाइसेण्डर के साथ करूंगी, नहीं तो कुंआरी रहना पसन्द करूंगी।''

दोनों के बयान लेकर राजा ने हर्मिया को एक बार फिर सोचने को कहा और आज्ञा दी कि तीन दिन के अन्दर वह डीमिट्रियस के साथ विवाह करने को तैयार हो जाए, नहीं तो चौथे दिन उसे फांसी पर लटका दिया जाएगा।

यह आज्ञा सुनकर हर्मिया सीधे अपने साथी लाइसेण्डर के पास पहुंची और उसने अपनी मुसीबत उसे कह सुनाई। बहुत सोच-विचार के बाद लाइसेण्डर ने कहा– "मुझे एक ऐसा उपाय सूझा है जिसके द्वारा हमारा-तुम्हारा विवाह भी हो सकेगा और तुम फांसी पर लटकने से भी बच जाओगी। इस नगर की सीमा से बाहर किसी दूसरे राजा का राज्य है। उसी राज्य में मेरी एक मौसी रहती है। यदि तुम आज सांझ होने से पहले-पहले अपने पिता की आंख बचाकर इस राज्य की सीमा के बाहर पहुंच जाओ तो मैं भी तुम्हें वहीं पर मिलूंगा। वहां से मैं तुम्हें अपनी मौसी के घर ले चलूंगा, जहां तुम अपनी मनमरज़ी के मुताबिक मेरे साथ विवाह कर सकोगी, क्योंकि इस राजा के कायदे-कानून इसीके राज्य में माने जाते हैं। इसकी सीमा से बाहर नहीं।''

यह सलाह हर्मिया को बहुत पसन्द आई और दोनों किसी प्रकार एथेंस नगर की सीमा के बाहर पहुंच गए। संयोगवश उसी दिन डीमिट्रियस भी अपनी पहली चहेती हेलेना के साथ वन-विहार के लिए उसी जंगल में गया हुआ था। एक ओर से हर्मिया और लाइसेण्डर ने उस जंगल में प्रवेश किया और दूसरी ओर से हेलेना और डीमिट्रियस ने। जिस ओर से हेलेना और डीमिट्रियस जा रहे थे उसी ओर कुछ दूरी पर आबेरोन नाम का परियों का एक राजा रहता था। परियों की रानी टिटैनिया उसीकी पटरानी थी। किसी [illegible] से टिटैनिया अपने पति

आबेरोन से रूठकर कहीं दूर चली गई थी और महल में आबेरोन अकेला ही था। घूमते-घामते हेलेना और डीमिट्रियस परियों के इसी राजा के पास से गुज़रे। वे थके-मांदे थे ही, परियों के राजा ने समझा कि वे भी एक-दूसरे से रूठे हुए हैं। आबेरोन ने मन ही मन परियों को याद किया और पक नाम की एक परी उसके सामने प्रकट हो गई। यह परी लोगों को चिढ़ाने और उल्लू बनाने की कला में बड़ी निपुण थी। प्रायः वह पास के गांवों में जाती और ग्वालिनों के मटकों में मेंढक बनकर बैठ जाती। ज्यों ही ग्वालिनें छाछ उलटाने के लिए मटके खोलतीं वह पक परी ज़ोर से टरटराती हुई मटके से बाहर कूद पड़ती। बेचारी ग्वालिनें डरकर मटके नीचे पटक देतीं और उनकी सारी छाछ बिखर जाती। कभी वह अदृश्य होकर राजदरबार में पहुंच जाती और जब वज़ीर लोग राजा के सत्कार के लिए खड़े होते तो पक परी उन सबके पीछे से कुर्सियां सरका देती। बेचारे वज़ीर बैठने लगते तो धड़ाम ने धरती पर लुढ़क जाते। यह देखकर सारे दरबार में खिल्ली मच जाती और पक परी हंसती हुई जंगल को लौट आती। आज भी हेलेना और डीमिट्रियस के साथ कुछ इसी प्रकार की हंसी करने का विचार परियों के राजा को सूझा। उसने पक परी को हरे रंग की एक शीशी देते हुए कहा—देखो पक! इसमें वशीकरण है। इस तेल में यह गुण है कि यदि किसी सोये हुए मनुष्य की दाईं आंख पर लगा दिया जाए तो जागने पर वह जिसे भी सबसे पहले देखेगा उसीपर मोहित हो जाएगा, चाहे वह गधा, घोड़ा या बन्दर ही क्यों न हो। लो यह वशीकरण तेल की शीशी अपने पास रखो और देखो कि आज इस जंगल में डीमिट्रियस नाम का एक युवक अपनी चहेती के साथ आया हुआ है किन्तु ऐसा लगता है कि वे दोनों एक-दूसरे से रूठे हुए हैं। डीमिट्रियस सुनहरे और हरे रंग के कपड़े पहने है। इस निशानी से तुम उसे भली प्रकार पहचान सकोगी। यदि वह तुम्हें कहीं सोया हुआ मिल

जाए तो इस तेल की एक बूंद उसकी दाईं आंख पर लगा देना किन्तु इसका ध्यान रहे कि सोते हुए उसकी चहेती हेलेना उसके पास ही हो ताकि आंख खुलने पर उसकी नज़र सबसे पहले हेलेना पर ही पड़े।"

ये बातें सुनते हुए पक परी को शैतानी सूझ रही थी, इसलिए अधूरी ही बात उसकी समझ में आई। वह डीमिट्रियस व हेलेना वाली तरफ जाने बजाय के उस ओर को चली गई जिस ओर से हर्मिया और लाइसेण्डर आ रहे थे। संयोगवश लाइसेण्डर भी जड़ाऊ हरे कपड़े पहने हुए था। इसलिए उसे ही डीमिट्रियस समझकर पक परी ने सोते हुए लाइसेण्डर की दाईं आंख पर वशीकरण तेल की एक बूंद चुपड़ दी और अदृश्य हो गई।

जंगल के दूसरे किनारे पर डीमिट्रियस और हेलेना किसी प्रकार आपस में बिछुड़ गए और दोनों एक-दूसरे की खोज करते हुए जंगल में घूमने लगे। घूमते-घूमते हेलेना उसी जगह आ पहुंची जहां लाइसेण्डर और हर्मिया सोए हुए थे। पत्तों की मर्मर की आवाज़ से लाइसेण्डर चौंककर जाग उठा और उसने हड़बड़ाकर उस ओर देखा जिस ओर से हेलेना आ रही थी। दोनों की आंखें चार होने की देर थी कि लाइसेण्डर वशीकरण तेल के प्रभाव से हेलेना पर आसक्त हो गया और 'रूपसुन्दरी, स्वर्ग की देवी, मेरे दिल की रानी', जैसे हज़ारों सम्बोधनों से बुलाने लगा। इससे पहले वह हेलेना को उजड्ड और गंवार कहकर उसकी खिल्ली उड़ाया करता था और उसकी तुलना में अपनी हर्मिया के रूप की प्रशंसा करते-करते अघाता नहीं था। किन्तु आज वह हर्मिया के प्यार को बिलकुल भूल गया और उसके बदले हेलेना को अपनी 'प्रेयसी, प्रियतमा' और न जाने क्या-क्या खुशामद की बातें कहने लगा। हेलेना ने समझा कि वह उसका मखौल उड़ा रहा है, इसलिए वह उसे निर्लज्ज, बेशर्म और बातूनी कहकर वहां से खिसकने लगी। किन्तु ज्यों-ज्यों तेल का असर होता था त्यों-त्यों लाइसेण्डर का प्यार हेलेना के

प्रति बढ़ता ही जाता था। उसकी गालियां भी उसे फूलों की पंखुड़ियों-सी लगने लगी थीं और वह उसीके पीछे भागने लगा।

थोड़ी देर बाद जब हर्मिया की आंख खुली तो वह अपने-आपको जंगल में अकेली देखकर बहुत डरी और 'सेण्डर ! सेण्डर' पुकारती हुई इधर से उधर भागने लगी। आकाश में छिपी एक परी ने यह सारा तमाशा देखा कि तेल का क्या प्रभाव हुआ है। इसकी खबर देने के लिए वह परियों के राजा आबेरोन के पास गई और बोली : "मालिक ! सचमुच आपके तेल ने खूब रंग जमाया। आपके कहे अनुसार मैंने हरे कपड़ों वाले उस युवक की आंख पर इसकी एक बूंद टपकाई तो वह अपनी चहेती को सोई छोड़कर एक दूसरी ही लड़की के प्यार में अंधा हो गया है और छाया की तरह उसके पीछे-पीछे भाग रहा है। लेकिन वह लड़की उसे बिलकुल नहीं चाहती थी; जब उसे गालियां सुनाती है तो उनकी बकझक सुनने में इतना आनन्द आता है जितना कि ग्वालिनों को खिझाने में भी नहीं आता।"

यह सुनकर आबेरोन ने कहा—"अरी पगली ! कहीं तू गलती से किसी दूसरे मनुष्य की आंख पर तो तेल नहीं चुपड़ आई। तेरी बातों से मुझे ऐसा ही लगता है। मैं तो रूठे मियां-बीवी को मनाने का यत्न कर रहा था, तूने उलटे एक जोड़ी को भी एक-दूसरे से अलग कर दिया। तेरी बातों से मुझे दीखता है कि आज इस जंगल में एक मियां-बीवी नहीं अपितु दो आए हुए हैं और शायद दोनों की पोशाक भी एक-सी है। अब जा और इस बात का ध्यान रख कि मैं जिन रूठे हुए मियां-बीवी में सुलह करवाना चाहता हूं उनमें युवक का नाम डीमिट्रियस और युवती का नाम हेलेना है। जा झटपट उन दोनों में प्रेम करवा-कर आ।"

यह सुनते ही एक परी वहां से गई और डीमिट्रियस की

आंख पर तेल की बूंद चुपड़ आई। उधर आगे-आगे हेलेना उसके पीछे-पीछे लाइसेण्डर और लाइसेण्डर के पीछे-पीछे भागती हुई हर्मिया, वे तीनों भी उसी स्थान पर आ पहुंचे जहां डीमिट्रियस सोया हुआ था। पक परी ने जैसा कि पहले ही अनुमान लगा लिया था, डीमिट्रियस की आंख खुलते ही सबसे पहले उसकी नज़र हेलेना पर पड़ी। हेलेना उसकी चहेती तो शुरू से ही थी अब तेल के प्रभाव से वह उसे पहले से भी हज़ार गुणा अधिक सुन्दरी दिखाई देने लगी। वह चिल्लाता हुआ उससे बोला—प्यारी हेलेना, तुम कहां गुम हो गई थीं ! तुम्हें ढूंढ़ते-ढूंढ़ते मेरे पांव में छाले पड़ गए ! तुम्हारे विरह में मैंने एक-एक मिनट बरस के समान बिताया है ! सचमुच आज तुम मुझे कितनी सुन्दर लग रही हो।''—यह कहता हुआ वह भी पागलों की तरह हेलना की ओर भागा। हेलना अब तक समझती थी कि डीमिट्रियस एक सभ्य व्यक्ति है और इसी गुण के कारण वह उसे प्यार करती थी किन्तु आज उसे भी पागलों-सी ढिठाई करते देखकर वह समझ न सकी कि आज इन पुरुषों को हो क्या गया है। लाइसेण्डर ने आज तक मुझे घृणा की दृष्टि से देखा है किन्तु आज वह मुझे परियों से भी सुन्दर और पंखुड़ियों से भी कोमल बता रहा है। उसकी बात जाने दो, मेरा अपना डीमिट्रियस ही आज मेरी खिल्ली उड़ाने पर तुल गया है। हो न हो, दाल में कुछ काला अवश्य है।

अभी हेलेना यह सोच रही थी कि उसकी दृष्टि दूर से आती हुई हर्मिया पर पड़ी। हेलेना ने सोचा, हो न हो इसी रांड ने इन दोनों को अपने वश में करके मुझे तंग करने के लिए मेरे पीछे लगाया है। यह सोचकर वह हर्मिया की ओर लपकी और उसकी चुटिया पकड़कर उसे घसीटने लगी। उधर हर्मिया ने समझा कि इसी चुड़ैल ने मेरे लाइसेण्डर को बहका-कर अपने पीछे लगाया है, इसलिए यह मेरी बैरिन है। वह भी हेलेना की चुटिया पकड़कर उसके बाल नोचने लगी। इन्हें

लड़ते देखकर आकाश में छिपी पक परी अपनी हंसी न रोक सकी और 'हा-हा' करके हंस पड़ी।

डीमिट्रियस पहले ही लाइसेण्डर पर इस बात से चिढ़ा हुआ था कि हेलेना का अपमान क्यों किया। अब हंसी की आवाज़ सुनकर उसने समझा कि लाइसेण्डर ही उसे चिढ़ाने के लिए हंस रहा है। उसने आव देखा न ताव और तलवार लेकर लाइसेण्डर पर झपट पड़ा। लाइसेण्डर ने भी तलवार खींच ली और दोनों लड़ते हुए वहां से बहुत दूर निकल गए। इस प्रकार दोनों ओर महाभारत मचाकर पक परी हंसती, खिलखिलाती हुई अपने राजा आबेरोन के पास पहुंची और ठहाका लगाकर बोली :

"मालिक ! बटेरों और बटेरनियों की छीना-झपटी देखनी हो तो झटपट चलो, नहीं तो फिर देखने को नहीं मिलेगी !"

जब आबेरोन ने सारी कहानी सुनी तो उसे अपनी गलती पर बहुत पश्चात्ताप हुआ। उसकी एक भूल के कारण दो सुखी युगल विपत्ति में पड़ गए। तब उसे अपनी दशा भी याद हो आई कि किस प्रकार उसकी अपनी रानी टिटैनिया भी उससे रूठकर चली गई और उसके बिना वह कितना उदास बैठा है। उसने उसी समय पक परी को आज्ञा दी :

"पक ! अब इन शरारतों को छोड़ो और जो काम मैं कहता हूं वह अभी करके आओ ! जिन दो नौजवानों को तुम लड़ते छोड़कर आई हो उनमें एक का नाम लाइसेण्डर और दूसरे का नाम डीमिट्रियस है। इनमें डीमिट्रियस हेलेना नाम की उस युवती से प्यार करता है जिसके प्यार में तुमने डीमिट्रियस और लाइसेण्डर दोनों को अंधा बना दिया है। दूसरी युवती लाइसेण्डर को चाहती है और उसका नाम हर्मिया है। तुम झटपट जाओ आकाश में अदृश्य होकर ऐसा संगीत आरम्भ करो कि उसकी मस्ती में दोनों युवक और दोनों युवतियां झूम उठें और अपनी लडाई भूलकर तुम्हारे संगीत के पीछे भागने

लगें। तब उन्हें भगाते-भगाते इतना भगाओ कि वे थककर सो जाएं। पहली बार तुमने डीमिट्रियस और लाइसेण्डर की दाईं आंख पर वशीकरण तेल की बूंदें टपकाई थीं। अब की बार तुम उनकी बाईं आंख पर एक-एक बूंद टपका देना। इससे उनपर छाए हुए तेल के वशीकरण जादू का असर जाता रहेगा और वे पहले की तरह अपनी-अपनी चहेती को चाहने लगेंगे। जा तू, झटपट जाकर यह काम कर, तब तक मैं अपनी रूठी टिटैनिया को मनाने जाता हूं।"

यह कहकर परियों का राजा अपनी रानी के महल की ओर चला। महल के बगीचे में एक बहुत बड़ा सदाबहार का पेड़ था, जिस पर सुनहरे रंग का एक झूला पड़ा हुआ था। इसी झूले में परियों की रानी टिटैनिया लेटी हुई थी और दूसरी परियां उसे सुलाने के लिए लोरियां गा रही थीं :

सो जा ! परियों की रानी ! सो जा !
आबेरोन राजा की पटरानी ! सो जा !
सो जा ! इस झूले अपने में !
रूठे पिया मिले सपने में !

जब तक परियां लोरी गाती रहीं, आबेरोन अदृश्य रूप धारण कर एक गुलाबी फूल की पंखड़ियों पर बैठा सुनता रहा। जब झूले में टिटैनिया सो गई तो आबेरोन ने उसकी दाईं आंख पर उसी वशीकरण तेल की एक बूंद टपका दी। उसी समय परलोक का एक शेखचिल्ली दिन-भर घूम-घामकर उसी सदा-बहार के पेड़ की एक शाखा पर आकर सो गया। आबेरोन ने शेखचिल्ली के असली सिर पर गधे का सिर लगा दिया और ऐसा प्रबन्ध किया कि आंख खुलने पर टिटैनिया की नज़र सबसे पहले इसी शेखचिल्ली पर पड़े।

थोड़ी देर बाद जब टिटैनिया जागी तो उसने एक शाखा पर सोए हुए शेखचिल्ली को सबसे पहले देखा। तेल के प्रभाव से वह उसीपर मोहित हो गई और दूसरी परियों को कहने

लगी :

"आहा ! न जाने स्वर्ग से कौन-सा देवता उतरकर उस शाखा पर सो गया है। देखो ! उसका सिर और उसके कान कितने सुन्दर हैं। ऐसा सुन्दर युवक तो मैंने परलोक में भी कभी नहीं देखा।" टिटैनिया के मुंह से गधे के सिर के लिए ऐसी बातें सुनकर मारे हंसी के आबेरोन लोट-पोट हो रहा था, किन्तु वह अदृश्य था इसलिए रानी को कुछ पता न चला।

ज्यों-ज्यों तेल का प्रभाव अधिक होता जाता था रानी को शेखचिल्ली की शक्ल और भी अधिक सुन्दर दिखाई देती जा रही थी। अब थोड़ी देर बाद शेखचिल्ली आया और गधे के स्वर में उसने ढींचू-ढींचू गाया तो टिटैनिया खुशी से नाच उठी और बोली :

"वाह ! ऐसा मीठा स्वर तो मैंने आज तक कभी नहीं सुना। सचमुच जितना सुन्दर इसका रूप है उतना ही सुन्दर इसका स्वर भी है ! जाओ, परियो ! उस सुन्दर युवक को आदर के साथ जाकर कहो कि परियों की रानी तुम्हारे प्यार में पागल हो रही है। तुम चलकर उसे अपने शुभ दर्शन दो।

यह सुनकर दासी परियां एक नज़र से गधे के सिर वाले शेखचिल्ली की ओर देखतीं और दूसरी नज़र से रानी की ओर देखकर मन ही मन हंसतीं कि आज रानी को क्या हो गया है, किन्तु उसके डर के मारे मुंह से कुछ न कह सकतीं। आखिर वे जाकर शेखचिल्ली को बुला लाईं। रानी ने शेखचिल्ली के गधे के सिर को चूमकर अपनी गोद में रख लिया और उसपर अपना प्यार प्रकट करने लगी।

जादू के प्रभाव से शेखचिल्ली को कुछ पता न था कि ऊपर किसका सिर लगा हुआ है। उसका दिमाग और उसकी भूख भी अब गधे जैसी हो गई थी। रानी ने उससे कहा—हे सुन्दर युवक ! तुम्हें भूख लगी होगी। आज्ञा करो कि मेरी दासियां तुम्हारे लिए कौन-सा भोजन उपस्थित करें।—शेखचिल्ली ने

हिनहिनाकर कहा—मुझे पांच सेर भूसा और तीन सेर चने की दाल चाहिए ! बस इतने से मेरा पेट भर जाएगा।

परियां उसी समय जाकर भूसा और चने ले आईं। अब रानी ने पूछा—ऐ सुन्दर युवक ! तुम कौन-से वस्त्र पहनना पसन्द करोगे—रेशमी या सूती ?

शेखचिल्ली का दिमाग तो गधे का दिमाग बन चुका था। उसने खुश होकर कहा—मुझे तो बोरी के कपड़े चाहिए।

परियां झटपट बोरी के कपड़े उठा लाईं और जब उसे पहनाने लगीं तो वह बोला—पहले खरहरा लेकर मेरी पीठ खुजलाओ फिर मैं कपड़े पहनूंगा।—बेचारी परियों ने कभी ऐसी चीज़ों को हाथ तक लगाकर न देखा था, किन्तु आज उन्हें गधे शेखचिल्ली की पीठ पर खरहरे से खाज मिटानी पड़ी। थोड़ी देर तक खरहरा चलाने के बाद शेखचिल्ली को नींद आ गई और वह रानीकी गोदी में सिर रखकर सो गया और ज़ोर-ज़ोर से फुंकारें मारने लगा। ठीक उसी समय आबेरोन ने मौका देखकर उस तेल की एक बूंद रानी की बाईं आंख पर लगा दी जिससे शेखचिल्ली के प्रति उसके प्यार का सारा का सारा नशा दूर हो गया और अब उसे सचमुच गधे का सिर दिखाई देने लगा। इसी समय आबेरोन प्रकट होकर टिटैनिया के सामने खड़ा हो गया और खिलखिलाकर बोला—क्यों पटरानी जी ! मुझसे रूठकर किससे प्यार किया जा रहा है ?—यह सुनकर बेचारी टिटैनिया मारे शर्म के पानी-पानी हो गई और गधे के सिर को लात मारकर चुप हो रही। आबेरोन ने मुस्कराते हुए कहा—फिर तो कभी मुझसे रूठने का नाम न लोगी। आज न रूठने की शपथ उठाओ तो मैं तुम्हें एक चुटकुला सुनाता हूं।

टिटैनिया ने अपने दोनों कानों को पकड़कर और आबेरोन के पांवों पड़कर उससे क्षमा मांगी। जब आबेरोन ने उसे वशीकरण तेल के प्रभाव और गधे के सिर की कहानी सुनाई तो क्या राजा, क्या परियां और क्या टिटैनिया सब मारे हंसी के लोट-

पोट होने लगे।

इसी समय पक परी भी अपना काम पूरा करके लौटी और चारों प्रेमियों को अपने साथ लेती आई। राजा आबेरोन ने उन चारों को अपने यहां निमंत्रित किया और उनके मन बह-लाव के लिए बड़ी देर तक गाना-बजाना और खाना-पीना होता रहा। जब एक ओर हर्मिया और लाइसेण्डर तथा दूसरी ओर हेलेना और डीमिट्रियस हंसते-मुस्कराते हुए वहां से विदा हुए तो वे यही समझ रहे थे, जैसे उन्होंने आधी रात का कोई सपना देख लिया हो।

8. बारहवीं रात

(Twelfth Night)

भगवान की माया बड़ी विचित्र है। कभी-कभी वह ऐसे चमत्कार कर दिखाता है जिन्हें देखकर मनुष्य की बुद्धि दंग रह जाती है। एक बार इल्यूशियम नगर में किसी स्त्री के दो जुड़वां बच्चे उत्पन्न हुए। दोनों की शक्ल-सूरत, रूप-रंग और डीलडौल बिलकुल एक जैसा था। भेद केवल इतना था कि उनमें एक लड़की थी और एक लड़का। मां ने लड़के का नाम सैबेस्टियन और लड़की का नाम व्यूला रखा। विचित्र बात तो यह थी कि बहन-भाई की किस्मत भी एक जैसी थी।

एक बार जब वे दोनों कुछ बड़े हुए तो एक जहाज़ पर सवार होकर विदेश की यात्रा को चले। अभी वे अपने नगर से कुछ ही दूर गए होंगे कि समुद्र में एक भयंकर तूफान उठ खड़ा हुआ और उनका जहाज़ बेकाबू होकर एक समुद्री चट्टान से जा टकराया। बीसियों आदमी डूब गए और बीसियों घायल हो-कर लहरों में समा गए। किन्तु इन दोनों बहन-भाई के जीवन के कुछ दिन शेष थे।

इसलिए इतनी बड़ी दुर्घटना में भी बच निकले। सैबेस्टियन ने जहाज़ से कूदकर एक बड़ा-सा तख्ता हथिया लिया और उससे चिपटकर लहरों पर डूबता-उतराता हुआ वह समुद्र में तैरने लगा। उसे व्यूला की बहुत चिन्ता थी, किन्तु जब उसने देखा कि जहाज़ के मल्लाहों ने उसे भी अपने साथ नाव पर बिठा लिया है तो उसके दिल को बड़ा संतोष हुआ। भगवान ने ज़िन्दगी दी तो बहन-भाई फिर से मिल जाएंगे यह सोचकर सैबेस्टियन उस तख्ते को बड़ी तत्परता से किनारे की ओर ले जाने लगा। शायद व्यूला ने भी उसे दूर से तैरते हुए देख लिया था, इसलिए उसने भाई से फिर मिलने की आशा मन से न

छोड़ी। किनारे पर पहुंचकर उसने जहाज़ के कप्तान से पूछा—कप्तान साहब ! यह तो आप जानते ही हैं, भाई ही मेरा एक सहारा था, और इस दुर्घटना से उसके बच निकलने की आशा ही मन में शेष रह गई है। पता नहीं उसपर क्या बीत रही होगी। उससे मेरी इस जीवन में भेंट होगी या नहीं, और होगी तो पता नहीं कब; इसलिए मैं आपसे सलाह मांगती हूं कि अपने मुसीबत के दिन मैं किसके पास रहकर बिताऊं ?

कप्तान ने, जो कि अधेड़ उम्र का एक अनुभवी व्यक्ति था, स्नेह-भरे शब्दों में कहा – यूं तो बेटी, मुझे भी तुमको अपने घर में रखने में कोई आपत्ति नही, किन्तु मैं ठहरा जहाज़ का कप्तान ! आज यहां और कल वहां। किसी एक जगह तो हमारा ठिकाना है नहीं, इसलिए मैं तो तुम्हें यही सलाह दूंगा कि तुम पास वाले द्वीप में चली जाओ। वहां ओर्सिनो नाम का एक बहुत ही धर्मात्मा राजकुमार रहता है। वह विवाह योग्य अवस्था होने पर भी अभी कुंआरा ही है।—व्यूला ने उसके अभी तक कुंआरे रहने का कारण पूछा तो कप्तान ने कहा—वास्तव में वह राजकुमार एक रईस की बेटी से प्यार करता है जिसका नाम ओलीविया है। किसी समय ओलीविया भी उससे प्यार करती थी, किन्तु लगभग छः महीने बीते कि उसका एकमात्र भाई संसार से चल बसा। भाई की मृत्यु से ओलीविया को इतना गहरा आघात पहुंचा कि वह उसकी याद को दिल से कभी न भुला सकी और दुनिया के सब ऐश व आरामों से किनारा करके तब से एक बन्द कमरे में रहती है। न वह किसी से मिलती-जुलती है और न ही पुरुष की छाया तक अपने पर पड़ने देती है। यही कारण है कि राजकुमार भी उससे मिल नहीं पाता और उसकी याद में दिन-रात कुढ़ा करता है।

व्यूला ने ठंडी सांस भरकर कैप्टेन से कहा—बहनों को भाई कितने प्यारे होते हैं, यह बहनों का दिल ही जानता है। न जाने मेरा भैया भी कभी मुझे मिलेगा या नहीं। कप्तान

साहब, जिस ओलीविया का वर्णन आप कर रहे हैं वह अपने भाई के शोक में मग्न है और मैं भी। इसलिए मुझे विश्वास है कि जो अपने भाई को सदा के लिए खो चुकी है वह मेरे दिल की पीड़ा को अवश्य पहचानेगी और मुझे आशा है कि मेरे भाई को खोज लाने में वह हर सम्भव सहायता मुझे देगी। यदि कप्तान, तुम मुझे किसी प्रकार ओलीविया तक पहुंचा दो तो मैं जन्म-जन्म तक तुम्हारा उपकार मानूंगी।

बूढ़े कप्तान ने कहा—बेटी, मुझे सन्देह है कि बिना पूर्व परिचय के ओलीविया तुझ से भेंट करना भी स्वीकार न करे। इसलिए मेरी तो यही राय है कि तू राजा की शरण में ही जा। वह अवश्य तेरी सहायता करेगा।

व्यूला ने कैप्टन की बात मान ली और एक पहाड़ी नौकर का वेश धारण करके राजकुमार के यहां नौकरी करने लगी। उसने राजकुमार को अपना नाम सिसेरियो बताया और तन-मन लगाकर उसकी सेवा करने लगी। पुरुष-वेश में वह ठीक अपने भाई जैसी लगती थी। उसके भाई का कोई मित्र व्यूला को इस वेश में देखकर उसे सैबेस्टियन समझने की भूल कर सकता था। अपने भाई की तरह वह काम करने में भी बड़ी कुशल थी। कुछ ही दिनों में वह राजकुमार की गहरी विश्वास-पात्र बन गई। यहां तक कि राजकुमार ने उसे ओलीविया के साथ अपने प्रेम की बात भी बता दी और इस काम में उसकी सहायता मांगी। बेचारी व्यूला इस काम में राजकुमार की क्या सहायता करती? वह तो राजकुमार के प्रेम में स्वयं फंस जाने से स्वयं अपनी सहायता भी न कर सकी। वह जब राजकुमार की सौम्य आकृति को देखती तो मन ही मन सोचती कि न जाने ओलीविया का दिल किस फौलाद का बना हुआ है जो राजकुमार जैसे प्रेमी की प्रार्थना पर भी नहीं पसीजता। मैं तो ऐसे राजकुमार की एक 'हां' के लिए हज़ार बार कुर्बान होने को तैयार हूं।

एक बार जब राजकुमार ओलीविया की निष्ठुरता को याद कर-करके आंसू बहा रहा था तो सिसेरियो ने मौका देखकर कहा—मालिक, मुझसे आपकी यह दशा अब और अधिक नहीं देखी जाती। आपकी रातें ओलीविया के विरह में आंसू बहाते और दिन उसीके गुण गाते हुए बीत जाते हैं। न खाने की सुध है, न पीने की। बस आठों याम ओलीविया के नाम की ही रट लगाए रहते हैं। मैं पूछता हूं कि क्या ओलीविया ने एक बार भी आपकी इन तपस्याओं का खयाल किया ?

राजकुमार ने ठंडी आह भरकर कहा—सिसेरियो ! नारी का हृदय भगवान ने बनाया ही कठोर है। उसका हृदय लहू-मांस का नहीं, अपितु पत्थर का बना होता है। पसीजना तो उसे आता ही नहीं। यह पुरुष ही है जो अपनी प्रेयसी के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करके भी अपने-अपको ऋणी मानता है।

नारी का तिरस्कार सुनकर व्यूला के दिल को मानो ठेस पहुंची। उसका वेश भले ही पुरुष का था, किन्तु हृदय तो नारी का ही था। उसने मन ही मन कहा—काश ! राजकुमार मेरे हृदय में झांककर देख सकता कि नारी का हृदय किन कोमल भावनाओं से ओत-प्रोत है !

व्यूला के हृदय की यह बात होंठ भी न रोक सके और सहसा उसके मुंह से निकल गया—राजकुमार ! काश ! मैं नारी होता और तुम्हें बता सकता कि नारी की तुलना में पुरुष का प्यार कुछ नहीं। नारी के प्रेम का मुझे गहरा अनुभव है। उसे तिरस्कार की दृष्टि से मत देखो।

राजकुमार ने कहा—इसका प्रमाण !

सिसेरियो बोला—समय आने पर मैं इसका प्रत्यक्ष प्रमाण भी आपको दिखा दूंगा।

राजकुमार ने कुछ खिलकर कहा—मेरे लिए प्रत्यक्ष प्रमाण तो ओलीविया ही है। यदि तुम अपना प्रमाण दिला सको तो

प्यारे सिसेरियो ! मैं कई जन्मों तक तुम्हारा उपकार न भुला सकूंगा। मैंने आज तक अपने प्यार का रहस्य अन्य किसी को नहीं बताया। आज केवल तुम्हें बता रहा हूं और वह भी इसी आशा पर कि तुममें ओलीविया को मोहने की अद्भुत शक्ति है। मुझे विश्वास है कि यदि तुम उसके पास जाकर उसे दर्द-भरे शब्दों में मेरे प्यार का अफसाना सुनाओ तो निश्चय ही उसका कठोर हृदय भी पिघल जाएगा और तुम्हारे हठ के सामने वह 'ना' न कर सकेगी।

व्यूला स्वयं जिसे चाहती थी भला उसी के प्रेम का संदेश लेकर किसी दूसरी युवती के पास कैसे जा सकती थी ? वह कैसे अपने हृदय के प्रेमी को अपने ही हाथों किसी दूसरी को सौंप सकती थी ? फिर भी वह अपने दिल पर पत्थर रखकर राजकुमार की खातिर ओलीविया के पास गई और उसने ऐसे दर्द-भरे शब्दों में राजकुमार के विरह का वर्णन किया कि ओलिविया का दिल उमड़ आया, राजकुमार के प्रति नहीं बल्कि सिसेरियो के ही प्रति। उसकी नज़रों में सिसेरियो पुरुष था, सुन्दर था और उसकी वाणी में जादू था। बस इन्हीं गुणों पर वह सिसेरियो पर रीझ गई और उसे अपने भाई के वियोग का स्मरण न रहा।

सिसेरियो ने लाख यत्न किया कि किसी प्रकार वह ओलीविया का मन राजकुमार की ओर खींच सके किन्तु इससे उसके हृदय पर कुछ असर नहीं हुआ और उसने नम्रता-भरे शब्दों में कहा—मेरी ओर से अपने मालिक से जाकर क्षमा मांग लेना कि मैं उनके योग्य नहीं। वे मुझ दुखिया को क्यों इतना मान देना चाहते हैं ! वे ऐसा न किया करें।

इस ओर से सब प्रकार से निराश होकर सिसेरियो उसके पास से जाने लगा तो ओलीविया को ऐसे लगा जैसे कोई उसके पहलू से हृदय निकालकर लिए जा रहा हो। जब वह रात सोई सपने में भी उसे सिसेरियो की ही आकृति दिखाई दी। उस

जादू-भरे मुस्कराते चेहरे को वह फिर कैसे देख सके इसी चिन्ता में शेष रात कट गई। सुबह हुई तो उसे एक बहाना सूझा। उसने कांपते हाथों से भोज-पत्र का एक टुकड़ा उठाया और उस पर लिखने लगी :

मेरे अनजाने बन्धु सिसेरियो !

तुम राजकुमार का संदेश लेकर मेरे पास आए ही क्यों थे ? मैं अपनी ही धुन में मस्त होकर किसी प्रकार से सुख-दुख के दिन काट रही थी, किन्तु तुमने आकर सहसा मेरे हृदय में उथल-पुथल मचा दी और जाते समय मेरे मन की सारी शांति बटोर कर अपने साथ लेते गए ! यह तुम्हारी निष्ठुरता नहीं तो और क्या है ? दो क्षण के तुम्हारे सहवास ने मुझे पराया बना दिया। यदि इस तुच्छ ओलीविया के प्रति तुम्हारे मन में तनिक भी सहानुभूति शेष हो तो एक बार अवश्य दर्शन देना ! मैं तुम्हारी बाट जोहती रहूंगी।

तुम्हारे मिलने की आशा में,

तुम्हारी ही,
ओलीविया

पत्र लिखकर उसने अपने एक विश्वासपात्र नौकर के हाथ सिसेरियो के पास भेज दिया। पत्र को पढ़कर सिसेरियो ने ज़ोर का एक ठहाका लगाया और ओलीविया के भोलेपन पर उसे रहम आने लगा। कहां तो वह पुरुष की छाया से भी दूर भागती थी और कहां अब पुरुष के छल में, एक स्त्री पर ही अपना प्यार लुटाने को तैयार हो गई थी। वह अगले दिन फिर राजकुमार के संदेश के बहाने ओलीविया के पास गई और अपनी ओर से मन हटा लेने का उससे बड़ा आग्रह किया, किन्तु ओलीविया ने एक न मानी। हारकर वह उसे वहीं छोड़कर चली आई। ज्योंही सिसेरियो दरवाज़े से बाहर निकला, त्योंही न जाने कहां से एक शराबी मनुष्य निकल आया और उसकी तरफ घूमकर बोला—तो तुम्हीं मेरे वह दुश्मन हो जो राजकुमार की चिट्ठियां

ग्रौर संदेश ले-लेकर इस घर में ग्राया करते हो। जानते नहीं, वह मेरे दिल की मलिका है ग्रौर उस पर मैं किसी की नज़र तक पड़ते देखना नहीं चाहता ! बदमाश ! तुम उसे मुझसे छीन कर राजकुमार के हाथों सौंपना चाहते हो, तो लो, मैं पहले तुम्हारा ही काम तमाम करता हूं, फिर तुम्हारे राजकुमार की भी खबर लूंगा।

यह कहकर वह व्यक्ति शराबियों की तरह झल्लाकर व्यूला पर झपटा। बेचारी व्यूला ने वेश तो पुरुषों का ही पहन रखा था लेकिन उन जैसा साहस कहां से लाती ! बेचारी ग्रपनी सारी मर्दानगी भूलकर भय से चिल्लाना ही चाहती थी कि गली के दूसरे मोड़ से एक मुसाफिर इसी ग्रोर ग्राता हुग्रा दिखाई दिया। व्यूला को विपत्ति में फंसा देखकर, मुसाफिर ने ग्रपनी चाल तेज़ कर दी ग्रौर उसकी ग्रोर ग्राते हुए बोला—सैबेस्टियन, डरो मत ! मैं ग्रभी इस दुष्ट की ग्रक्ल ठिकाने लगाता हूं।

कई वर्षों बाद ग्राज ग्रपने भाई का नाम सुनकर व्यूला चौंकी ग्रौर वह पैनी नज़र से उस मुसाफिर को पहचानने का यत्न करने लगी। तब तक मुसाफिर उस शराबी व्यक्ति के पास पहुंच चुका था ग्रौर उसकी तलवार छीनकर वह उसे दो-चार घूंसे भी रसीद कर चुका था। पलक मारते ही न जाने कहां से दो सिपाही टपक पड़े। उन्होंने ग्राते ही उस मुसाफिर के दायें-बायें हथकड़ी लगा ली ग्रौर उसे थाने ले चले, किन्तु शराबी व्यक्ति से उन्होंने बात तक न पूछी। बेचारा मुसाफिर इस सबका कुछ भी मतलब न समझ सका ग्रौर व्यूला की तरफ देखकर बोला :

"ग्ररे सैबेस्टियन ! मुझे सिपाही पकड़कर लिए जा रहे हैं ग्रौर तू खड़ा देख रहा है ! बेशर्म कहीं के ! मैंने समुद्र में उस समय तेरे प्राणों की रक्षा की जब भगवान भी तुझपर दया करना

भूल गया था। अब तू मुझे इन यमदूतों से भी नहीं छुड़ा सकता ?''

यह सुनकर व्यूला मानो किसी गहरे सपने से जागी। अब उसे कुछ-कुछ समझ में आने लगा कि यह मामला क्या है। मुसाफिर की बातों से इतना अवश्य इशारा मिल गया कि उसका भाई सैबेस्टिन समुद्र में डूबा नहीं और अब भी जीवित है। उसी के भ्रम से मुसाफिर ने सैबेस्टियन समझकर उसकी रक्षा की थी।

जब तक व्यूला इस सपने से जागी तब तक निर्दयी सिपाही उस मुसाफिर को घसीटकर ले जा चुके थे। व्यूला ने दायें-बायें देखा तो वह शराबी कहीं दिखाई न दिया। कहीं वह यमदूत फिर न आ धमके, इस भय से वह बेचारी झटपट वहां से महल की ओर भागी। अभी उसके मुड़ने की देर ही थी कि दूसरी गली से एक और युवक आकर उस चौक में आकर खड़ा हो गया जिसकी आकृति व्यूला से बिलकुल मिलती-जुलती थी। यही व्यूला का बिछुड़ा भाई असली सैबेस्टियन था। तब तक वह शराबी भी एक-दो गुण्डे साथियों को लेकर फिर उसी चौक में आ धमका। सैबेस्टियन को व्यूला समझकर शराबी ने धमकाकर कहा—क्यों बे नलायक ! तूने मुझे घूंसे क्यों मरवाए थे !—यह कहकर ज्योंही शराबी ने तलवार से उसपर वार करना चाहा त्योंही सैबेस्टियन ने भी तलवार निकाल ली और एक-एक की अच्छी तरह मरम्मत की। चौक में मारपीट की आवाज़ सुनकर ओलीविया भागी आई और सैबेस्टियन को सिसेरियो समझकर उसने उसकी वीरता की बड़ी प्रशंसा की और उसे बड़े आग्रह से अपने घर में लिवा ले गई। सैबेस्टियन हैरान था कि वह इस नगर में किसी को जानता तक नहीं, फिर क्यों एक शराबी उसे दुश्मन समझकर मारने के लिए आया और क्यों यह रईसज़ादी उसके साथ इस सलीके से पेश आ रही है ? अन्त में उसने यही निष्कर्ष निकाला

कि हो न हो यह रईसज़ादी ओलीविया पहली मुलाकात में ही मुझसे प्यार करने लगी है तो इससे बढ़कर मेरा सौभाग्य हो ही क्या सकता है ? यह सोचकर वह ओलीविया के साथ उसी प्यार और मुहब्बत के साथ पेश आया जैसे कि ओलीविया उससे पेश आ रही थी। वह भी इसे भगवान का चमत्कार ही समझने लगी थी कि अभी तो सिसेरियो मुझसे सीधे मुंह बात भी न करता था और अभी वह मुझे सिर-आंखों पर बिठाने को तैयार हो रहा है।

उधर मुसाफिर ने पुलिस के थाने में जाकर अपना बयान देते हुए कहा :

"मेरा नाम एंटोनियो है और मैं एक जहाज़ का कप्तान हूं। कई महीने बीते, मैंने एक मनुष्य को समुद्र में डूबते हुए देखा। मैंने दया करके उसे अपने जहाज़ पर बिठा लिया और जब तक वह बिलकुल स्वस्थ न हो गया तब तक मैंने दिन-रात एक करके उसकी सेवा-शुश्रूषा की और उसके लिए पानी की तरह रुपया बहाया। यह वही मनुष्य है जिसे आज फिर एक शराबी से बचाने के लिए मैंने बीच-बचाव किया और जिसके कारण आपके सामने मुझे अपराधी बनकर आना पड़ा है। उसका नाम सैबेस्टियन है और मैं उसे अपना गाढ़ा मित्र समझता था, किन्तु आप मेरे गवाह हैं कि जब आज मुझपर मुसीबत पड़ी तो वह काठ के उल्लू की तरह खड़ा मेरे मुंह की ओर ताकता रहा और आप लोग मुझे पकड़कर ले आए हैं। मैं एक परदेशी आदमी हूं और विपत्ति में पड़े एक आदमी पर तरस खाकर मैंने उसे मरने से बचाया है। अब यह आप की इच्छा है कि आप मुझे पुरस्कार दें या कारागार।"

पुलिस वालों ने कुछ डरा-धमकाकर उसे छोड़ दिया। सैबेस्टियन की कृतघ्नता को याद करके उसके दिल में आग-सी धधक रही थी। उसने निश्चय कर लिया कि चाहे उसे फांसी पर क्यों न लटकना पड़े किन्तु वह ऐसे बेवफा मित्र को सबक

सिखाकर ही छोड़ेगा। यह सोचकर वह सीधे उसी चौंक में गया जहां सिसेरियो को सैबेस्टियन समझकर वह उसे शराबी के चंगुल से छुड़ाकर छोड़ गया था। भला उन दोनों में अब उसे कौन दिखाई देता। बेचारा सिसेरियो तो अपने सिर से मुसीबत टली देखकर उसी समय वहां से दुम दबाकर ऐसे भागा कि उसने पीछे की ओर घूमकर भी न देखा। और सैबेस्टियन जिसे एंटोनियो सचमुच ढूंढ़ना चाहता था वह तो अब रईसज़ादी ओलीविया का प्रमपात्र बन चुका था और हज़ारों दास-दासियां उसकी खुशामद करने में लगे थे। भला अब वह उसे कहां दिखाई देता ? बेचारा व्यर्थ ही चौक के आसपास चक्कर काटने लगा।

उधर जब बहुत देर तक सिसेरियो महल में न पहुंचा तो राजकुमार को चिन्ता हुई। वह स्वयं उसकी खबर लेने के लिए ओलीविया के घर की ओर चला। वहां पहुंचकर उसने क्या देखा कि सिसेरियो की शक्ल का एक मनुष्य शाल-दुशाले से सजे एक पलंग पर सोया है और स्वयं रईसज़ादी ओलीविया उसे पंखा झल रही है। यह दृश्य देखकर उसके तन में दोहरी आग लग गई। उसने आव देखा न ताव और उस पुरुष को सिसेरियो ही समझकर लगा उसे कोसने।

"कृतघ्न कहीं के ! मैंने तुझपर विश्वास करके अपना संदेश देकर तुझे यहां भेजा और तू उल्टा मेरी ही ओलीविया को मुझसे छीन बैठा ! क्या तुम अपने वह दिन भूल गए जब एक-एक पैसे के लिए तरसते मेरे पास आए थे और मैंने तुमपर दया करके अपने यहां नौकर रख लिया था। दुष्ट सिसेरियो ! क्या मेरी दया का तुमने यही बदला दिया ! कमीना ! दुष्ट ! नीच !"

राजकुमार की त्योरियां देखकर सैबेस्टियन भी लपककर खड़ा हो गया और क्रोध में ओठ चबाते हुए बोला :

"कौन है रे तू बकवासी, जिसे बोलने तक की तमीज़

नहीं ? कौन कमीना तेरे पास भीख मांगने आया था और किसे तूने नौकर रखा था ? झूठी बात कहते क्या तुझे लाज भी नहीं आती ! तेरे जैसे एक शराबी से पहले भी मुझे वास्ता पड़ चुका है। दीखता है तूने भी हद से ज़्यादा शराब पी रखी है। इसलिए मुझे 'सिसेरियो ! सिसेरियो !' कहकर पुकार रहा है। मैं सिसेरियो नहीं। मेरा नाम सैबेस्टियन है और मैं अपने एक मित्र के साथ आज ही पहली बार इस नगर में आया हूं।

यह झगड़ा सुनकर चौक में चक्कर काटता हुआ एंटोनियो भी वहीं आ पहुंचा। सैबेस्टियन को सामने खड़ा देखकर उसने राजकुमार से कहा—आप ठीक कहते हैं महाराज ! यह व्यक्ति बड़ा ही कृतघ्न और झूठा है। आज इसने मुझे भी धोखा देकर हवालात में भिजवा दिया था। मेरी किस्मत अच्छी थी जो छूट-कर आ गया, नहीं तो इसने अपनी शत्रुता निकालने में कोई कसर न उठा रखी थी। मैंने इसे एक बार समुद्र में डूबने से बचाया था। जब यह मेरा अपना न बना तो भला आपका कैसे बन सकता है ? यह झूठा है, कृतघ्न है, धोखेबाज़ है ! इसकी चमड़ी कुत्तों से नुचवा देनी चाहिए। इसकी बोटी-बोटी काटकर, इसे तड़पा-तड़पाकर मारना चाहिए।

यह कहकर एंटोनियो और राजकुमार बेचारे सैबेस्टियन को पकड़कर घसीटने ही वाले थे कि बाहर से उन्हें उसी शक्ल का एक और व्यक्ति आता हुआ दिखाई दिया। उसे देखकर दोनों चकित रह गए कि एक ही व्यक्ति अन्दर भी और बाहर भी, दोनों जगह कैसे दिखाई दे सकता है ? बेचारी ओलीविया दुविधा में पड़ गई कि वह घर के भीतर खड़े पुरुष को पति स्वीकार करे या बाहर से आनेवाले को। शक्ल-सूरत, चाल-ढाल, कद-आयु, सबमें दोनों बिलकुल समान थे। किसी में तिल-भर का भी अन्तर न था।

वास्तव में बाहर से आनेवाला पुरुष व्यूला थी और राज-कुमार तथा एंटोनियो आदि से घिरा हुआ, घर में खड़ा पुरुष

व्यूला का बिछुड़ा हुआ भाई सैबेस्टियन था। बहिन-भाई की आकृति बिलकुल समान थी और व्यूला ने भी सिसेरियो के नाम से पुरुष का वेश धारण कर रखा था। इसलिए देखनेवालों को दोनों में कोई भेद न जान पड़ा। किन्तु बहिन-भाई तो इस रहस्य को जानते थे और चिरकाल से वे एक-दूसरे की खोज में ही दर-दर भटक रहे थे। ज्योंही उनकी आंखें चार हुईं वे एक-दूसरे को पहचान गए और गले लिपटकर हर्ष के आंसू बहाने लगे। व्यूला ने हर्ष-विभोर होकर कहा :

"भैया, आज तुम मुझे मिल गए तो मुझे सारा जहान मिल गया।"

सैबेस्टियन ने कहा—और बहिन, मैंने तुम्हें देख लिया तो मानो मुझे जीवन की निधि मिल गई।

सैबेस्टियन के मुंह से 'बहिन' सम्बोधन सुनकर राजकुमार ने चौंककर पूछा—तो क्या सिसेरियो स्त्री है?

सैबेस्टियन ने कहा—हां राजकुमार! यह मेरी छोटी बहिन व्यूला है। एक बार जहाज़ की दुर्घटना में हम दोनों एक-दूसरे से बिछुड़ गए थे। मुझे एक दयालु कप्तान ने अपने जहाज़ पर बिठाकर मेरे प्राण बचाए थे। वह और मैं आज ही इस नगर में पहुंचे हैं। हम दोनों अलग-अलग दिशाओं में चलकर नगर में इसी बहिन की खोज करने के लिए निकले थे, किन्तु तब से उस कप्तान का कुछ पता नहीं।

पास खड़ा एंटोनियो ये सब बात सुन रहा था। अब भली प्रकार उसकी समझ में आ रहा था कि अपने मित्र सैबेस्टियन को कृतघ्न समझने का भ्रम उसे क्यों हुआ! उसने आगे बढ़कर कहा—वह अभागा एंटोनियो मैं ही तो हूं।

उनकी सारी गुत्थी सुलझी देखकर व्यूला ने आदि से लेकर अन्त तक सारी कहानी कह सुनाई और उसने राजकुमार को स्पष्ट कह दिया कि वह उससे प्रेम करती थी, इसलिए नौकर बनकर भी उसकी सेवा में रहना उसने स्वीकार किया।

9. मानो न मानो

(As you Like it)

एक राजा था। एक था वज़ीर। वज़ीर ने राजा का राज्य छीनकर उसे जंगलों में खदेड़ दिया था। और उसकी जगह स्वयं राजा बन बैठा था। पहले राजा की एक लड़की थी, जिसका नाम था रोज़ा। वज़ीर की भी एक लड़की थी, जिसका नाम था शीलिया। रोज़ा और शीलिया में सगी बहनों से भी अधिक प्यार था। वे बचपन से ही एकसाथ रहतीं, एकसाथ उठतीं और एकसाथ बैठती थीं। जिस समय इन दोनों के पिताओं में गहरी शत्रुता ठन गई और पहला राजा अपने संगी-साथियों को लेकर जंगल की ओर भाग निकलने की तैयारी कर रहा था, उस समय भी ये दोनों सहेलियां एक-दूसरे के गले लग कर प्यार के आंसू बहा रही थीं।

शीलिया कह रही थी—तो रोज़ा ! आज तू मुझे छोड़कर सदा के लिए मुझसे दूर चली जाएगी !

रोज़ा कह रही थी—हां सखि! मैं अन्तिम बार तुमसे विदा मांगने आई हूं !

शीलिया—इतनी कठोर हो तुम रोज़ा! मुझे पता न था। बचपन का वह स्नेह, प्यार की वे बातें और गुड्डे-गुड़ियों के वे ब्याह—क्या यह सब कुछ क्षण-भर में भूल गईं ?

रोज़ा—मेरी प्यारी शीलिया। विदा के समय इतने कठोर व्यंग्य मुझपर न कसो। तुम्हारा वियोग ही क्या मेरे लिए कम दुखदायी है, जो तुम ऐसे वचन कहकर मेरी आत्मा को दुखा रही हो ! भला तुम जैसी सखी को छोड़कर जाने को किसका जी करता है ? किन्तु जाऊं नहीं तो क्या करूं ?

शीलिया—तुम सदा मेरे साथ रहो। मैं तुम्हें अपने प्राणों में छिपाकर रखूंगी, जहां कोई तुम्हें देख भी न सके।

रोज़ा ने शीलिया का एक चुंबन लेते हुए कहा—इस जुदाई के समय, शीलिया ! सच तुम कितनी प्यारी लग रही हो। जी तो यही चाहता है कि तुम्हारे गले लिपटकर जीवन-भर आंसू बहाती रहूं, तुम्हें छोड़कर न जाऊं, किन्तु किस्मत का लिखा कौन मिटा सकता है ! अब तो मुझे जाना ही होगा।

विदाई का नाम सुनकर शीलिया की आंखों में आंसू भर आए और उसने भर्राए हुए कंठ से केवल इतना कहा—रोज़ा ! मैं तुम्हें नहीं जाने दूंगी।

और सचमुच शीलिया ने उसे जाने भी न दिया। राजा भी दोनों सखियों के स्नेह को भलीभांति जानता था, इसलिए उसने भी रोज़ा को साथ ले जाने का हठ न किया और अपने संगी-साथियों को लेकर जंगलों की ओर चला गया। दोनों सखियां इस प्रेम से रहने लगीं जैसे कि उनके पिताओं में शत्रुता की कोई घटना ही न हो।

एक दिन राजधानी में अधकचरी उमर का एक बांका नौ-जवान आया और उसने दरबार के नामी पहलवानों को दंगल के लिए अखाड़े में ललकारा। उसकी बड़ी-बड़ी आंखें, भोला-भाला चेहरा और कमल-से कोमल शरीर को देखकर किसी को यह गुमान भी न होता था कि उसने कभी तलवार की मूठ भी पकड़कर देखी होगी। फिर भी वह खूंखार पहलवानों के सामने मुस्कराता हुआ खड़ा था। दो क्षण बाद ही उन निर्दयी पहल-वानों की तलवारों तले उसकी क्या गति होगी, इसकी कल्पना करके ही सब लोग मन ही मन युवक की जवानी पर तरस खा रहे थे। रोज़ा के जी में रह-रहकर आने लगा कि वह लपककर युवक के हाथ से तलवार छीन ले और उसे कहे कि उसका यह यौवन कौड़ियों के मोल लुटाने के लिए नहीं ! वह अब भी दंगल खेलने से बाज़ आ जाए। किन्तु लोकलाज के कारण वह ऐसा न कर सकी। उसने पास बैठी शीलिया के कान में कहा—शीलिया ! भगवान के लिए इसे मना करो कि यह दंगल न

खेले ! उसे हाथ में तलवार पकड़े देखकर न जाने मेरा दिल क्यों घबराने लगा है !

शीलिया समझ गई कि उसकी भोली रोज़ा अनजाने ही उस परदेशी को अपना हृदय दे बैठी है। सखी के निमित्त अब तो उस युवक के प्राण बचाने ही होंगे। यह सोचकर शीलिया ने बड़ी सहानुभूति के साथ युवक की मर्दानगी की प्रशंसा की और उससे अनुरोध किया कि वह दंगल खेलने का हठ छोड़ दे।

इसके उत्तर में युवक ने एक गहरी सांस भरकर कहा—राजकुमारी ! इन प्राणों से मोह करके मैं क्या करूंगा ? इस दुनिया में अब न कोई मेरा अपना है, न पराया। फिर मैं इस दुनिया में किसके लिए जीवित रहूं ?

रोज़ा के हृदय ने कहा—मेरे लिए। किन्तु उसके हृदय की यह आवाज़ उसके कानों तक न पहुंच सकी। उधर दंगल की तैयारियां शुरू हो चुकी थीं। म्यानों से तलवारें निकलकर आकाश में चमकने लगी थीं। उनकी झनझनाहट से सारा अखाड़ा गूंज उठा था। युवक की छोटी-सी सफलता पर रोज़ा का हृदय खुशी से नाच उठता और विरोधियों की तनिक-सी कामयाबी पर वह सिकुड़ जाता। सहसा अखाड़े में एक बिजली सी चमकी और युवक की तलवार ने लपककर विरोधी के दो टुकड़े कर दिये। उसके कोमल हाथों की यह करामात देखकर देखने वाले दंग रह गए और वे युवक की जय-जय के नारे लगाने लगे। स्वयं मंत्री ने युवक की पीठ थपथपाकर पूछा—वीर ! तुम कौन हो और कहां के रहने वाले हो ? वह कौन भाग्यशाली पिता है जिसने तुम्हारे जैसे वीर को जन्म दिया है ?

सच पूछो तो रोज़ा के मन की बात मंत्री ने पूछ डाली। युवक की विजय से सारी जनता में यदि सबसे अधिक कोई प्रसन्न था तो वह थी रोज़ा ! युवक का परिचय जानने के लिए उसका हृदय व्याकुल हो रहा था। इसलिए वह युवक के एक-एक शब्द को बड़े ध्यान से सुनने लगी। युवक कह रहा था :

"महाराज ! मेरा नाम ग्रौरलैंडो है ग्रौर मेरे पिता रोलैंड किसी समय इसी राज्य के प्रतिष्ठित दरबारी थे।"

मंत्री ने चौंककर पूछा—क्या वही रोलैंड जो पहले राजा का घनिष्ठ मित्र था ?

युवक ग्रौरलैंडों ने सिर हिलाकर कहा—हां, महाराज !

इस एक 'हां' को सुनकर मंत्री के हृदय पर मानो एकसाथ सैकड़ों बिजलियां टूट पड़ी हों। उसने युवक को घूरते हुए कहा—बस, ग्रौरलैंडों ! इससे ग्रधिक तुम्हारा परिचय पाने की मुझे ग्रावश्यकता नहीं ! ग्रपने शत्रु के पुत्र को एक क्षण भी मैं जीता नहीं देख सकता, किन्तु तुम्हारी वीरता ग्रौर जवानी पर तरस खाकर मैं तुम्हें ग्राज्ञा देता हूं कि तुम इसी क्षण मेरे राज्य की सीमा से बाहर हो जाग्रो !

युवक की वीरता को देखकर रोज़ा जितनी प्रसन्न हुई थी, मंत्री के क्रोध को देखकर उतनी ही दुःखी हुई। यह जानकर कि यह युवक उसी के पिता के एक गहरे मित्र ग्रौर पुराने दरबारी का पुत्र है, रोज़ा के हृदय को बड़ा सहारा मिला था। वह उसे ग्रपना समझ बैठी थी ग्रौर एकान्त में उससे मिलकर ग्रपने दिल की हज़ारों बातें कहना ग्रौर उससे हज़ारों बातें पूछना चाहती थी। किन्तु जिस मंत्री ने रोज़ा से उसके पिता को छीना था, ग्रब उसी ने उस युवक को भी उससे छीन लिया। सखी की इस निराशा ने शीलिया को भी उदास बना दिया था। वह उसी समय उस युवक को क्षमादान देने की प्रार्थना करने ग्रपने पिता के पास गई तो मंत्री ने एक ऐसी बात उसे कह दी जिसे सुनने के लिए शीलिया कभी तैयार न थी। मंत्री ने कहा—बेटी ! मैंने केवल तुम्हारे हठ के कारण ग्रपने दुश्मन की बेटी को भी ग्रब तक ग्रपने राजमहल में रहने दिया, किन्तु ग्रब वह एक क्षण भी यहां न रहने पाएगी ! उसे कह दो कि ग्राज सांझ को सूरज डूबने से पहले-पहले मेरे राज्य की सीमा से बाहर हो जाए !

शीलिया ने धीमे स्वर में कहा—और यदि मैं ही उसे न जाने दूं तो ?

मंत्री ने कड़ककर कहा—तो तुम भी उसी के साथ मेरे राज्य से बाहर निकल जाओ !

मंत्री ने आवेश में आकर यह आज्ञा दे तो दी किन्तु शायद उसे यह पता न था कि उसकी बेटी उसे, उसके राज्य और सारे सुखों को लात मार सकती है किन्तु रोज़ा को कभी नहीं छोड़ सकती। पिता की आज्ञा सुनकर शीलिया को अब कुछ और सोचने की आवश्यकता न थी। उधर सांझ के समय आकाश का सूर्य इस धरती को विदा दे रहा था, इधर ये दोनों सखियां राजमहल और राजधानी को विदा दे रही थीं। राजकुमारियों के वेश में उनका बीहड़ रास्तों से गुज़रना खतरे से खाली नहीं था, अतः रोज़ा ने लम्बी होने के कारण पुरुष का वेश धारण किया और शीलिया ने ग्वालिन का। दोनों भाई और बहिन बनकर राजधानी से दूर जंगल की ओर चल पड़ीं। रोज़ा ने अपना नाम गैनीमीड और शीलिया ने ऐलिना रखा। जिन्होंने कभी महलों से बाहर पांव तक रखकर नहीं देखा था, वही राजकुमारियां आज दर-दर की खाक छानती हुईं, भूख-प्यास के दुखों को झेलती हुईं जंगल की ओर बढ़ने लगीं। न उन्हें पता था कि वे कहां से आ रही हैं और न उन्हें पता था कि वे किधर जाना चाहती हैं। उन्होंने केवल इतना सुन रखा था कि पहले वाले राजा अर्थात् रोज़ा के पिता आर्डन नामक जंगल में किसी जगह अपने संगी-साथियों के साथ रहते हैं और शिकारियों का-सा जीवन बिताते हैं। किन्तु जंगल का वह कोना कहां है इसका उन्हें कुछ पता न था।

आखिर भटकते-भटकते एक दिन वे दोनों नगर से दूर वन की सीमा के पास जा पहुंची। वहां उन्होंने क्या देखा कि एक गडरिया जंगल में भेड़ें चराकर सांझ के समय घर की ओर लौट रहा है। ये दोनों थकी-मांदी और भूखी-प्यासी तो थीं ही, गैनी-

मीड ने आगे बढ़कर उस गड़रिये से पूछा—क्यों भाई ! यहां कहीं रात बिताने को जगह मिल जाएगी। गड़रिये ने उन्हें किसी दूर गांव का बटोही समझकर उनका आदर-सत्कार किया और रात को रहने का स्थान दिया। महलों में रहते हुए शायद छाछ व बाजरे की रोटी का नाम सुनते ही नाज़ुक राजकुमारियों के पेट में शूल उठने लगते, किन्तु राह की थकान और भूख-प्यास के कारण आज यह भोजन भी उन्हें अमृत से मधुर और मक्खन से भी मुलायम लग रहा था। रात को उन दोनों ने सोचा कि साथियों की खोज करते हुए न जाने उन्हें किन कठिनाइयों का सामना करना पड़े, इसलिए उचित यही है कि कुछ दिन इसी गड़रिये की कुटिया में रहकर गांव की भाषा, गांव की चाल-ढाल और वहां के रीति-रिवाज सीख लिए जाएं, ताकि इस वेश में उन्हें कोई पहचान न सके। हो सकता है कि यहां रहते-रहते राजा के निवास स्थान का भी कुछ पता पा सकें। यह सोचकर उन्होंने गड़रिये को कुछ इनाम दिया और उसी के मेहमान बनकर उसके घर में रहने लगीं।

वहां रोज़ा को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि जगह-जगह जंगल के पेड़ों पर उसका नाम कुरेदा हुआ है और चट्टानों पर किसी ने उसका नाम ले-लेकर विरह के गीत लिखे हुए हैं। उसे संदेह हुआ कि हो न हो औरलैंडो ने ही ये लिखे हैं और वह भी यहीं कहीं इसी जंगल में होगा। एक दिन उन्हीं चट्टानों के आस-पास पागलों की तरह 'रोज़ा-रोज़ा' पुकारता हुआ औरलैंडो उसे दिखाई दे गया। अपने प्रेम में उसकी यह दशा देखकर गैनीमीड के जी में आया कि वह अभी जाकर उसे कह दे कि जिसके प्रेम में पागल हुए तुम इस प्रकार जंगलों में भटक रहे हो, वह तुम्हारे ही सामने खड़ी है, किन्तु अपने आप को प्रकट करने का अभी उचित समय न आया था इसलिए वह बड़ी मुश्किल से अपने मन की व्याकुलता को रोक सकी और पुरुष वेश में ही उसके सामने जाकर बोली—इस घने जंगल में किसे

सुनाकर तुम 'रोज़ा-रोज़ा' चिल्ला रहे हो ? कहां है वह रोज़ा ?

ग्रौरलैंडो ने सिर से पांव तक गैनीमीड को देखा ग्रौर मन ही मन सोचने लगा कि जैसे इस व्यक्ति को पहले भी मैंने कहीं देखा है। किन्तु वह यह कल्पना भी न कर सका कि वह उसी की प्रेयसी रोज़ा है। उसने ग्रपने दिल पर हाथ रखकर कहा—रोज़ा मेरे हृदय में विद्यमान है।

गैनीमीड ने सिर झुकाकर कहा—तो तुम ही हो जो पेड़ों ग्रौर चट्टानों पर रोज़ा के विरह में गीत ग्रौर गज़लें कुरेदा करते हो ? यदि तुम चाहो तो रोज़ा से मिलने का मैं तुम्हें एक उपाय बता सकता हूं।

ग्रौरलैंडो—तो जल्दी बताग्रो ! मैं ग्रपनी रोज़ा को कैसे देख सकता हूं ?

गैनीमीड ने कहा—तुम हर रोज़ इसी कुटिया में मेरे पास ग्राया करो। हम दोनों प्रेमी ग्रौर प्रेमिका का खेल खेला करेंगे। तुम तो राजकुमार ग्रौरलैंडो हो ही, मैं तुम्हारी रोज़ा बन जाया करूंगा। तुम मुझे रोज़ा समझकर उसी प्रकार मुझसे प्यार की बातें कहा करना जैसे तुम रोज़ा को कहना चाहते हो। मैं भी ग्रपने-ग्रापको रोज़ा मानकर उसी की तरह मीठी-मीठी बातें करके तुम्हारा जी बहलाया करूंगा। हो सकता है कि कभी ग्रसली रोज़ा भी तुम्हें मिल जाए।

उस समय तो ग्रौरलैंडो को इस बात का कोई खास मतलब समझ में नहीं ग्राया, किन्तु उसे ऐसा लगा जैसे ग्रब वह गैनीमीड के बिना रह ही नहीं सकता। वह प्रतिदिन उससे मिलने उसी कुटिया में ग्राने लगा ग्रौर उसे 'मेरी रोज़ा' कहकर ग्रपना जी बहलाने लगा। उसे क्या पता था कि उसके दिल की रानी सचमुच उसी की ग्रांखों के ग्रागे बैठी रहती है, किन्तु वह उसे पहचान नहीं पाता !

एक दिन जब वह रोज़ा से मिलने के लिए ग्रा रहा था तो दूर से उसे दिखाई दिया कि कोई ग्रादमी पेड़ की छाया में गाढ़ी

नींद में सोया है और एक शेरनी झाड़ी में से निकलकर बिल्ली की तरह दबे पांव उसकी ओर चली जा रही है। औरलैंडो ने ध्यान से देखा तो उसे पता चला कि यह उसी का सगा भाई ओलिवर था, जिसने उसे जीते जी मकान में जलाकर पिता की सारी संपत्ति पर अधिकार करने का षड्यन्त्र रचा था। जब वह इससे भी बच निकला तो इसी भाई ने उसे खूंखार पहलवानों से दंगल लड़ने की सलाह देकर यह सोचा कि उनके हाथों वह अवश्य मारा जाएगा और उसे अपनी मनमानी करने का अवसर मिल जाएगा। भाई के ये सब अत्याचार एक बार औरलैंडो की आंखों के सामने घूम गए, किन्तु अधिक सोचने विचारने का समय नहीं था। औरलैंडो तलवार निकालकर शेरनी पर झपट पड़ा और आन की आन में उसके शरीर के दो टुकड़े कर दिए। मरती हुई शेरनी एक बार पूरे ज़ोर से दहाड़ी और ओलिवर के पास जाकर धड़ाम से गिर पड़ी। वह हड़बड़ाकर नींद से जागा और अपने सामने जो दृश्य देखा तो उससे उसकी आंखें डबडबा आईं। वह अपने अपराध के लिए क्षमा मांगने के लिए औरलैंडो के चरणों में गिर पड़ा। औरलैंडो का शरीर काफी घायल हो चुका था, इसलिए अब वह गैनीमीड से मिलने के लिए उसकी कुटिया तक नहीं जा सका। उसने अपने भाई ओलिवर के हाथ संदेश भेजकर गैनीमीड को अपने पास बुला भेजा। उस समय गैनीमीड और ऐलिना औरलैंडो की प्रतीक्षा में बैठे थे। ऐलिना के रूप सौंदर्य को देखकर ओलिवर उस पर मोहित हो गया और बदले में ऐलिना की आंखों में भी उसने प्यार की झलक पाई। गैनीमीड को साथ लेकर वह शीघ्र ही औरलैंडो के पास पहुंचा और उसे ऐलिना से अपने प्रेम की सारी घटना कह सुनाई। यह सुनकर औरलैंडो बड़ा खुश हुआ और कहने लगा—क्या ही अच्छा होता यदि किसी दिन मेरी रोज़ा भी इसी प्रकार मुझे अचानक मिल जाती।

अब गैनीमीड से चुप न रहा गया। उसने चुटकी लेते हुए कहा—तो क्या मैं तुम्हारी रोज़ा नहीं हूं ?

औरलैंडो ने मुस्कराते हुए कहा—मेरी रोज़ा ! काश कि मैं तुम्हारे में अपनी असली रोज़ा के दर्शन कर सकता !

गैनीमीड के जी में आया कि मैं अभी प्रकट होकर कह दूं कि मैं ही तुम्हारी असली रोज़ा हूं किंतु कुछ सोचकर उसने ऐसा न किया और मन का भाव छिपाकर बोला—तो यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हारी असली रोज़ा भी बन सकता हूं ?

औरलैंडो ने चकित होकर पूछा—कैसे ?

गैनीमीड ने उसी समय पुरुष वेश उतारकर कहा—ऐसे !

इस प्रकार अचानक ही अपनी रोज़ा को सामने खड़ा देख कर पहले तो औरलैंडो को विश्वास न आया कि वह सत्य देख रहा है या स्वप्न!

उधर ओलिवर के मुंह से शीलिया ने जब सुना कि महाराज का ठिकाना भी यहां से कुछ ही दूरी पर है तो वह उसके साथ शीघ्रता से गई और महाराज को लेकर उस स्थान पर पहुंची जहां रोज़ा और औरलैंडो खड़े थे। महाराज की दाढ़ी बढ़ आई थी और उन्होंने सिर पर लंबे-लंबे बाल रखे हुए थे। इस रूप में भी रोज़ा ने उन्हें पहचान लिया और उनकी गर्दन से लिपट गई। फिर रोज़ा ने औरलैंडो, महाराज और उनके साथियों के सामने शुरू से लेकर अन्त तक अपनी रामकहानी कह सुनाई और औरलैंडो की ओर संकेत करके कहा—पिताजी! ये आपके मित्र और पुराने दरबारी रोलैंड के वीर पुत्र हैं और अब—

शीलिया ने बात पूरी करते हुए कहा—और अब आपके पुत्र बनना चाहते हैं।

जब राजा ने यह सुना कि वह युवक उसी के पुराने मित्र रोलैंड का पुत्र है तो उसे देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ और रोज़ा का हाथ पकड़कर उसके हाथ में देते हुए बोला :

'बेटी ! आज की यह बेला कितनी धन्य है कि न केवल मैं

अपनी बिछुड़ी बेटी को अपने सामने बैठी देख रहा हूं, अपितु उसे एक योग्य वर के हाथ सौंप रहा हूं।"

उसी सांझ को प्रकृति के उस सुन्दर आंगन में रोज़ा का औरलैंडो के साथ और शीलिया का ओलिवर के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। अभी नये वर-वधू एक-दूसरे के प्रति अमिट प्यार की शपथ उठा ही रहे थे कि राजधानी से एक दूत आया और राजा को प्रणाम करके उसने उसके हाथ में एक पत्र दे दिया। पत्र में लिखा था :

मेरे वीरशिरोमणि धर्मस्वरूप महाराजाधिराज !

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि जिस मोह में आकर मैंने आप-सरीखे देवतुल्य महाराज को प्रजा से बिछोह दिया था, वह मोह अब मेरे दिल से दूर हो गया है। मैं एक दिन आप ही की हत्या करने के उद्देश्य से आर्डन के जंगलों में जा रहा था कि रास्ते में एक साधु से मेरी भेंट हो गई। उस साधु के दर्शनमात्र से मेरा हृदय बदल गया और उसके ज्ञान-भरे उपदेशों ने मेरी आंखें खोल दीं। महाराज ! अब न मुझे राज्य चाहिए और न महल ! मैं अपने पाप का प्रायश्चित्त करने के लिए अपना शेष जीवन उसी साधु के चरणों में बिता देना चाहता हूं, किन्तु ऐसा करने से पहले मैं चाहता हूं कि एक बार आपके चरणों पर गिरकर आपसे अपने अपराध के लिए क्षमा मांग सकूं और राज्य की प्रजा को उनका सच्चा राजा दिला सकूं।

संक्षेप में आपसे यही प्रार्थना है कि पत्र पढ़ते ही आप शीघ्र राजधानी में लौटने की कृपा करें।

आपका क्षमाप्रार्थी,
वज़ीर

इस समाचार ने विवाह के शुभ अवसर को और भी सुखमय बना दिया। सचमुच यह घड़ी कितनी सौभाग्यशालिनी थी जिसमें बिछुड़े पिता पुत्रियों से, बिछुड़े प्रेमी प्रेमिकाओं से और बिछुड़े मित्र मित्रों से मिले।

10. एथेन्स का राजा—तिमन

(Timon of Athens)

वह बनिया क्या जो कंजूस न हो और वह राजा ही क्या जो फिज़ूलखर्च न हो ! तिमन भी राजा था और फिज़ूलखर्च इतना कि कुछ पूछो ही नहीं। जहां एक खर्चना होता वहां हज़ार और जहां हज़ार खर्चने होते वहां लाख, फिर भी उसके मन में यह अरमान शेष रह जाता कि परमात्मा ने उसे दौलत लुटाने के लिए दो ही हाथ क्यों दिए हैं, सौ क्यों नहीं दिए ? वह लुटाता, लुटाता और इतना लुटाता कि लेनेवाले थक जाते, किन्तु तिमन बस करने का नाम तक न लेता। अंधा क्या चाहे, दो आंखें ! ऐसे दरियादिल राजा को पाकर खुशामदियों की भी खूब बन आई। जिन्हें कभी पेट-भर रोटी भी नसीब न होती थी वही आज तिमन के दरबारी बने बैठे थे। जो जितना अधिक फिज़ूल खर्च था, राजा ने उसे 'उदार-हृदय' कहकर उतना ही बड़ा अधिकार दरबार में दे रखा था। उदाहरण के लिए उसने एक ऐसे व्यक्ति को प्रधानमन्त्री बना रखा था जो साठ सेठों का ऋणी था, सत्तर व्यापारियों के ऋण से दबा हुआ था और निन्यानबे नाइयों से मुफ्त हजामत करवा चुका था और अभी तक किसी को एक कौड़ी भी न दी थी। इसी प्रकार उसने अपना उप-प्रधानमन्त्री एक ऐसे व्यक्ति को नियुक्त कर लिया था जिसमें यह विशेष गुण था कि वह सदा राजा साहब की मनपसन्द बात कह सकता था। उदाहरण के लिए, जब वह पहली बार राजा साहब के दरबार में आया तो उसने लम्बा सलाम करके राजा तिमन की प्रशंसा में यह छन्द गाकर सुनाया था :

मोटर भागे, गाड़ी भागे।
राजा तिमन सभी से आगे ॥ 1 ॥

'बड़ा' कहा अपने को जिसने ।
राजा तिमन उसीसे तिगुने ।। 2 ।।

एक का मन होता सब का ।
किन्तु हमारा शाह तिमन का ।। 3 ।।
तिमन नाम ही तीनों मनों का ।
क्या कहना है शेष गुणों का ।। 4 ।।

सबसे बड़े तिमन हैं दाता ।
कोई बही, न कोई खाता ।। 5 ।।
सो-सोकर सब दानी जागे ।
दाता तिमन सभी से आगे ।। 6 ।।

इस छन्द का सुनना था कि राजा साहब 'वाह-वाह' पुकारते हुए सिंहासन से उठ खड़े हुए। अपने हाथ से उसी समय उसे उप-प्रधानमन्त्री की कुर्सी पर बिठाया। यह तो उनकी उदारता की एक साधारण-सी घटना है। ऐसी बीसियों घटनाएं प्रतिदिन उनके दरबार में हुआ करती थीं। बीसियों भिखारी दरबारी बनाए जाते और सैकड़ों फटेहालों को इनाम देकर उन्हें निहाल किया जाता। एक बार कौड़ीमल ने आकर दरबार में फरियाद की—महाराज ! मैं सेठ करोड़ीमल की लड़की से प्यार करता हूं और चाहता हूं कि उसीके साथ मेरा ब्याह हो। सेठ की लड़की भी मुझे चाहती है किन्तु हम दोनों का ब्याह होने में सबसे बड़ी कठिनाई यह कि मेरे पास सेठ करोड़ीमल जितना पैसा नहीं। उसकी यह शर्त है कि अपनी लड़की का ब्याह वह मेरे साथ तभी करने को राज़ी हो सकता है जब कि मेरे पास भी एक बंगला हो, गाड़ी हो, नौकर-चाकर हों और बैंक में उतना ही रुपया जमा हो जितना कि स्वयं सेठ का जमा है।

कौड़ीमल की यह बात सुनते ही राजा साहब चिल्ला उठे—वाह रे शेरदिल! आदमी हो तो ऐसा! तेरे जैसे उदार व्यक्तियों के लिए तो मैं सारा खजाना लुटाने को तैयार हूं

जा, खज़ानची से तीन लाख रुपये ले जा और आज ही जाकर सेठ करोड़ीमल की लड़की से ब्याह का निश्चय कर आ ! जब तेरा ब्याह हो जाए तो मेरे पास आना। तेरे जैसे उदार व्यक्तियों की मुझे दरबार में बड़ी आवश्यकता है।

ऐसे कई कौड़ीमल राजा की कृपा से करोड़ीमल बन चुके थे किन्तु अब राजा का खज़ाना खाली होता जा रहा था। एक दिन जब राजा तिमन ने एक परदेशी को एक बिलकुल सफेद घोड़ा भेंट करने के उपलक्ष्य में पचास हज़ार रुपये पुरस्कार में देने की आज्ञा दी तो कोषाध्यक्ष राजा के दरबार में उपस्थित हुआ और बोला—महाराज! राज्य का कोष तो खाली हो चुका है। इस परदेसी को पचास हज़ार रुपया कहां से दिया जाए ?

राजा ने अभिमान के साथ कहा—तो यह शाही जायदाद किसलिए पड़ी है ! जायदाद की कुछ भूमि बेच दी जाए और उस रुपये में से इस परदेसी को पुरस्कार दिया जाए।

कोषाध्यक्ष ने और भी नम्र स्वर में कहा—अन्नदाता, शाही जायदाद का अधिकतर भाग तो पहले ही लोगों को दान में दिया जा चुका है और जो थोड़ा-बहुत शेष है उसे बेचकर इतना धन भी प्राप्त नहीं हो सकता जितने से इस परदेसी के इनाम की राशि भी पूरी की जा सके।

तिमन ने चौंककर कहा—तो क्या सरकारी जायदाद भी बिक चुकी है ?

कोषाध्यक्ष ने कहा—हां महाराज ! अब तिमन ने आज्ञा दी— जाओ! मेरा नाम लेकर राज्य के किसी सेठ से रुपया उधार ले आओ और इस परदेसी को पुरस्कार देकर प्रसन्न करो।

कोषाध्यक्ष राजा का संदेश लेकर एक-एक दरबारी और एक-एक सेठ के द्वार पर पहुंचा किन्तु जिसने भी सुना कि राजा दीवालिया हो गया उसीने कोई न कोई बहाना बनाकर उधार देने में अपनी असमर्थता प्रकट कर दी। सेठ लूशियस ने दरवाज़े पर खड़े-खड़े कोषाध्यक्ष से कह दिया—भाई, तुम आए भी तो

बहुत देर से ! कल सांझ को ही मैं तीन करोड़ का एक सौदा कर चुका हूं इसलिए अब राजा साहब की सहायता करने को मेरे पास चांदी का एक रुपया भी नहीं है। मेरी ओर से राजा साहब को निवेदन कर देना कि उनके उपकार बड़े हैं किंतु इस समय मैं उनकी सहायता करने में बिलकुल असमर्थ हूं।

एक दूसरे रईस ने भी, जिसे राजा तिमन ने एक कहार की हालत से उभारकर लाखों का मालिक बनाया था और जिसे वह स्नेह से 'बेटा' कहकर पुकारा करता था, कोषाध्यक्ष को दाढ़ी को हाथ लगाकर उसके कान में कह दिया—राजा साहब से कह देना कि रईस तो घर पर मिले ही नहीं। परदेस के दौरे पर गए हुए हैं। पता नहीं कब लौटेंगे।

एक नहीं, दो नहीं, तीन नहीं, कोषाध्यक्ष जितने भी शहरियों के पास रुपये का सवाल लेकर गया उतनों ने ही उसे टका-सा जवाब दिया और वह बेचारा निराश होकर राजा के पास जा कर बोला—महाराज! रेत को निचोड़ने से तेल नहीं निकल सकता। मैं एक-एक नागरिक के पास गया। जो आपने अपने घनिष्ट मित्र बताए थे, मैं उनके पास भी गया।

राजा पर मानो किसीने घड़ों पानी उडेल दिया हो। वह कुछ खिसियाकर बोला—तो क्या सबकी आंखें बदल गईं !

कोषाध्यक्ष ने आंखें नीची करके कहा—महाराज! यह सब दिनों का फेर है।

राजा लहू का घूंट पीकर रह गया। उसके जी में आया कि अभी हाथ में कटार लेकर निकल पड़ूं और एक-एक अमीर की छाती में घुसेड़कर पूछूं—बताओ कृतघ्नों, लालची कुत्तों ! क्या मेरे उपकारों का यही बदला है ? वे तुम्हारी खुशामदें, व प्रशंसा-भरे गीत और वह मेरी वाहवाही, क्या वे सब मुझसे मेरी सम्पत्ति लूटने के ही हथकंडे थे तुम्हारे ! तुमने रिस-रिस-कर मेरा लहू चूसा है, आज मैं इस कटार से उस लहू की नदी बहा देना चाहता हूं। कृतघ्नता से भरे रक्त का स्थान हृदय-सी

कोमल वस्तु में नहीं होता !

इस प्रकार बड़बड़ाता हुआ राजा अपने आसन से उठ खड़ा हुआ किन्तु थोड़ी देर बाद ही उसके मन में एक विचार उपजा।

प्रातःकाल हुआ तो नगर में एक अनोखी चहल-पहल थी। दो दिन पहले जिस नगर में मुर्दानगी-सी छा गई थी, आज वहां फिर सजीवता के लक्षण दिखाई देने लगे थे। इस आकस्मिक परिवर्तन का कारण था राजा की एक घोषणा। राजा तिमन ने अन्तिम बार अपने नगर के अमीरों और वज़ीरों को एक शानदार दावत पर बुलाने की घोषणा कर दी थी। इसमें उसने नगर के माने हुए अमीरों, दरबारियों और अपने पुराने मित्रों को विशेष रूप से आमंत्रित किया था। घोषणा सुनकर खुशामदियों की आंखें एक बार फिर वैसे ही चमकने लगीं जैसे शिकार को देखकर बाघ की चमकती हैं। दावत में वे लोग भी आए जिन्होंने राजा का संदेश पाकर कल साफ 'न' कह दी थी, और वे लोग भी आए जो कल राजा को 'फिज़ूलखर्च' होने का फतवा दे रहे थे। वे खुश थे कि एक बार फिर वे राजा से पुरस्कार की बड़ी-बड़ी रकमें पा सकेंगे और उसकी चमड़ी उधेड़कर अपनी खाल पर चिपका सकेंगे। यदि उन्हें कोई अरमान था तो केवल यही कि कल उनके मुंह से 'नहीं' क्यों निकल गई ? क्या राजा ने यह सब चाल उनकी परीक्षा लेने के लिए चली थी ? यदि कल वे उसका संदेश पाकर उसे सचमुच दीवालिया न समझते और रुपया उधार दे देते तो सस्ते में ही वे राजा को अपने एहसानों से लाद सकते थे और छाती फुलाकर कह सकते थे कि 'हम आपके वफादार मित्र हैं। हमने विपत्ति में आपका साथ दिया है।' बस, फिर अपनी-अपनी वफादारी का रंग जमाकर दुगुने-तिगुने वसूल कर लेते और उस पर एहसान अलग लादते। एक ने कहा—अरे भाई ! अब भी क्या बिगड़ा है! राजा को खुश करना भी क्या कोई बड़ी बात है! काश्मीर के दो कालीन दे दो, अरब का एक घोड़ा नज़र कर दो और प्रशंसा की दो बातें कह दो तो राजा

फिर अपने ही अपने हैं।

लोगों ने उस बातूनी की हां में हां मिलाई और लालच-भरी आंखों से दावत की मेज़ों की ओर देखने लगे। पहले की तरह प्रत्येक अतिथि के सामने हाथी-दांत की एक-एक मेज़ रखी थी और रंगदार मोटे अंगोछों के नीचे प्लेटें और प्यालियां सजी हुई दिखाई दे रही थीं। प्लेटों के अनुमान से ही अतिथियों के मुंह में पानी भर रहा था कि शायद इन प्लेटों में मीठा पुलाव, गरमा-गरम और मसालेदार स्वादिष्ट मिठाइयां होंगी। इतने में राजा तिमन ने आंगन में प्रवेश किया और उसका संकेत पाते ही नौकरों ने मेज़ों पर से अंगोछे सरका दिए। दरबारी लोग इसी आंगन में और इन्हीं टेबलों पर दावतें उड़ाने के आदी हो चुके थे, इसलिए अंगोछे सरकते ही उनके हाथ प्लेटों की ओर बढ़े किन्तु दूसरे ही क्षण उनकी आंखें प्लेटों पर पड़ीं तो उनके हाथ जहां तक पहुंचे थे वहीं के वहीं जमे रह गए। आज वहां चीनी की चमचमाती प्लेटें न थीं और न ही उनमें सुगन्धित लपटों वाले पुलाव और मिठाइयां थीं। इनके बदले आज टेबलों पर मिट्टी के दो-दो प्याले पड़े थे। एक में हड्डी का एक टुकड़ा और दूसरे में चुल्लू भर पानी। अतिथियों को पत्थर की मूर्ति की तरह स्तब्ध बैठे देखकर राजा ने गरजकर कहा—कुत्तो! लालचियो! खाते क्यों नहीं! तिमन के पास जब तुम्हें खिलाने को पुलाव और मिठाइयां थीं तब उसने तुम्हें पेट-भर खिलाईं। अब उसके पास तुम्हें खिलाने को अपने शरीर की हड्डियां ही बाकी हैं। लालची कुत्तो ! खाते क्यों नहीं !

अब अमीर-वज़ीरों को काटो तो लहू नहीं। अपनी कृतघ्नता के कारण वे राजा के सामने आंखें मिलाने का साहस कैसे कर सकते थे? जिसे जिधर रास्ता मिला उधर ही दुम दबाकर भागा।

यह राजा तिमन का अन्तिम निमन्त्रण था और अमीर-वज़ीरों की यह अन्तिम दावत !

11. कर्कशा का सुधार

(The Taming of the Shrew)

कैथेरीना अमीर घराने की लड़की थी। उसकी आयु उन्नीसवें वर्ष को पार कर चुकी थी किन्तु अभी वह कुंआरी ही थी। उसके साथ की लड़कियों के गौने भी कभी के हो चुके थे किन्तु उसकी अभी सगाई भी न हुई थी। कोई भी युवक उससे विवाह करने का साहस न करता था। यह बात नहीं कि वह सुन्दरी न थी। उसकी हरिणी-सी बड़ी-बड़ी काली आंखें, फूलों से गुलाबी दो होंठ, चांद-सा उसका गोल चेहरा और उस पर लटकते हुए घुंघराले बालों को देखकर उसे कुरूप नहीं कहा जा सकता था। फिर भी आज तक किसी युवक ने उससे विवाह करने का प्रस्ताव न रखा था। इसका एक विशेष कारण था। उसके रूप की ओट में छिपी हुई उसकी चुभीली वाणी उतनी ही कड़वी थी जितना सुन्दर उसका रूप। मानो गुलाब की कलियों में छिपकर विषधर सांप बैठ गया हो। उसके इस दोष के आगे उसका रूप, उसका सौन्दर्य और उसके पिता की अतुल संपत्ति, सब फीके जान पड़ते थे। उसकी ज़ुबान छुरी से भी तेज़ और करेले से भी कड़वी थी। मुहल्ले की स्त्रियां कहतीं कि देवताओं का प्रकोप है। सहेलियां कहतीं कि नहीं, उसे अपने रूप पर घमंड है। इसीलिए युवक उससे कतराते थे, बूढ़े उस पर बड़बड़ाते थे और मुहल्ले वाले उसे मुंह न लगाते थे। उसका पिता, बेपतिस्ता यह सब देखता तो अपना माथा पीट कर रह जाता। लोग उसकी दशा पर तरस खाते किन्तु इस विषय में उसकी कोई सहायता न कर पाते। वास्तव में कैथे-रीना से सब ही डरते थे। यदि वह अविवाहिता रह गई थी तो बेपतिस्ता को इसका रत्ती-भर भी अरमान न था। उसे चिन्ता थी तो अपनी छोटी लड़की के विवाह की। बड़ी बहिन

के घर में अविवाहिता रहते भला छोटी बहिन से ब्याह करने को कौन राज़ी होगा ? यही सोच-सोचकर बेचारा बेपतिस्ता अपने दुर्भाग्य को कोसा करता था। वह रोज़ सवेरे जागता तो भगवान से प्रार्थना करता—हे भगवान ! या तो तू मुझे संतान देता ही नहीं और यदि दी थीं तो उसे मीठी वाणी भी देता। तेरे घर में किसी वस्तु का घाटा नहीं। कोई ऐसा चमत्कार कर दे कि कैथेरीना की वाणी सुधर जाए और मैं किसी भले पुरुष के साथ उसका ब्याह रचा सकूं।

भगवान के कानों तक बेपतिस्ता की यह प्रार्थना पहुंची या नहीं किन्तु एक चमत्कार अवश्य हो गया। एक दिन एक मन-चला युवक बेपतिस्ता के पास आया और बोला—मैं आपकी लड़की से विवाह करना चाहता हूं और जानना चाहता हूं कि दहेज़ में आप मुझे कितना रुपया देंगे।—पहले प्रश्न में ही इतनी स्पष्ट और निश्चय की-सी बात सुनकर बेपतिस्ता को कुछ भ्रम हुआ कि कहीं वह युवक भूल से तो उसके घर नहीं आ गया क्योंकि उसे विश्वास ही न आता था कि कोई भला-मानुष उसकी लड़की से ब्याह करने का कभी नाम भी ले सकता है। इसलिए बात को और स्पष्ट करने के विचार से उसने पूछा—युवक ! तुम कौन हो, कहां से आए हो और क्या पहले भी मेरी लड़की के विषय में कुछ जानते हो ?

युवक ने बड़ी तत्परता से सिर हिलाकर कहा—जी हां, मैं उनके विषय में खूब अच्छी तरह जानता हूं। कैथेरीना हैं और मैं उन्हें अपने दिल की रानी बनाना चाहता हूं। उनके रूप और सौंदर्य की प्रशंसा मैंने बहुतेरों के मुंह से सुनी है। उन्हीं गुणों से खिचकर मैं सैकड़ों मील की दूरी से यहां आया हूं।

बेपतिस्ता को अब भी संदेह था कि शायद युवक भूलकर ऐसी बातें कह रहा है। उसने एक बार युवक को सिर से पांव तक देखा और पूछा—बेटा ! तुम्हारा नाम क्या है ?

युवक ने एक ही सांस में कह डाला—श्रीमान ! मैं अपना

परिचय देना तो भूल ही गया। क्षमा कीजिए मेरा नाम पेट-रूशियो है और मैं अपने पिता का इकलौता बेटा हूं। उनके पीछे उनकी सारी संपत्ति का मैं ही उत्तराधिकारी हूं और चाहता हूं कि किसी सुशीला युवती को अपनी जीवनसंगिनी बनाऊं। इसी उद्देश्य से मैं आपके चरणों में उपस्थित हुआ हूं। यदि आप मुझे अपनी पुत्री के योग्य समझें तो अपनी स्वीकृति देकर अनुग्रहीत करें।

बेपतिस्ता ने कहा—पेटरूशियो ! मैं कैथेरीना को बुलाकर उससे तुम्हारा परिचय करवा देता हूं। तुम स्वयं उससे बात करके देख लो और फिर मुझे बताओ कि विवाह के सम्बन्ध में तुम दोनों का क्या विचार है ? यदि तुम दोनों एक-दूसरे से सहमत हो सको तो इससे बढ़कर मेरा सौभाग्य क्या हो सकता है ?

सेजै कोई सफल शिकारी शिकार करने से पहले मन ही मन कई बार सोच लेता है कि वह कब वार करेगा और कब कैसा बचाव, उसी प्रकार पेटरूशियो ने भी कैथेरीना के आने से पहले मन में बिठा लिया कि वह कैसे उसका स्वागत करेगा, कब कौन-सी बात कहेगा और कब कौन-सा प्रश्न करेगा ? कैथे-रीना के कमरे में प्रवेश करते ही वह इस प्रकार हड़बड़ाकर उठ खड़ा हुआ जैसे कोई भक्त स्वर्ग की देवी को सहसा सामने खड़े देखकर हड़बड़ा उठता है और बड़ी नम्रता से बोला—आओ, मेरे हृदय की रानी ! मैं कब से तुम्हारी राह में पलकें बिछाए बैठा हूं। कैथेरीना ने शेरनी की तरह गरजकर कहा—बंद करो बकवास ! बताओ, मुझे तुमने किसलिए यहां बुलाया है ? पेटरूशियो ने ऐसा बहाना किया कि मानो वह मीठे शरबत के घूंट भर रहा हो और आनन्द-विभोर होते हुए-से उसने कहा—सुभाषिनी, तुम्हारी इस अमृत मधुर वाणी को सुन कर मुझे दुनिया से ईर्ष्या होने लगी है। मैं चाहता हूं कि तुम्हारे एक-एक शब्द को कानों से पी जाऊं। रानी! धीरे-धीरे बोलो!

कहीं तुम्हारे कोमल होंठों को पीड़ा न होने लगे ! यह सुनकर कैथेरीना ने क्रोध से माथे पर त्यौरियां चढ़ा लीं और घूर-घूर-कर उस बकवासी की ओर देखने लगी। पेटरूशियो ने इसका भी स्वाद लेते हुए कहा—इतना रूप ! इतना सौन्दर्य ! लोग तभी तुम्हारे रूप की प्रशंसा किया करते हैं।

खुशामद की हद हो चुकी। इन अन्तिम वचनों को सुनते ही कैथेरीना खिलखिलाकर हंस पड़ी। यह उसकी पहली हार थी। दूर खड़े बेपतिस्ता ने देखा कि पहली बार उसकी कैथेरीना किसी युवक के सामने मुस्कराई है और उससे घुल-मिलकर बात कर रही है ! यह देखकर उसके आनन्द की सीमा न रही और कहीं यह दृश्य स्वप्न न हो जाए यह सोचकर उसने उसी समय बाजे और शहनाइयां बुलाकर पेटरूशियो के साथ कैथे-रीना के विवाह की घोषणा कर दी। यह पेटरूशियो की पहली जीत थी।

यह सब अनायास ही नहीं हो गया। इसके लिए पेटरूशियो को बड़ी तपस्या करनी पड़ी थी। वह दूर देश का एक परदेशी था और अपने व्यंग्यों तथा खुशमिज़ाजी के लिए प्रान्त-भर में प्रसिद्ध था। उसने कैथेरीना के चिड़चिड़ेपन और कैंची-सी ज़ुबान के विषय में बहुतों के मुंह से सुना था। वह यह सहन न कर सकता था कि इतने सौन्दर्य की स्वामिनी लड़की इतनी बदमिज़ाज हो। तभी उसने प्रतिज्ञा की कि यदि वह विवाह करेगा तो कैथेरीना से ही, और विवाह भी तब जबकि वह स्वयं उसके लिए आंसू बहाकर उसे याद करेगी। इसके लिए उसने अपनी सारी कला, अपनी सारी खुशमिज़ाजी और अपनी सारी हाज़िरजवाबी को लगा देने की ठान ली थी। वह कैथेरीना के प्यार को जीतने के लिए घर से निकल पड़ा। उसकी एक-एक बात, एक-एक मुस्कान और आंख की एक-एक झपक के पीछे एक गहरी योजना थी। उसी के परिणामस्वरूप वह आज कैथे-रीना के हृदय में अपनी जीत का बिगुल बजा सका था। और

बेपतिस्ता के आंगन में विवाह की शहनाइयां बज सकी थीं। यह उसकी योजना का पहला अंश था। अभी कैथेरीना की कड़वी ज़ुबान से अमृत की वर्षा करवाना तो शेष ही था। अतः उसकी असली योजना तो अब आरम्भ हुई।

उसने बेपतिस्ता के पास जाकर कहा—आप जानते ही हैं कि मैं कैथेरीना को कितना अधिक प्यार करता हूं। मैं उसे घर की रानी और दिल की मलिका बनाना चाहता हूं। जीवन में शादी बार-बार नहीं हुआ करती, इसलिए मैं इस शुभ अवसर को बड़ी धूम-धाम से मनाना चाहता हूं। आप थोड़ी देर प्रतीक्षा करें, मैं अपनी कैथेरीना को गहनों से ऐसे लाद दूंगा जैसे वसंत में अनार के पेड़ फूलों से ढक जाते हैं। मैं उसे मखमल के दुशालों में ऐसे सजाकर रखूंगा जैसे बरसात में वीरबहूटी। आप थोड़ी देर तक प्रतीक्षा करें, मैं अभी सब सामान लेकर उपस्थित होता हूं।

वह कहने को तो कह गया कि अभी आता हूं किन्तु कई घंटे बीत जाने पर भी न तो उसका 'अभी' आया और न ही वह स्वयं। विवाह का मुहूर्त भी आ पहुंचा, घर-बार भी सज गया, पादरी भी बुला लिए गए और बाजों की ध्वनि से सारा आंगन भी गूंज उठा किन्तु पेटरूशियो लौटता दिखाई न दिया। अब कैथेरीना को भी चिन्ता हुई। वह रह-रहकर सोचने लगी कि कहीं वह मुझसे झूठा वायदा करके तो नहीं चला गया। यदि वह लौटकर न आया तो मैं क्या करूंगी ! सब लोग मेरी ओर अंगुली उठा-उठाकर कहेंगे कि यही वह लड़की है जिसे उसका मंगेतर विवाह के समय छोड़कर चला गया। मुहल्ले की स्त्रियां कानाफूसी करके मेरे विषय में बातें करेंगी यह सोचकर वह बार-बार उसी ओर देखने लगी जिस ओर से युवक ने आने को कहा था। देखते-देखते उसकी आंखें थक गईं, फिर भी जब वह न आया तो कैथेरीना ने निराश होकर अपना सिर एक सखी के कंधे पर टिका दिया और फूट-फूटकर रोने लगी।

ठीक उसी समय पेटरूशियो ने आंगन में प्रवेश किया मानो वह वहीं कहीं छिपकर कैथेरीना के आंसू ढुलकने की प्रतीक्षा कर रहा था और अपने लिए कैथेरीना की उत्कंठा को जगाने के लिए उसने जान-बूझकर देरी की हो। कुछ भी हो, इतनी देर तक राह देखने के बाद अब पेटरूशियो उसे एक अनमोल वस्तु के समान दिखाई देने लगा और वह समझने लगी कि पेटरूशियो को उसकी इतनी आवश्यकता नहीं, जितनी कि उसे पेटरूशियो की है। इसीलिए वह विवाह के वचनों को भी मुंह सम्भालकर बोल रही थी कि कहीं उसके मुंह से कोई कर्कश स्वर न निकल जाए; उससे अप्रसन्न होकर वह कहीं फिर उसे छोड़कर न चला जाए। यह सब पेटरूशियो की बनाई हुई योजना का फल था। इसका कैथेरीना की चाल-ढाल और बोल-चाल पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसे वह उसी होशियारी के साथ देख रहा था, जैसे बिल्ली चूहे की एक-एक हरकत को देखती है और उसके अनुसार अपना दांव लगाती जाती है।

आखिर विवाह समाप्त हुआ और पेटरूशियो क्षण-भर भी प्रतीक्षा किए बिना वहां से जाने को तैयार हो गया। लोगों ने बड़ा समझाया कि विवाह के बाद इतनी जल्दी वर-वधू को विदा करने का रिवाज़ नहीं, इसलिए यदि दो दिन नहीं तो केवल दोपहर या दो घड़ी ही रुक जाओ; किन्तु पेटरूशियो ने कहा —नहीं, मैं तो अभी जाऊंगा और कैथेरीना को भी इसी क्षण मेरे साथ जाना होगा।—बेचारे बेपतिस्ता को इतनी परेशानी के बाद एक ही तो दामाद मिला था। उसकी नज़ाकतों को वह कैसे न मानता किन्तु अब तो कैथेरीना के मुंह पर भी ताले पड़ गए थे। वह डर रही थी कि उसने पति की इच्छा के विरुद्ध तनिक भी आवाज़ उठाई तो वह उसे छोड़कर चला जाएगा। इसलिए वह ऐसे ही चुपचाप मुंह लटकाए उसके पीछे-पीछे चल दी, जैसे कसाई के पीछे बलि की भेड़ चलती है। यह परिवर्तन

देखकर सब लोग दांतों तले अंगुली दबा रहे थे और स्वयं बेप-तिस्ता हैरान हो रहा था कि उसकी जो बेटी अपने सामने बोलनेवाले का मुंह नोचकर रख देती थी, उसके स्वभाव में अचानक यह परिवर्तन कैसे आ गया ! लोगों की हैरानगी को देखकर पेटरूशियो ने मन ही मन कहा—अभी इन्होंने मेरा चमत्कार देखा ही कहां है ! मैं इसे अपने इशारे पर पुतली की तरह नचाकर न बताऊं तो मेरा नाम पेटरूशियो नहीं।

फिर क्या था, वह अपनी नई बहू को साथ लेकर अपने घर की ओर चल दिया। रास्ता दूर था और पथरीला, इसलिए उसने दो बढ़िया घोड़े मंगवाए। घोड़े सचमुच चुने हुए और अव्वल नंबर के थे; किन्तु पेटरूशियो ने यह कहकर घोड़ों को वापस लौटा दिया कि ये चलते समय दुम क्यों हिलाते हैं ! कैथेरीना उन घोड़ों को तरसती आंखों से देखती रही और जब उसने देखा कि आए हुए घोड़े सचमुच लौटाए जा रहे हैं तो थकी आवाज़ में बोली—तो क्या पैदल ही चलना होगा ?—पेटरूशियो ने इसके उत्तर में ऐसी शक्ल बना ली जैसे कि उसे कैथेरीना पर बड़ा तरस आ रहा हो और प्यार-भरे स्वर में बोला—भला मैं फूलों-सी कोमल अपनी रानी को ऐसे गंवार घोड़ों पर कैसे सवारी करने देता जिन्हें ठीक तरह पूंछ हिलाना न आता हो।—अब और चारा ही क्या था ! जिस बेचारी कैथेरीना ने महलों से बाहर पांव तक रखकर न देखा था, उसी ने वह सारा लम्बा पथरीला रास्ता पैदल तय किया। उसके पांव में छाले पड़ गए, टांगें दुखने लगीं, किन्तु एक बार उसने ज़बान हिलाकर 'उफ' तक न की। उसकी बेबसी को देखकर पेटरूशियो को भी दया आ रही थी, किन्तु वह यही सोचकर चुप था कि इसका और इलाज ही क्या है !

थकी-मांदी, भूखी-प्यासी गिरती-पडती कैथेरीना जब ससुराल पहुंची तो अपनी नई मालकिन की खुशी में सब नौकर-चाकर इकट्ठे हो गए। श्री पेटरूशियो ने बड़ी अकड़ के साथ

उनकी ओर देखते हुए कहा—अरे भाई, खड़े देखते क्या हो ! मालकिन के लिए गुलाब का शरबत लाओ, नमकीन समोसे लाओ, चटपटी चटनी लाओ, ताज़े फलों, पकवान और मिठा-इयों से बाज़ार भरा पड़ा है, ले क्यों नहीं आते ? जानते नहीं, मालकिन थककर आई हैं और उन्हें भूख लगी है।

मुंह से बात निकालने की देर थी कि नौकरों में भगदड़ मच गई। कोई बाज़ार की तरफ भागा, कोई रसोईघर में लपका और कोई अन्य कामों में लग गया। सारे महल में भगदड़ मच गई। बात की बात में सब वस्तुएं हाज़िर हो गईं। अगरबत्तियों की भीनी-भीनी गंध, मिठाइयों की खस्ता खुशबू और समोसों की महक से आंगन भर गया। इधर मिठाइयों की यह खुशबू और उधर कैथेरीना के पेट में चमकती हुई भूख ! मिठाइयों को देख-देखकर उसके मुंह में पानी भर रहा था और वह सोच रही थी कि अभी पेटरूशियो की आंख का इशारा होगा और ये मिष्ठान्न मेरे सामने परोस दिए जाएंगे। फिर मैं तीन दिन की सारी भूख की कसर निकालूंगी। सबसे पहले तो शरबत पिऊंगी क्योंकि मुझे सख्त प्यास लगी है, फिर समोसे खाऊंगी। समोसों से जी भर गया तो दूसरी मिठाइयां खाऊंगी। चटपटी चटनी मुंह करारा करने के लिए सबसे अन्त में खाऊंगी।

कैथेरीना ने जैसा सोचा था ठीक वैसा ही हुआ। एक-एक करके सब मिठाइयां उसके सामने परोस दी गईं। कैथेरीना ने लालच-भरी निगाहों से एक बार सब तश्तरियों को देख डाला। सब ओर घूमकर उसकी निगाह बर्फ से भी उजले, रुई से भी नरम और शहद से भी मीठे केकों पर अटक गई। वह उन्हींकी ओर टकटकी लगाए देख रही थी और शायद एक केक उठा-कर खाने के लिए मुंह खोल रही थी कि उसे थाल के गिरने की झन्न-सी आवाज़ सुनाई दी। उसने चौंककर देखा तो शर-बत का मर्तबान फर्श पर लुढ़का पड़ा था और पेटरूशियो आंख लाल करके एक नौकर को कह रहा था—इससे अच्छा है कि

जोहड़ का पानी लाकर गिलास में भर दो! —कैथेरीना के देखते-देखते ही नौकर शरबत का मर्तबान उठाकर ले गए। वह बेचारी सूखे होठों को जीभ से चाटकर रह गई और कुछ कह न सकी।

पेटरूशियो का क्रोध अभी ठंडा न हुआ था। उसने जिस चीज़ को भी चखा उसीमें कोई न कोई दोष निकालकर फिंकवा दिया।

'केक-पेस्टरी की चासनी पतली है।'

'केक-पेस्टरी में चांदी के वर्क नहीं लगाए गए।'

'मिठाई की टुकड़ियां एक-सी नहीं काटीं।'

'चटनी का रंग बिलकुल हरा क्यों नहीं ?'

'पकवान कच्चे रह गए हैं।'

कैथेरीना के देखते-देखते मिठाइयों की प्लेटें कुत्तों के सामने फिंकवा दी गईं। उनकी महक ने उसकी भूख को और भी भड़का दिया था। उसका बस चलता तो कुत्तों के मुंह से छीनकर भी समोसे खा जाती। मिट्टी से सने केक उठाकर निगल जाती। पैरों तले रौंदे हुए पकवान को उठाकर चबा जाती। लेकिन लाज के मारे बेचारी कुछ न कर सकी।

रात को जब सोने का समय आया तो पेटरूशियो ने यह कहकर चादर फिंकवा दी कि इसमें नील कम लगा है। और यह कहकर चारपाई हटवा दी कि चूं-चूं करती है। बेचारी कैथेरीना ने सारी रात धरती पर बैठकर ऊंघते हुए बिता दी। बेचारी को खाने को न मिला, न पीने को और न सोने को। और उल्टा पेटरूशियो का एहसान भी उसी पर। वह हर बात में दोष निकालकर अपने नौकरों को डांटता—फूलों-सी कोमल तुम्हारी मालकिन क्या ऐसी घटिया चीज़ें खा सकती है ? उसके पेट में पीड़ा होने लगेगी। उसका गला बिगड़ जाएगा। ले जाओ इन चीज़ों को और शाही खाने तैयार करके लाओ!

नौकर बढ़िया से बढ़िया चीज़ें लाते लेकिन पेटरूशियो को कोई भी चीज़ कैथेरीना के लायक न दीख पड़ती। इस तरह

करते-करते तीन दिन बीत गए। कैथेरीना मन ही मन सोचती कि मेरे बाप के घर में इतनी जूठन बचती थी कि भिखारियों की झोलियां भर जाती थीं लेकिन यहां एक-एक घूंट और एक-एक ग्रास के लिए मुझे तरसना पड़ रहा है।

भूखे, प्यासे और जागते रहकर कैथेरीना की अकड़ बहुत-कुछ कम हुई। चौथे दिन पेटरूशियो ने अपने नौकरों को अकेले में बुलाकर समझा दिया कि :

'आज जो दाल बनाओ उसमें नमक बिलकुल न डालो।'

'आज जो सब्ज़ी पकाओ उसे जान-बूझकर कच्चा रखो।'

'आज जो रोटी बनाओ उसे जान-बूझकर जला दो।'

चौथे दिन जब थालियां परोसी गईं तो पेटरूशियो नौकरों की प्रशंसा किए न थकता था। वह जिस चीज़ को हाथ लगाता उसी की तारीफों के पुल बांध देता।

'वाह-वाह, भाई साग बना है तो आज। जी चाहता है कि अंगुलियां भी काटकर खा जाऊं।'

'दाल में नमक-मिर्च इतना बढ़िया है कि पुडिंग से स्वादिष्ट बन गई है।'

'चपातियां तो जैसे आग पर पकाई हुई दीखती ही नहीं ! मानो चांद की चांदनी में पकाई हों और तारों के अंगारों पर सेंकी हों। सिकने का निशान तक नहीं है।'

यह कहकर वह एक-एक चीज़ बड़े आदर के साथ कैथेरीना के सामने रखता जाता और ऐसी बातें करता जाता कि मानो ऐसी सौगात उसने दुनिया में आज तक कभी देखी ही नहीं।

नखरेवाली कैथेरीना के लिए भी आज ये चीज़ें किसी सौगात से कम न थीं। जब पेटरूशिया ने साग और भाजी का वह थाल उसकी ओर बढ़ाया तो कैथेरीना ने उसे भगवान का प्रसाद समझकर ले लिया। वह जानती थी कि रोटियां जली हुई हैं, वह देख रही थी कि सब्ज़ी कच्ची है, फिर भी उसने सौभाग्य समझकर उन्हें ले लिया। वह जानती थी कि उसने

किसी चीज़ में तनिक भी दोष निकाला तो पेटरूशियो खाने को कुत्तों के सामने फिंकवा देगा। जो कैथेरीना मां-बाप के घर में भली-चंगी चीज़ों में भी दोष निकालकर सौ-सौ नखरे करती थी, वही अब सौ-सौ दोषों से भरे भोजन को सौगात समझकर खा रही थी। अब वह पेटरूशियो की बात में ज़रा भी 'नहीं' न करती। उसे पता था कि 'नहीं' करने का अर्थ है भूखों मरना, प्यासे तरसना, बिना सोए रातें काटना। वह उसके इशारों पर नाचनेवाली पुतली बन गई।

आखिर एक दिन कैथेरीना के घर से एक न्योता आया। उसकी छोटी दो बहिनों का ब्याह था। पेटरूशियो ने झटपट स्वीकार कर लिया और कैथेरीना को तैयार होने को कहा। पेटरूशियो को अब भी शक था, कहीं मां-बाप के घर पहुंचकर फिर न बिगड़ उठे, यह सोचकर उसने कैथेरीना के लिए बढ़िया से बढ़िया गहने और कीमती से कीमती सूट सिलावान का हुक्म दे दिया। जब दरज़ी कपड़े सीकर लाया तो उन्हें देखकर कैथेरीना की आंखें खुशी से चमकने लगीं। लेकिन पेटरूशियो को एक भी कपड़ा पसन्द न आया। वह हर एक में दोष निकाल-कर कहने लगा।

'ब्लाउज़ का रंग बहुत गाढ़ा है। उससे कैथेरीना की सुन्दरता छिप जाती है।'

'स्कर्ट का किनारा फीका है। वह कैथेरीना के सुन्दर मुख के सामने ऐसा लगता है जैसे सोने में तांबा जड़ दिया हो।'

इस प्रकार हर एक कपड़े में कुछ न कुछ दोष निकालकर पेटरूशियो ने उन्हें कूड़े में फिंकवा दिया। बेचारी कैथेरीना डर रही थी कि कहीं वह हीरे-जवाहरात के जड़ाऊ गहनें भी न फिंकवा दे। यह सोचकर वह गहनों से लिपट गई।

पेटरूशियो भी तो यही चाहता था। अब उसे विश्वास हो गया कि वह उसके कहने से बाहर कभी न जाएगी। तब वह ससुराल की ओर चला। वहां कैथेरीना की छोटी बहनों की

शादियां बड़ी धूमधाम से हुईं। ये दोनों भी बड़े ठाठ से वहां अतिथि बनकर रहे।

एक दिन जब दोनों नये दूल्हे और पेटरूशियो भी इकट्ठे ही बैठे थे तो पत्नियों की बात चल पड़ी। नये दूल्हे में से एक ने बड़े घमंड से कहा—मेरी पत्नी तो बड़ी आज्ञाकारिणी है। मैं कह दूं तो वह आग में कूदने को तैयार हो जाए।

दूसरे नये दूल्हे ने कहा— भाई, तुम्हारी पत्नी तो केवल आज्ञाकारिणी होगी। मेरी बहू तो बिलकुल सती सावित्री है। मैं एक इशारा कर दूं तो अपने प्राण देने को तैयार हो जाए।

सबकी बातें सुनकर पेटरूशियो से रहा न गया। वह भी बोला – भाई, मेरी कैथेरीना इतनी आज्ञाकारिणी है कि अगर कहला भेजूं तो सिर के बल भागी आए।

कैथेरीना का अल्हड़पन दोनों दूल्हे सुन ही चुके थे। वे जानते थे कि कैथेरीना कितने तीखे स्वभाव की स्त्री है। उन्होंने पेटरूशियो को चिढ़ाने के लिए कहा—तो चलो, आज ही आज़माइश हो जाए। जिसकी पत्नी सबसे अधिक आज्ञाकारिणी निकले वह जीता समझो ! एक दूल्हे ने कहा—हज़ार-हज़ार रुपये शर्त रही।

शर्त लग गई और तीनों ने अपनी-अपनी पत्नियों को उसी समय आने के लिए बुलवा भेजा। पहले दूल्हे की पत्नी सिर-दर्द का बहाना बनाकर न आई। दूसरे दूल्हे की पत्नी ने कहला भेजा कि मैं अभी नहाकर आती हूं, बिखरे बालों से देवर-जेठों के सामने कैसे आऊं ? लेकिन जब पेटरूशियो का संदेश कैथेरीना को मिला तो वह नंगे पांव ही भागी आई।

भला अब भी वह न आती तो पेटरूशियो की सारी मेहनत किस काम आती ?

पेटरूशियो दो हज़ार रुपये की शर्त जीत गया। कैथेरीना के स्वभाव में आकाश-पाताल का यह अन्तर देखकर सुसराल के सब लोग हैरान थे।

●●●

पैरागान इंटरप्राइज, दिल्ली

शेक्सपियर के नाटक

शेक्सपियर (1564-1616) अंग्रेज़ी भाषा के सर्वश्रेष्ठ कवि और नाट्यकार माने जाते हैं। बहुत-से विद्वान इन्हें यूरोपीय साहित्य का और कुछ इन्हें विश्व-साहित्य का महानतम कवि और नाटककार मानते हैं। इनकी कृतियां लगभग चालीस हैं। संसार के इस महान साहित्यकार के निम्नांकित नाटकों के हिन्दी रूपान्तर, अंग्रेज़ी और हिन्दी के अधिकारी एवं प्रतिभाशाली विद्वान डा० रांगेय राघव ने प्रस्तुत किए हैं।

- ओथेलो (Othello)
- मैकबेथ (Macbeth)
- निष्फल प्रेम (Love's Labour Lost)
- भूल-भूलैया (Comedy of Errors)
- बारहवीं रात (Twelfth Night)
- जैसा तुम चाहो (As You Like It)
- जुलियस सीज़र (Julius Caesar)
- रोमियो जूलियट (Romeo and Juliet)
- वेनिस का सौदागर (Merchant of Venice)
- हैमलेट (Hamlet)

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली